# Daily THE PHOTON NEWS

सच के हक में...

Published from Ranchi

Ranchi ● Monday, 02 October 2023 ● Year : 01 ● Issue : 255 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com

E-Paper : epaper.thephotonnews.com


**सुविचार**

जिंदगी अगर अपने हिसाब से जीनी हैं तो कभी किसी के फैन मत बनो।

कंगना रनौत की तेजस का टीजर इस खास...

**SHARE**

| | | |
|---|---|---|
| सेंसेक्स | : | 65,828.41 |
| निफ्टी | : | 19,638.30 |

**SARAFA**

| | | |
|---|---|---|
| सोना | : | 5,4950 |
| चांदी | : | 77.05 |

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

**BRIEF NEWS**

## निर्बल की रक्षा ही हिंदू धर्म : राहुल गांधी

**NEW DELHI :** कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को सोशल मीडिया एक्स पर हिंदू धर्म को लेकर एक आर्टिकल लिखा। करीब डेढ़ पन्नों के इस लेख में राहुल ने हिंदू होने का मतलब बताया। राहुल ने सत्यम शिवम सुंदरम टाइटल वाले इस आर्टिकल में लिखा कि, निर्बल की रक्षा का कर्तव्य ही उसका धर्म है। हिंदू इतना कमजोर नहीं होता जो हिंसा का माध्यम बने। राहुल आगे लिखते हैं, कि हिंदू वही है, जिस व्यक्ति में अपने भय की तह में जाकर इस महासागर को सत्यनिष्ठा से देखने का साहस है। उन्होंने लेख में कहा, यह कहना कि हिंदू धर्म केवल कुछ सांस्कृतिक मान्यताओं तक सीमित है उसका अल्प पाठ होगा। किसी राष्ट्र या भूभाग विशेष से बांधना भी उसकी अवमानना है।

## पुरानी पेंशन की मांग पर जुटे सरकारी कर्मचारी

**NEW DELHI :** दिल्ली के रामलीला मैदान में रविवार को लाखों सरकारी कर्मचारी इकठ्ठा हुए। इनकी मांग है पुरानी पेंशन को लागू किया जाए। नेशनल मूवमेंट फॉर ओल्ड पेंशन स्कीम से जुड़े संगठन इस रैली में शामिल हुए हैं। दिल्ली पुलिस ने मैदान में टेंट लगाने की अनुमति नहीं दी। इसके बावजूद कर्मचारियों की भारी संख्या रैली में हिस्सा लेने पहुंची। कांग्रेस ने रैली का एक वीडियो शेयर करते हुए सोशल मीडिया पर पोस्ट किया और लिखा, पुरानी पेंशन कर्मचारियों का अधिकार है। कांग्रेस की राज्य सरकारों ने पुरानी पेंशन बहाल की है। इसे लेकर हमारी नीति साफ है- कर्मचारियों को उनका हक मिलना ही चाहिए। मोदी सरकार पुरानी पेंशन बहाल करे, देश की सेवा करने वाले कर्मवीरों का सम्मान करे।

## ब्रिटिश म्यूजियम बाघ नख भारत भेजने को तैयार

**MUMBAI :** ब्रिटेन का विक्टोरिया और अल्बर्ट म्यूजियम अगले हफ्ते महाराष्ट्र सरकार के साथ एक एमओयू साइन करने वाला है। जिसके बाद 17वीं सदी का शिवाजी महाराज का बाघ नख हथियार प्रदर्शनी के लिए भारत लाया जाएगा। महाराष्ट्र के संस्कृति मंत्री सुधीर मुनगंटीवार बाघ नख लेने के लिए 3 अक्टूबर को ब्रिटेन जाएंगे। रिपोर्ट्स में यह कहा गया है कि यह 3 साल के लिए भारत आ रहा है। पहले वे इसे अफजल खान की हत्या की तारीख 10 नवंबर को भारत लाने पर विचार कर रहे थे।

# 8वें दिन भारत की झोली में आए तीन स्वर्ण समेत 15 पदक

## इंडिया ने रविवार को एथलेटिक्स के हर इवेंट में जीता मेडल

**भारत के पास पदक**

- स्वर्ण: 13
- रजत: 21
- कांस्य: 19
- कुल: 53

**AGENCY HANGZHOU :** 19वें एशियन गेम्स के 8वें दिन भारतीय खिलाड़ियों का दमदार प्रदर्शन रहा। रविवार को भारतीय खिलाड़ियों ने 3 गोल्ड, 7 सिल्वर और 5 ब्रॉन्ज सहित कुल 15 मेडल जीते। इन मेडल के सहारे ओवरऑल मेडल टैली में भारत के 53 मेडल हो चुके हैं। रविवार से एथलेटिक्स के मेडल इवेंट शुरू हुए। इसी के साथ भारत ने रविवार को एथलेटिक्स के हर एक इवेंट में पोडियम फिनिश कर मेडल जीता। एथलेटिक्स में आज भारत ने 2 गोल्ड समेत कुल 9 मेडल जीते। चीन के हांगझोऊ में भारत ने शूटिंग के मेंस ट्रैप, 3000 मीटर स्टेपल चेज और शॉटपुट इवेंट में गोल्ड जीते। शूटर्स के बाद युवा एथलीट अविनाश साबले ने 3 हजार मीटर स्टेपलचेज इवेंट में गेम्स रिकॉर्ड के साथ गोल्ड जीता। उन्होंने ईरान के हुसैनी (8 मिनट 22.79 सेकेंड) का रिकॉर्ड तोड़ा। इसके बाद तजिंदर पाल सिंह तूर ने शॉट पुट में इन गेम्स का गोल्ड हासिल किया। वे आखिरी प्रयास में नंबर-1 पोजिशन पर आए। विमेंस डिस्कस थ्रो इवेंट में सीमा पुनिया ने ब्रॉन्ज, मेंस लॉन्ग जंप में मुरली श्रीशंकर ने सिल्वर, विमेंस 1500 मीटर इवेंट में हरमिलन बैंस ने सिल्वर, मेंस 1500 मीटर में अजय कुमार ने सिल्वर और जिन्सन जॉनसन ने ब्रॉन्ज हासिल किया। विमेंस 100 मीटर हर्डल्स में ज्योति ने सिल्वर जीता। भारतीय टीम के मेंस फाइनल टीम इवेंट में चीन मे भारत को 5 मैच में 2-3 से हरा कर गोल्ड जीता। इसी के साथ भारत को सिल्वर से संतुष्ट रहना पड़ा। बॉक्सिंग में निखत जरीन ने विमेंस 50 किलोग्राम में ब्रॉन्ज जीता।

### GOLD, SILVER & BRONZE IN SHOOTING

शूटिंग में आठवें दिन शूटिंग में तीन मेडल मिले। ट्रैप-50 मेंस टीम इवेंट में पृथ्वीराज टोंडाइमैन, जुरावर सिंह और किनान चेनाई की तिकड़ी ने 361 स्कोर के साथ गोल्ड जीता। इस इवेंट में कुवैत ने 359 स्कोर कर सिल्वर और चीन ने 354 स्कोर के साथ ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। विमेंस के ट्रैप इवेंट में मनीषा कीर, प्रीति रजक और राजेश्वरी ने तिकड़ी ने 337 स्कोर कर भारत को सिल्वर दिलाया। इस इवेंट में चीन की टीम ने 357 के साथ गोल्ड और कजाकिस्तान की टीम ने 336 के साथ ब्रॉन्ज मेडल जीता। शूटिंग में दिन का तीसरा मेडल किनान ने दिलाया। शूटिंग इंडिविजुअल मेंस ट्रैप इवेंट में भारत के किनान चेनाई ने ब्रॉन्ज मेडल जीता। किनान ने 40 में से 32 का स्कोर रखा। इस इवेंट में भारत के जुरावर सिंह पांचवे स्थान पर रहे। विमेंस ट्रैप के इंडीविजुअल में मनीषा कीर छठे स्थान पर रहीं।

# तीन को मेंशन हो सकती CM हेमंत की याचिका

## चार को सोरेन से होनी है पूछताछ

**CRIME REPORTER RANCHI :** ईडी ने सीएम हेमंत सोरेन को पांचवा समन जारी कर 4 अक्टूबर को पूछताछ के लिए बुलाया है। हालांकि सीएम इससे पूर्व ही ईडी के समन के खिलाफ 23 सितंबर को हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर चुके हैं लेकिन अब तक सुनवाई के लिए इसे कोर्ट के समक्ष मेंशन नहीं किया गया है। ऐसे में संभावना जताई जा रही है कि 3 अक्टूबर को सीएम की याचिका को सुनवाई के लिए कोर्ट के समक्ष मेंशन किया जा सकता है, जिससे सुनवाई की तिथि निर्धारित हो सके। सीएम हाईकोर्ट में इस केस के लंबित रहने की बात कहकर एक बार फिर से ईडी से समय की मांग सीएम हेमंत सोरेन कर सकते हैं। इसलिए 4 अक्टूबर के पूर्व सीएम की याचिका की सुनवाई के लिए कोर्ट में इसे 3 अक्टूबर मेंशन किया जा सकता है ताकि कोर्ट इस याचिका पर सुनवाई की तिथि तय करें।

### सीएम ने ईडी की कार्रवाई को रोकने का किया है आग्रह

सीएम हेमंत सोरेन ने हाई कोर्ट में याचिका दाखिल कर कहा है कि ईडी एवं इसके अधिकारी या कर्मी को समन के आधार पर उन पर कार्रवाई से रोका जाय। याचिका में सीएम ने ईडी द्वारा जारी समन को गलत, अवैध एवं कानून के विरुद्ध बताया है साथ ही ईडी को आगे भी समन जारी करने से रोक लगाने का अभी आग्रह किया है। सीएम ने ईडी पर चुनी हुई सरकार को अस्थिर करने की साजिश करने सहित पीएमएलए 2002 की धारा 50 और 63 की वैधता को चुनौती दी है।

# भारी बारिश से पानी-पानी हुई रांची

## सड़क पर बहता रहा पानी, कई इलाकों में जलजमाव से जूझते रहे लोग

**PHOTON NEWS RANCHI :** रविवार की सुबह से दोपहर तक शहरी क्षेत्र में मूसलाधार वर्षा होती रही। मौसम केंद्र रांची ने शाम 5:30 बजे तक 40.2 मिमी. बारिश दर्ज किया। इस दौरान रांची नगर निगम के अधिकारी व कर्मचारी एक तारीख, एक घंटा, एक साथ अभियान में व्यस्त रहे। जलजमाव वाले इलाकों में जिला प्रशासन या रांची नगर निगम की ओर से किसी प्रकार के राहत कार्य नहीं किए गए। शहर के लगभग सभी क्षेत्रों में लोग जलजमाव की समस्या से जूझते रहे। कहीं वर्षा का पानी नाली से बाहर सड़क पर बहता रहा, तो कहीं नाली की सुविधा नहीं होने के कारण पूरा क्षेत्र जलमग्न हो गया। शहर के कई इलाकों में वर्षा का पानी दुकानों व घरों में भी घुसा, जिससे लोग दिनभर परेशान रहे। रविवार को सरकारी व निजी कार्यालयों में छुट्टी होने के कारण अधिकांश लोग अपने-अपने घरों में ही दुबके रहे। आवश्यक कार्यों से ही लोग घरों से बाहर निकले। शहर के विभिन्न क्षेत्रों में मुख्य मार्ग व बाइलेन सड़कों पर जगह-जगह जलजमाव की स्थिति उत्पन्न हुई। शहर के कई अपार्टमेंटों के बेसमेंट में भी वर्षा के कारण जलजमाव की स्थिति उत्पन्न हुई।

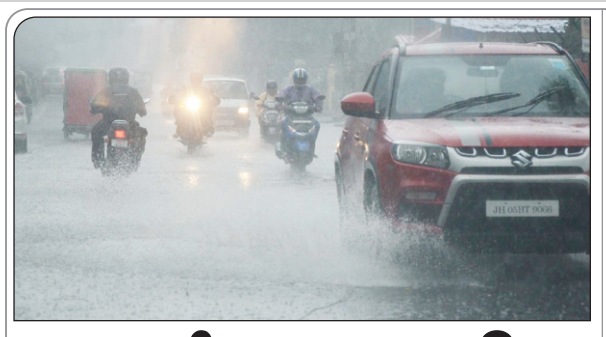

### हरमू नदी उफान पर, रिम्स में मरीजों को हो रही परेशानी

शहर में लुप्त हो रही हरमू नदी भारी बारिश के बाद उफान पर है। लंबे समय बाद लोगों ने इस नदी में पानी के वेग को देखा है। भारी बारिश के बीच रिम्स में भर्ती मरीजों को सबसे ज्यादा परेशानी हो रही है। अस्पताल के न्यूरो सर्जरी विभाग के कॉरिडोर में भर्ती मरीजों के परिजन छाता लगाकर अपने मरीजों व खुद को बारिश से बचाने की कोशिश करते नजर आये। फर्श में पानी भर गया है, जिसकी वजह से मरीज अपने बिस्तरों को इधर से उधर कर भींगने से बचाने की कोशिश में जुटे हैं। परिजन अपने मरीज को चटाई, प्लास्टिक व चादर से ढककर बारिश से बचाने की जद्दोजहद में लगे हुए हैं। वहीं रिम्स के फिजियोथेरेपी विभाग में बारिश के बाद पानी भर गया है।

### वर्षा के कारण भरभराकर गिरी रतन हाइट्स की एक और बाउंड्री

**हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी नहीं भरा गया गड्ढा**

**RANCHI :** शहर के मोरहाबादी स्थित रतन हाइट्स की एक और बाउंड्री रविवार को गिर गई। इस बारह मंजिला आवासीय इमारत को नए निर्माण स्थल से अलग करने वाली दीवार भारी बारिश के बीच भरभराकर गिर गई। साथ ही निर्माण के लिए खोदे गए विशाल गड्ढे में पानी का लेवल भी काफी ऊपर आ गया है। बाउंड्री वाल गिरने के कारण गड्ढे का पानी रतन हाइट्स की नींव के भीतर प्रवेश करने की आशंका है। इससे इमारत को खतरा बढ़ गया है। इसके कारण बिल्डिंग में रहने वाले लोग काफी दहशत में हैं। रतन हाइट्स मामले में गत दिनों झारखंड हाई कोर्ट ने बिल्डर के खिलाफ फैसला देकर अवैध निर्माण तत्काल रोकने का आदेश दिया था। गड्ढे को भरने और बिल्डिंग की सुरक्षा के लिए जरूरी इंतजाम करने का भी आदेश दिया गया था लेकिन बिल्डर ने अब तक इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया है। पिछली बार एक बाउंड्री वाल के साथ एक कार भी गड्ढे में समा गई थी।

# सुदेश महतो फिर बने आजसू के केंद्रीय अध्यक्ष

## बोले- नवनिर्माण के संकल्पों को पूरे कर स्वशासन से सुशासन लाएंगे

**PHOTON NEWS RANCHI :** आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश महतो को रांची के मोरहाबादी में आयोजित तीन दिवसीय महाधिवेशन के आखिरी दिन रविवार को केंद्रीय समिति के चुनाव में सर्वसम्मति से एक बार फिर पार्टी का केंद्रीय अध्यक्ष चुना गया। चुनाव पर्यवेक्षक की भूमिका डोमन सिंह मुंडा ने निभायी। उमाकांत रजक ने सभा के समक्ष सुदेश महतो का नाम रखा। इसका सभी ने ध्वनिमत से समर्थन किया। कार्यकताओं और समर्थकों ने गर्मजोशी से अध्यक्ष के रूप में इनका स्वागत किया। सुदेश महतो ने कहा कि सुशासन का मतलब झारखंडी विचारों, विषयों, आम सहमति, जवाबदेही, उत्तरदायित्व का अनुसरण और आम आदमी को सत्ता का भागीदार बनाना होता है। सामाजिक न्याय और विकास आधारित होता है। उन्होंने कहा कि गिव एंड टेक की पॉलिटिक्स करने वालों को हमारे महाधिवेशन और विचार मंथन की समझ नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि आजसू पार्टी किसी भी राजनीतिक परिदृश्य एवं समीकरण में झारखंडी अस्मिता एवं पहचान तथा पिछड़ों, अल्पसंख्यकों एवं दलितों के हितों के साथ कभी भी समझौता नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि नवनिर्माण के संकल्पों को पूरा कर स्वशासन से सुशासन लायेंगे।

सुदेश महतो को माला पहनाकर सम्मानित करते पार्टी कार्यकर्ता।

# गणेश मूर्ति ने बचाई बच्चे की जान

## गुजरात के समुद्र में डूबा, 36 घंटे तक मूर्ति पकड़कर तैरता रहा

**AGENCY SURAT :** गुजरात के सूरत शहर में समुद्र में डूब रहा एक लड़का आश्चर्यजनक ढंग से बच गया। 36 घंटे तक लड़का भगवान गणेश की मूर्ति के एक फ्रेम को पकड़कर तैरता रहा। आखिरकार मछुआरों की नजर उस पर पड़ी और उसकी जान बच गई। 14 साल के इस लड़के का नाम लाखन है। वह अपनी दादी सविताबेन, भाई करण (11) और बहन अंजलि (10) के साथ शुक्रवार सुबह करीब 11 बजे सूरत के डुमस बीच की सैर करने गया था। उसी दौरान ये हादसा हुआ। दरअसल, बच्चे अपनी दादी के साथ अंबाजी मंदिर गए थे। बाद में उनकी जिद पर दादी उनको डुमस बीच पर सैर कराने ले गई। बीच पर पहुंचते ही लाखन और करण समुद्र किनारे खेलते-खेलते नहाने लगे। दादी ने डांट लगाई तो सविता तट से दूर आ गई, लेकिन दोनों भाई नहाने की जिद पर अड़े रहे। इसी दौरान समुद्र में अचानक तेज लहर उठीं और दोनों भाई लहरों की चपेट में आ गए। वहां मौजूद कुछ लोगों ने किसी तरह करण को लहरों से बचाकर बाहर निकाल लिया, लेकिन लाखन लहरों में गुम हो गया। इसके बाद से ही रेस्क्यू, फायर, गोताखोर और मछुआरों की टीमें बच्चे को तलाश रही थीं।

लाखन की फाइल फोटो।

**रामलला रथ में करेंगे अयोध्या भ्रमण, प्राण-प्रतिष्ठा से पहले जल, फल-अन्न में एक-एक दिन करेंगे वास**

# अयोध्या राम मंदिर में 22 जनवरी को विराजेंगे रामलला

**AGENCY AYODHYA :** अयोध्या में बन रहे राम मंदिर में 22 जनवरी को रामलला विराजेंगे। प्राण-प्रतिष्ठा समारोह 16 जनवरी से 24 जनवरी तक चलेगा। प्राण-प्रतिष्ठा से पहले सरयू पूजन कर उसके जल से रामलला का अभिषेक होगा। फिर उन्हें रथ से नगर भ्रमण कराया जाएगा। इसके बाद रामलला की मूर्ति को जल, फल और अन्न एक-एक दिन रखा जाएगा। 9 दिवसीय समारोह के लिए श्रीराम यंत्र की स्थापना की जाएगी। कार्यक्रम के समापन के बाद इसे सरयू नदी में विसर्जित कर दिया जाएगा। समारोह में हवन के लिए 9 कुंड बनाए जाएंगे। पूरा कार्यक्रम काशी के विद्वानों की देखरेख में होगा। हालांकि, इस पूरे कार्यक्रम के लिए यजमान (पूजा कराने वाला) कौन होगा? यह अभी तक तय नहीं किया गया है। इधर, राम मंदिर ट्रस्ट ने बताया कि राम मंदिर का भूतल बनकर तैयार हो गया है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह देशभर के 4 लाख गांवों के मंदिरों में भी मनाया जाएगा। इन मंदिरों में रामनाम संकीर्तन और किसी एक मंत्र का जप के साथ मुख्य पर्व पर आरती और प्रसाद वितरण होगा। इसके साथ ही समारोह का लाइव टेलीकास्ट होगा। इससे करोड़ों भक्त इस ऐतिहासिक पल को सीधे देख सकें। रामलला के पुजारी वही होंगे, जिनका जन्म अयोध्या में हुआ है। पुजारी को जरूरत पड़ने पर प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। अभी तक पहले से चली आ रही परंपरा के अनुसार रामलला की पूजा होती थी। अब भव्य राम मंदिर के निर्माण और राम मंदिर ट्रस्ट के गठन के बाद यह सब नए सिरे से तय किया जा रहा है। अभी तक रामलला के पूजन के लिए एक मुख्य पुजारी और 4 सहायक पुजारी होते हैं।

### देशभर के 7 हजार रामभक्त आएंगे

ट्रस्ट के सदस्य कामेश्वर चौपाल ने बताया, समारोह में विश्व के अनेक देशों के 50 विशेष राम भक्तों को आमंत्रित किया जा रहा है। इसके अलावा संतों और देशभर के राम भक्तों सहित 7 हजार लोगों को भी आमंत्रित किया जाएगा। सूत्रों के अनुसार, समारोह के मुख्य पर्व 22 जनवरी को पीएम मोदी को शामिल होने के लिए आमंत्रण पत्र भेजा जा चुका है। माना जा रहा है कि वे इस दिन अयोध्या में समारोह में शामिल होंगे।

### तीन मूर्ति का हो रहा निर्माण

राम मंदिर ट्रस्ट के मुताबिक, रामलला की 5 साल के बालक की 3 मूर्ति को राजस्थान के श्वेत संगमरमर और कर्नाटक के ग्रेनाइट के पत्थरों से बनाया जा रहा है। इसे अक्टूबर में पूरा कर लिया जाएगा। इसके बाद इनमें से किसी एक मूर्ति का चयन संत और राम मंदिर ट्रस्ट मिलकर तय करेगा। इसमें जो रामलला की मूर्ति तय होगी, उसकी ही प्राण-प्रतिष्ठा होगी।

**तेलंगाना को 13500 करोड़ रुपये की सौगात**

# यहां ईमानदार सरकार की जरूरत : प्रधानमंत्री

**AGENCY HYDERABAD :** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तेलंगाना के महबूबनगर के दौरे पर हैं। उन्होंने रविवार को यहां 13,500 करोड़ रुपए की परियोजनाओं का लोकार्पण और उद्घाटन किया। मोदी ने कहा कि तेलंगाना के लोगों ने बदलाव करने का मन बना लिया है। अब यहां पारदर्शी और ईमानदार सरकार की जरूरत है। राज्य के लोगों ने भाजपा को मजबूत किया है। अब तेलंगाना में बीजेपी की सरकार होनी चाहिए। इस दौरान पीएम ने मुरुगल जिले में सेंट्रल ट्राइबल यूनिवर्सिटी बनाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि नाम ट्राइबल देवियों के नाम पर समक्का सारक्का सेंट्रल ट्राइबल यूनिवर्सिटी रखा जाएगा। साथ ही उन्होंने हल्दी किसानों के हित के लिए नेशनल टर्मरिक बोर्ड का गठन भी किया है। फरवरी 2022 से ये लगातार छठी बार है, जब मुख्यमंत्री केसीआर राज्य में पीएम के कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए। उनकी जगह राज्य के मंत्री तलसिनी श्रीनिवास यादव ने पीएम को एयरपोर्ट से रिसीव किया।

## BRIEF NEWS

### चतरा में चार गिरफ्तार हथियार बरामद

**CHATRA :** जिले की सदर थाना पुलिस ने अपराधियों को गिरफ्तार किया है। इनमें जीतु विश्वकर्मा, मनोज कुमार, ब्रजेश कुमार और विजय कुमार शामिल हैं। इनके पास से एक देशी कट्टा, एक जिंदा गोली, एक काला रंग का प्लसर, एक काला रंग का सुपर स्पेलेन्डर, विभिन्न कंपनियों का तीन मोबाईल, चार हजार 60 रुपये, दो काला गमछा और दो लाल रंग का कपड़ा बरामद हुआ है। चतरा एसडीपीओ अविनाश कुमार ने रविवार को बताया कि गुप्त सूचना के बाद बरैनी चौक में बाइक चेकिंग के दौरान दो बाइक पर सवार आरोपितों को गिरफ्तार किया गया। आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।

### करंट से मजदूर की मौत

**CHATRA :** जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के मुड़ाबहाल में रविवार को दुकान में काम करने के दौरान करंट लगने से 60 साल के लडरू राय की मौत हो गई। परिजनों के अनुरोध पर पुलिस ने बगैर पोस्टमार्टम के शव को सौंप दिया।

### जीवन में गुरु, सत्संग और ध्यान जरूरी : स्वामी निर्मलानंद

**CHATRA :** महर्षि मेंही आश्रम शांतिपुरी मुरहू में 15 दिवसीय ध्यानाभ्यास कार्यक्रम का समापन रविवार को हो गया। भागलपुर कुप्पाघाट के स्वामी निर्मलानंद ने कहा कि मनुष्य जन्म जन्मांतर से विषयों की तरफ भागता रहा है। जीवन में गुरु, सत्संग और ध्यान जरूरी है। गुरु प्रदत्त मंत्र ज्ञान से मन की तरगें धीरे-धीरे मंद होती हैं। मनुष्य को नशा, हिंसा के अलावा अन्य सभी बुराइयों का त्याग कर भक्ति करनी चाहिए। अद्वैत आश्रम, तुपुदाना के स्वामी पूणार्नंद ने कहा कि मन मतवाला हाथी के समान है। ध्यान से ही इस पर काबू पाया जा सकता है। मन उस भूत की तरह है, जो कभी स्थिर नहीं रह सकता। इसलिए भगवद भजन करते रहने से स्थिरता आयेगी। स्वामी चिन्मयानंद, स्वामी लक्ष्मण, स्वामी श्याम बाबा, स्वामी बालकृष्ण, स्वामी राजेंद्र बाबा ने भी गुरु की महिमा का बखान किया। कार्यक्रम में जिला सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार, विधायक प्रतिनिधि काशीनाथ महतो, चैंबर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष प्रियांक भगत, अरुण भगत, अनूप साहू, ज्योतिष भगत, बालमुकुंद कश्यप, महेश चौधरी आदि उपस्थित थे।

### भाजपा कार्यकर्ताओं ने सेनिटेशन पार्क में चलाया सफाई अभियान

**CHATRA :** स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत रविवार को सुबह एक साथ, एक घंटे स्वच्छता के लिए श्रमदान कार्यक्रम के तहत भाजपा नेता जगन्नाथ मुंडा की अगुवाई में सैनिटेशन पार्क खूंटी में भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्वच्छता के लिए श्रमदान किया। इस अभियान में सांसद के जिला प्रतिनिधि मनोज कुमार, विभागीय सांसद प्रतिनिधि ज्योतिष भगत, बालमुकुंद कश्यप, सचिन कर, सत्येंद्र कुमार, अजय महतो, संतोष महतो, महावीर महतो, श्रवण मांझी, राजकुमार महतो, देवानंद महतो आदि भाजपा कार्यकर्ता शामिल थे। मौके पर जगन्नाथ मुंडा ने कहा कि रोटी, कमपड़ा कमानन की तररह ही स्वच्छता भी सबके लिए जरूरी है। उन्होंने कहा कि अपने आसपास के वातावरण को साफ रखकर हम डेंगू, मलेरिया जैसी जानलेवा बीमारियों से बच सकते हैं।

### गांव को स्वच्छ रखना समाज के हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य: काशीनाथ

**CHATRA :** प्रधानमंत्री के आह्वान पर भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष काशीनाथ महतो के नेतृत्व में राजा कुंजला गांव स्थित देवी गुड़ी मंदिर और आसपास के क्षेत्रों में श्रमदान कर गांव वालों ने स्वच्छता अभियान चलाया। अभियान में बड़ी संख्या में महिला, पुरुष और युवाओं ने श्रमदान किया। मौके पर काशीनाथ महतो ने स्वच्छता की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि बीमारियों से बचने के लिए अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखना अति आवश्यक है। उन्होंने कहा गांव को स्वच्छ रखना समाज के हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है।

## बाबूलाल मरांडी ने गिरिडीह की संकल्प सभा में हेमंत सोरेन पर जमकर निशाना साधा, बोले-

# हेमंत के कारनामों से भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा उजागर

**PHOTON NEWS GIRIDIH :** भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने रविवार को गिरिडीह की संकल्प सभा में हेमंत सोरेन पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि यह उत्साह बता रहा कि 2024 के लोकसभा और विधानसभा चुनावों में जनता का मिजाज क्या है। उन्होंने कहा कि ईडी जांच के संदर्भ में जिस प्रकार हेमंत सरकार के कारनामे उजागर हुए हैं, उससे भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा उजागर हुई है।

गिरिडीह में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी का स्वागत करते भाजपा कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

उन्होंने कहा कि जनता को आज पता चला कि कैसे फाइल का मतलब एक लाख, फोल्डर का मतलब एक करोड़ और बॉस का मतलब निश्चित तौर पर और कोई नहीं मुख्यमंत्री ही होगा। क्योंकि, राज्य सरकार का बॉस तो मुख्यमंत्री ही होता है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अब तो मीडिया भी वही बात बोल रही जो भाजपा आपके लिए बोल रही। जनता बोल रही। उन्होंने कहा कि क्या राज्य की जनता ने हेमंत सोरेन को मुख्यमंत्री इसीलिए बनाया था? आदिवासी का मतलब क्या राज्य को लूटना और लुटवाना होता है? हिम्मत है तो बताइए लगभग चार वर्षों में आपने आदिवासियों के विकास के लिए कौन से काम किए।

उन्होंने कहा कि हेमंत सोरेन और उनके परिवार ने राज्य में दलालों, बिचौलियों, लुटेरों को कोयला, लोहा, पत्थर, बालू सब लूटने की छूट दे दी। खुद आदिवासियों की जमीन को नामी, बेनामी तरीके से लूटा। महाजन के खिलाफ लड़ते-लड़ते खुद राज्य के सबसे बड़े महाजन बन बैठे। आज संथाल परगना, रांची, बोकारो सभी जगह हेमंत सोरेन और शिबू सोरेन परिवार की जितनी जमीन है उतनी किसी परिवार के पास नहीं है।

मरांडी ने कहा कि राज्य की कानून व्यवस्था ध्वस्त है। पुलिस अपराधियों को पकड़ने में नहीं, बल्कि वसूली में लगी हुई है। रोज हत्या, लूट, अपहरण, डकैती की घटनाएं हो रहीं। बहन-बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं है। उन्होंने कहा कि विगत छह महीने में राज्य में 23 व्यापारियों की हत्या हुई है, जिसमें नौ ने पुलिस से लिखित आवेदन देकर सुरक्षा मांगी थी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री इसकी एसआईटी गठित कर जांच कराए या सीबीआई जांच की अनुशंसा करे। यदि ये सरकार नहीं करती तो भाजपा सरकार जांच कराकर दोषियों को कड़ी सजा दिलाएगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भ्रष्टाचार और अपराध के संरक्षक हैं। आज ईडी जब कार्रवाई कर रही तो भागे फिर रहे।

## सप्ताह में दो घंटे श्रमदान कर स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने का लें संकल्पः डीसी

**PHOTON NEWS KHUNTI :** स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत उपायुक्त लोकेश मिश्र, उप विकास आयुक्त, नीतीश कुमार सिंह और अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत सचान ने सदर अस्पताल खूंटी परिसर में रविवार को आयुष्मान भवः एवं स्वच्छता के लिए श्रमदान को सफल बनाने के लिए स्वास्थ्य सहिया की टीम को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। साथ ही सामूहिक रूप से सभी को स्वच्छता संबंधित शपथ दिलाई गयी। इस दौरान स्वच्छ भारत अभियान के तहत उत्कृष्ट कार्य करने वाले सफाई कर्मियों एवं अस्पताल के विभिन्न वार्डों के कर्मचारियों को उपायुक्त द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सफाई कर्मियों को प्रशस्ति-पत्र देते उपायुक्त। ● फोटोन न्यूज

मौके पर उपायुक्त ने कहा कि हमें प्रत्येक वर्ष 100 घंटे यानि हर सप्ताह दो घंटे श्रमदान कर स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने का संकल्प लेना होगा। उन्होंने लोगों से अपील की कि स्वच्छता की शुरूआत अपने घर-परिवार से करें। तत्पश्चात अपने मोहल्ला, गांव और कार्यस्थल पर स्वच्छता अभियान आरंभ करें। उन्होंने कहा हमें स्वच्छता अपनाने के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास करना चाहिए। बताया गया कि स्वास्थ्य चिकित्सा, शिक्षा एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 17 सितंबर से दो अक्टूबर तक आयुष्मान भवः सेवा पखवाड़ा आयोजित किया जा रहा है, जो अत्योदय की अवधारणा से प्रत्येक व्यक्ति तक स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने का प्रयास है।

## राज्य के वित्त मंत्री ने लोहरदगा में कृषि उपकरणों का किया वितरण

**PHOTON NEWS LOHARDAGA :** राज्य के वित्त मंत्री डॉ. रामेश्वर उरांव ने नगर भवन में महिला मंडल बिरसा, महिला मंडल कुडू और लोक महिला मंडल किस्को के बीच कृषि उपकरणों का वितरण किया, जिसमें आटा चक्की मिल मशीन, मिनी ट्रैक्टर, रोटावेटर, पाइप व अन्य सामग्री शामिल हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वर्ष 2019 में ही वर्तमान राज्य सरकार ने निर्णय लिया था कि गांवों को विकसित किया जाएगा। किसानों के लिए कृषि, मत्स्य, भूमि संरक्षण आदि कई कार्य किये। आदिम जनजाति के लिए डाकिया योजना के तहत राशन की व्यवस्था करायी।

कृषि उपकरण का वितरण करते रामेश्वर उरांव। ● फोटोन न्यूज

मंत्री ने कहा कि किसानों को मशीनीकरण की ओर जाना चाहिए। कृषि कार्य के लिए कई उन्नत किस्म की मशीनें आ गयी हैं जो आपका समय और खर्च दोनों बचाती है। साथ ही उत्पादन में भी काफी फर्क पड़ता है। सरकार कई बदलाव कर रही है। हम कई कोस आगे बढ़ चुके हैं।

इस मौके पर प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बड़ी संख्या

## बालू की कमी दूर करने के लिए प्रशासन करेगा रेत का वैध भंडारण

**PHOTON NEWS KHUNTI :** उपायुक्त लोकेश मिश्र के निर्देश पर जिले में बालू के अवैध खनन, भंडारण और परिवहन के विरूद्ध व्यापक अभियान चलाकर लगातार छापेमारी की जा रही है। इससे वर्तमान में बालू के अवैध खनन, भंडारण और परिवहन में कमी आयी है।

बाजार में बालू कमी न हो इसके लिए जिले में अधिक से अधिक बालू के वैध भंडारणकर्ता हों, इस पर भी जोर दिया जा रहा है। वैसे इच्छुक व्यक्ति जो बालू के भंडारण के लिए अनुज्ञप्ति प्राप्त करना चाहते हैं, उनको रैयती भुमि पर अनुज्ञप्ति प्राप्त करने का प्रावधान दी झारखंड मिनरल्स प्रेंवेशन ऑफ इलीगल माइनिंग टांज्स्पोर्ट एंड स्टोरेज रूल्स 2017 में 2017 के नियम 3 में दिया गया है। जिला खनन पदाधिकारी ने बताया कि बालू का वैध भंडारणकर्ता बनने के पश्चात भंडारणकर्ता द्वारा वैध खनन पट्टा अथवा आसपास के जिलों के वैध अनुज्ञप्तिधारी से बालू लाकर अपने भडारण स्थल में बालू जमाकर बेच सकते हैं।

वैध भंडारणकर्ता बनने के इच्छुक व्यक्ति जिला खनन कार्यालय में इन कागजातों के साथ आवेदन कर सकते है। जेआइएमएमएस पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन 25000 रुपए के आवेदन शुल्क के साथ जमा कर सकते है। इसके साथ ही विहित प्रपत्र में शपथ पत्र, जीएसटी रजिस्ट्रेशन स्लीप, अद्यतन आयकर रिटर्न, आवेदित भूमि का खतियान, रैयत के साथ एकरारनामा, आवेदित भूमि का ट्रेसिंग नक्शा चार प्रति मे, पैन कार्ड और आधार कार्ड की छायाप्रति, संबंधित अंचलाधिकारी का अनापत्ति प्रमाण पत्र और वन प्रमण्डल पदाधिकारी का अनापत्ति प्रमाण पत्र जमा करना भी अनिवार्य है।

## चंद्रवंशी क्षत्रिय महासभा की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक आयोजित, हुआ सम्मान समारोह

**PHOTON NEWS LOHARDAGA :** अखिल भारत वर्षीय चंद्रवंशी क्षत्रिय महासभा की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक एवं सम्मान समारोह का आयोजन बलदेव साहू शिव प्रसाद साहू धर्मशाला में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन राज्य सभा सदस्य धीरज प्रसाद साहू ने किया।

साहू ने चंद्रवंशी समाज के लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि चंद्रवंशी समाज हमेशा बुराइयों से लड़ा है और सत्य का साथ दिया है। सामाजिक सौहार्द बनाने में चंद्रवंशी समाज की भूमिका सकारात्मक रही है। उन्होंने चंद्रवंशी समाज के उत्थान के लिए सहयोग के रूप में अपने निधि से विवाह भवन बनवाने की घोषणा की। लोहरदगा सांसद सुदर्शन भगत ने कहा कि चंद्रवंशी समाज देश के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट जरासंघ महाराज के वंशज हैं जो हमेशा निडरता एवं साहसिक कार्यों के लिए प्रसिद्धि रहा है। विपरीत काल होने के कारण आज इनकी हकमारी की जा रही है। उन्होंने संसदीय कोष से धर्मशाला निर्माण की घोषणा की।

सम्मान समारोह में उपस्थित समिति के लोग।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक कुमार आजाद ने कहा कि चंद्रवंशी समाज की घोर उपेक्षा होती रही है लेकिन अब चंद्रवंशी समाज जागरूक हो गया है। चंद्रवंशियों के साथ अन्याय बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। झारखंड प्रदेश अध्यक्ष नितेश चंद्रवंशी ने कहा कि राज्य के चंद्रवंशी समाज को हाशिए पर डालने का प्रयास निंदनीय है। सीएनटी जैसे संवेदनशील मुद्दे पर झारखंड सरकार को विचार करना चाहिए और आदिवासी समाज को सीएनटी का जो लाभ दिया गया है वह चंद्रवंशी समाज को भी मिलना चाहिए।

### मोहन कुमार की अध्यक्षता में श्री श्री दुर्गा पूजा समिति मालश्रृंग, कांके की बैठक संपन्न

## मुख्य संरक्षक बने हकीम अंसारी, आकाश अध्यक्ष

**PHOTON NEWS KANKE :** श्री श्री दुर्गा पूजा समिति मालश्रृंग, कांके की बैठक रविवार को पूर्व कैप्टन मोहन कुमार साहू की अध्यक्षता में मालश्रृंग गांव में की गई। इस दौरान पूर्व जिला परिषद सदस्य हकीम अंसारी भी बैठक में शामिल हुए। मौके पर आने वाली मां दुर्गा पूजा के लिए नई समिति का गठन भी किया गया। इस दौरान सर्वसम्मति से आकाश कुमार को श्री श्री दुर्गा पूजा समिति मालश्रृंग कांके का अध्यक्ष चुना गया वहीं पूर्व जीप सदस्य हकीम अंसारी, मन कुमार राम, जनक कुमार गुप्ता, चन्द्रदेव कश्यप, किशोर राम, चौधरी साहू, लखन उरांव, रामकुमार साहू को मुख्य संरक्षक, उपाध्यक्ष राम कुमार, कार्यकारी अध्यक्ष काली चरण महतो, कार्यकारी उपाध्यक्ष संजय कुमार कासी, महासचिव नीतीश कुमार, दीपू कुमार, सचिव अजित कुमार कश्यप, अविनाश कुमार, अमित नाग, उप सचिव आशीष कुमार, बीरेंद्र कुमार, कोषाध्यक्ष अनुज कुमार, देवीचरण महतो, उपकोषाध्यक्ष भीम कुमार, सतीश कुमार कश्यप, संगठन मंत्री उमा शंकर, बिपिन कुमार, संरक्षक भीम सिंह, बुधनाथ महतो,बिंदु महतो, सुखनाथ महतो, मोहन साहू, सुरेश साहू, बन्नू कश्यप, जितबहान महतो, पारस महतो, कपिल महतो, भानु साहू, बनू महतो, परणु महतो, रामबचन साहू, कश्मीर साहू।

बैठक में उपस्थित समिति के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

मौके पर मौजूद समिति के मुख्य संरक्षक सह पूर्व जीप सदस्य हकीम अंसारी ने कहा कि मालश्रृंग गांव में इस वर्ष पहली बार दुर्गा पूजा पंडाल का आयोजन किया जा रहा है। अब हर वर्ष मालसरिंग में पूजा पंडाल का भव्य तरीके से आयोजन किया जाएगा। यहां के श्रद्धालु पूजा करने के लिए दूर दूसरे गांव के पूजा पंडाल पर जाते थे। इस बार से गांव में ही पूजा पंडाल का आयोजन किया जा रहा है, जिससे पूरे गांव में खुशी का माहौल है। श्री अंसारी ने कहा कि, पूजा शांति और सौहार्दपूर्ण तरीके से संपन्न कराया जाएगा। इसके लिए समिति के तरफ से कमेटी का गठन कर लिया गया है। इसके अलावा पूजा पंडाल में वालंटियर भी मौजूद रहेंगे जो श्रद्धालुओं का मदद करेंगे। हकीम अंसारी ने कहा कि सभी के सहयोग से सौहार्द्र पूर्ण वातावरण में पूजा संपन्न किया जाएगा। उपद्रवियों को किसी भी कीमत में बक्सा नही जाएगा।

## दुमका के दुखु पोखर पर माफिया की नजर, स्थानीय लोगों ने किया विरोध

**PHOTON NEWS DUMKA :** जिले के अधिकांश पोखर का माफियाओं ने अस्तित्व ही समाप्त कर दिया है। अब बचे हुए पोखर भी उनकी नजर लग गई है। शहर के रसिकपुर में स्थित सालों पुराने दुखु पोखर को भी कब्जा करने की कवायद शुरू हो गई है। स्थानीय लोगों ने रविवार को इसका विरोध करते हुए काम बंद करा दिया। सोमवार को सीओ को आवेदन देकर रोक लगाने की मांग की जाएगी।

श्रवण यादव का कहना था कि पोखरा पर दावा करने वाले अब इसे समाप्त करने पर लगे हैं। पानी सुखाने के लिए कचरा भरा जा रहा है। पिलर काट दिया गया है ताकि पानी धीरे-धीरे निकल जाए। लंबे समय से इस तालाब पर सभी लोग कर्मकांड कराते आ रहे हैं। माफिया चाहते हैं कि पोखरा का अस्तित्व समाप्त कर इसे बेच दिया जाएगा। उनका कहना है कि पोखर का मालिक कहता है कि यह उनका निजी तालाब है। नियम है कि पोखरा का स्वरूप बदला नहीं जा सकता है।

विरोध-प्रदर्शन करते ग्रामीण। ● फोटोन न्यूज

राजेश शर्मा का कहना था कि बाप दादा के जमाने के तालाब को भरने का काम किया जा रहा है। इसका घेराव करने के लिए पिलर बनाया जा रहा है। इसकी सफाई जरूरी है। पोखरा को न तो बेचा जा सकता है और न ही इसका स्वरूप बदला जा सकता है। सालों से लोग यहां पर पूजा करते आ रहे हैं।

### रजरप्पा में नमामि गंगे योजना के अंतर्गत भव्य गंगा आरती का किया गया आयोजन

## अघोर नृत्य में दिखे महादेव, बारिश के बावजूद उमड़ा जन सैलाब, छतरी ओढ़कर की गयी आरती

**PHOTON NEWS RAMGARH :** विश्व प्रसिद्ध रजरप्पा में दामोदर नदी घाट पर गंगा आरती का अद्भुत दृश्य दिखा। नदी के एक किनारे पर मां गंगा की आरती हुई तो दूसरी छोर पर अघोर नृत्य में दिखे आदि देव महादेव। कार्यक्रम की शुरूआत डीसी चंदन कुमार और एसपी पीयूष पांडे ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम को लेकर दामोदर नदी के दोनों छोरों की आकर्षक सजावट की गई थी। जिसे देखने के लिए पूरे जिले से लोग पहुंचे। अघोर नृत्य में उत्तर प्रदेश के कलाकारों ने ऐसा प्रदर्शन किया की हर कोई मंत्र मुग्ध हो गया।

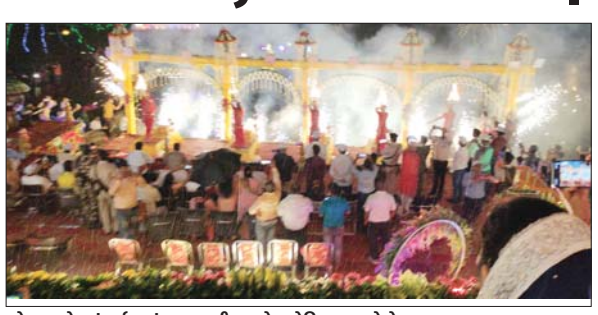

योजना के अंतर्गत गंगा आरती करते पुरोहित। ● फोटोन न्यूज

नमामि गंगे योजना अंतर्गत 15 सितंबर से दो अक्टूबर तक मनाए जा रहे स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत भव्य गंगा आरती का आयोजन किया गया। इस दौरान वन प्रमंडल पदाधिकारी नीतीश कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी मोहम्मद जावेद हुसैन, राज्य समन्वयक नमामि गंगे योजना अंजना भारती सहित अन्य का दामोदर एवं भैरवी नदी के संगम पर स्वागत किया गया।

नृत्य करते कलाकार। ● फोटोन न्यूज

गंगा आरती के पूर्व उत्तर प्रदेश राज्य के बनारस से आई टीम ने शिव तांडव स्त्रोत सहित अन्य मनमोहक नृत्यों के माध्यम से सभी का मनोरंजन किया जिसके उपरांत बनारस के ही पंडितों के द्वारा संस्कृत श्लोकों भजनों व मंत्रों के साथ गंगा आरती संपन्न कराई गई। गौरतलब होकि नमामि गंगे योजना के तहत पूर्व में भी रजरप्पा मंदिर परिक्षेत्र में गंगा आरती कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। लेकिन इस बार उपायुक्त चंदन कुमार के निर्देश पर भव्य तरीके से गंगा आरती का आयोजन कराया गया।

## स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत खूंटी जिले में चला सफाई अभियान

**PHOTON NEWS KHUNTI :** स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत रविवार को पूरे जिले में साफ-सफाई अभियान चलाया गया। अभियान में सरकारी अधिकारी-कर्मचारी, न्यायिक अधिकारी, राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक संगठनों के अलावा स्वयंसेवी संस्थाओं, बैंक के अधिकारी शामिल हुए।

स्वच्छ भारत मिशन के तहत 15 सितंबर से दो अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा पखवाडा मनाने को लेकर रविवार को सुबह 10 बजे एक साथ पूरे जिले में एक घंटे स्वच्छता के लिए कार्यक्रम चलाया गया। इसमें लोगों ने सामूहिक श्रमदान कर अपने-अपने क्षेत्रों की साफ-सफाई की। इस दौरान मुख्य रूप से कचहरी मैदान से बाजार टांड और राजा तालाब की सामूहिक श्रमदान से सफाई की गई। साथ ही भगत सिंह चौक से सेनिटेशन पार्क तक भी सफाई अभियान चलाया गया। सामूहिक श्रमदान सफाई की गई।

जिला प्रशासन के मुताबिक, अभियान का मुख्य उद्देश्य अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना है। प्रखंड और पंचायत में भी लोगों ने श्रमदान किया। इस दौरान आम जनों से अपील की गई कि वे अपने आसपास के वातावरण को दूषित होने से बचाएं और श्रमदान करें। अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने से चिकनगुनिया, डेंगू जैसी बीमारियों को उत्पन्न होने से रोका जा सकता है। इसलिए यह जरूरी है कि हम अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखें।

BRIEF NEWS

## स्पीकर दो विधायकों के साथ पश्चिम अफ्रीका रवाना

**RANCHI :** झारखंड विधानसभा के अध्यक्ष रवींद्रनाथ महतो राष्ट्रमंडल संसदीय संघ के 66वें सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए पश्चिम अफ्रीका गये हैं। रविवार को वे नई दिल्ली से पश्चिम अफ्रीका के लिए रवाना हुए। उनके साथ रांची के सांसद सीपी सिंह और मझगांव के विधायक निरल पूर्ति भी सम्मेलन में हिस्सा लेने गये हैं। वे इस सम्मेलन में ऑब्जर्वर के रूप में हिस्सा लेंगे। राष्ट्रमंडल संसदीय संघ का 66वां सम्मेलन पश्चिम अफ्रीका के घाना के अकरा में 30 सितंबर से चल रहा है, जो 06 अक्टूबर तक चलेगा। रविंद्रनाथ महतो राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में प्लीनरी सेशन में अपना व्याख्यान भी प्रस्तुत करेंगे।

## उत्कृष्ट कार्य को लेकर लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ अजीत हुए सम्मानित

**RANCHI :** स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतर काम करने को लेकर सदर अस्पताल के सर्जन डॉ अजीत कुमार को सम्मानित किया गया है। बता दें कि जनहित फाउंडेशन ने उन्हें सम्मानित किया है। पिछले तीन सालों से सदर अस्पताल में (विशेषकर लेप्रोस्कोपिक सर्जरी) के क्षेत्र में बेहतर काम करने को लेकर डॉ अजीत को सम्मानित किया गया है। इस मौके पर डॉ अजीत ने कहा कि सदर अस्पताल में 10 से 12 प्रकार के नए लेप्रोस्कोपिक सर्जरी की शुरूआत की जा चुकी है। रांची का सदर अस्पताल पहला जिला अस्पताल है जहां लेप्रोस्कोपिक सर्जरी शुरू की गई है। हमारी टीम ने नियमित रूप से पित्त की थैली के पत्थर का ऑपरेशन, अपेंडिक्स का ऑपरेशन, पेट के गोले में सिस्ट, विभिन्न प्रकार के हर्निया का ऑपरेशन लेप्रोस्कोपिक विधि के द्वारा की जा रही है।

## सीसीएल में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत श्रमदान

**RANCHI :** सीसीएल सीएमडी डॉ बी वीरा रेड्डी के नेतृत्व एवं दिशा-निर्देश में सीसीएल के मुख्यालय सहित सभी कोयला क्षेत्रों में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत सफल कार्यक्रम का आयोजन किया। इसी कड़ी में सीसीएल रांची द्वारा रविवार को स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत रांची के जाकिर हुसैन पार्क, रांची नगर निगम द्वारा संचालित सब्जी मंडी, रातू रोड, दरभंगा हाउस कैंपस सहित राज्य के 14 अन्य स्थानों में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किये गए। इस अवसर पर सीसीएल के निदेशक (तक/संच) राम बाबू प्रसाद, निदेशक (कार्मिक) हर्ष नाथ मिश्र एवं सीवीओ पंकज कुमार सहित विभिन्न विभागों के महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष एवं बड़ी संख्या में कर्मी उपस्थित थे। राम बाबू प्रसाद ने उपस्थित सभी को स्वच्छता शपथ दिलाई।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

### गांधी जयंती से पूर्व रांची में चला स्वच्छता अभियान, राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने दिलाई स्वच्छता की शपथ, बोले-

# देश को स्वच्छ रखना देशवासियों की जिम्मेदारी

**PHOTON NEWS RANCHI :** झारखंड के राज्यपाल सह कुलाधिपति डॉ सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि देश को स्वच्छ रखना देशवासियों की जिम्मेदारी है। हमें इस सोच से निकलना होगा कि साफ-सफाई और स्वच्छ पर्यावरण किसी एक व्यक्ति, विभाग, समूह या संगठन की जिम्मेदारी है। सभी को स्वयं के प्रयास से अपने आस-पास साफ सफाई रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी भी स्वयं अपने घर और शौचालय की सफाई करते थे। दक्षिण अफ्रिका में वह अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी के साथ स्वच्छता के लिए काम करते थे। उन्होंने कहा कि कोई भी देश अपने पर्यावरण और वातावरण को अपने लोगों की जागरूकता और प्रयास से ही स्वच्छ रखता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता के लिए स्वयं इसमें भाग लेकर देशवासियों को स्वच्छता का संदेश दिया है।

रांची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डॉ अजीत कुमार सिन्हा ने कहा कि स्वच्छता ही सेवा अभियान 2023 कार्यक्रम के तहत हमें रांची विश्वविद्यालय परिसर समेत अन्य जगहों को भी स्वच्छ और साफ सुथरा रखने का प्रयास करना चाहिए। हमारे इस कार्यक्रम का संदेश भी है स्वच्छता ही सेवा अभियान 2023 एक तारीख एक घंटा श्रमदान। कुलपति ने कहा कि हमारे एनएसएस में दस हजार से ज्यादा युवा कार्यकर्ता हैं जो अनवरत परिसर से लेकर अन्य स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाते हैं। रांची विश्वविद्यालय ने प्लास्टिक रहित दिनचर्या को बढ़ावा दिया है और हमारा स्वच्छता अभियान अब एक दिनी आयोजन न होकर विभिन्न स्थानों पर सालोंभर चलता है।

रांची विश्वविद्यालय परिसर की साफ-सफाई करते राज्यपाल सह कुलाधिपति डॉ सीपी राधाकृष्णन ● फोटोन न्यूज

## अर्जुन मुंडा, अन्नपूर्णा ने दिल्ली में की सफाई, बाबूलाल गिरिडीह व रघुवर ने रांची में कार्यकताओं संग चलाया झाड़ू

**RANCHI :** राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 154वीं जयंती से पहले रविवार को देशभर में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत भाजपा नेताओं, कार्यकताओं और आम लोगों ने श्रमदान किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील की सुबह 10 से 11 बजे तक देशभर के 6।4 लाख जगहों पर श्रमदान कर स्वच्छता अभियान चलाया गया। झारखंड के भाजपा नेताओं ने भी हाथों में झाड़ू लेकर सफाई अभियान में सहयोग दिया। केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास भाजपा कार्यकताओं के साथ सफाई अभियान में हिस्सा लिया। केंद्रीय राज्यमंत्री और कोडरमा सांसद अन्नपूर्णा देवी ने दिल्ली एयरपोर्ट के टर्मिनल 2 के पास स्थित पार्किंग और बस पड़ाव में हाथों में झाड़ू लेकर भाजपा कार्यकताओं के साथ सफाई की। झारखंड के प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी ने गिरिडीह के अंबेडकर चौक में भाजपा कार्यकताओं के साथ स्वच्छता अभियान चलाया। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए स्वच्छता के संदेश और अहमियत को सभी देशवासी आत्मसात कर इसे अपने दैनिक स्वभाव का हिस्सा बनाएं। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने रांची के सर्कुलर रोड स्थित नगड़ा टोली सरकारी विद्यालय के पास सफाई अभियान में शामिल हुए। उनके साथ महानगर भाजपा के अध्यक्ष केके गुप्ता, मंडल अध्यक्ष सूर्य प्रताप और पूर्व पार्षद रोशनी खलखो भी सफाई अभियान में शामिल हुई।

## महुआ माजी के नेतृत्व में प्लाजा चौक से लोहरा कोचा तक चला स्वच्छता अभियान

**PHOTON NEWS RANCHI :** झारखंड मुक्ति मोर्चा से राज्यसभा सांसद डॉ महुआ माजी के नेतृत्व में रांची के प्लाजा चौक से लेकर लोहरा कोचा तक स्वच्छता अभियान चलाया गया। आज पूरे देश में चल रहे स्वच्छता अभियान के तहत इन्होंने बड़ी संख्या में महिला, पुरुष और रांची नगर निगम की टीम के साथ झाड़ू लगाकर साफ-सफाई की। राज्यसभा सांसद डॉ महुआ माजी ने कहा कि दो दिनों से हो रही बारिश में भी आज इतनी संख्या में लोग स्वच्छता अभियान से जुड़कर पूरे भारतवर्ष में यह संदेश दे रहे हैं कि चाहे कैसी भी विपरीत परिस्थिति हो, फिर भी हम अपने शहर को स्वच्छ रखने का काम करेंगे। शहरवासियों से आह्वान किया कि एक दूसरे की मदद से अपने शहर को साफ रखने का बीड़ा उठाएं। इस स्वच्छता अभियान के कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ महुआ माजी, वार्ड 18 के प्रत्याशी सोमवित माजी, पूर्व पार्षद आशा देवी, नन्द किशोर सिंह चंदेल, अब्दुल्ला अंसारी, राहुल सिंह, रोहन सिंह, अर्जुन सिंह, शुभम वर्मा, परवेज, फिरोज, रीतू सिंह, मेहनाज, संगीता, अंबरीष, उजरमनई, कानन, रंजन, अरूणई, बबलू, हिना, नुसरत, प्रतिमा, राधिका, नाशरिन, सद्दाब, दिवाकर लाल, कौशिक, पमपा रुपेश, सबा मंसूर, गीता देवी, डबलू आदि उपस्थित थे।

रोड की साफ-सफाई करतीं डॉ. महुआ माजी व अन्य।

**बहावलपुरी पंजाबी समाज महिला समिति ने सड़कों की सफाई की**

इधर, बहावलपुरी पंजाबी समाज एवं बहावलपुरी पंजाबी समाज महिला समिति द्वारा रविवार को स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत सड़कों की सफाई की गयी और लोगों को स्वच्छता का संदेश दिया गया। इसके तहत रांची के रातू रोड स्थित कृष्णा नगर कॉलोनी की गलियों की साफ सफाई की गयी। आज के स्वच्छता अभियान में संस्था के अध्यक्ष ललित किंगर, सचिव अश्विनी सुखीजा, मोहन खीरबाट, कामराज खत्री, नरेश पपनेजा, किशोर पपनेजा, प्रमोद चुचरा, रवि नागपाल, बिमला किंगर, उषा सोनी समेत अन्य शामिल हुए।

**रिम्स में स्वच्छता ही सेवा अभियान**

सेवा पखवाड़ा के तहत रांची के रिम्स में रविवार को स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाया गया। चिकित्सा अधीक्षक डॉ हीरेंद्र बिरुआ, उपाधीक्षक डॉ शैलेश त्रिपाठी और एमबीबीएस के छात्र, सफाई कर्मचारियों ने रिम्स परिसर की सफाई की।

## रांची डीसी राहुल कुमार ने स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत किया श्रमदान

रांची समाहरणालय में कचरा साफ करते रांची डीसी व अन्य।

**PHOTON NEWS RANCHI :** स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत रविवार को रांची डीसी राहुल कुमार सिन्हा सहित अन्य विभागीय पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने सामूहिक रूप से श्रमदान किया। इस कार्य के लिए समाहरणालय परिसर को 5 जोन में बांटा गया, जिसमें विभागीय पदाधिकारियों ने संबंधित जोन में सफाई कार्य की। मौके पर मीडिया को संबोधित करते हुए डीसी ने कहा कि स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत जिले के सभी पदाधिकारी एवं कर्मियों ने विभिन्न स्थानों पर श्रमदान किया। जिसका मुख्य उद्देश्य अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना है। उन्होंने आमजनों से भी स्वच्छता के प्रति श्रमदान करने की अपील की, ताकि राजधानी के वातावरण को दूषित होने से बचाया जा सके। बता दें कि स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत श्रमदान के लिए देशभर में स्वच्छता ही सेवा अभियान की शुरूआत की गयी है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को स्वच्छता- एक जन आंदोलन का रूप देने के लिए स्वच्छ भारत दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को उनकी जयंती के दिन श्रद्धांजलि है। स्वच्छता ही सेवा 2023 अभियान का मुख्य विषय कचरा मुक्त भारत है, जिसका मुख्य उद्देश्य साफ-सफाई और सफाई मित्रों के कल्याण पर आधारित है।

## NAMKUM KGV में लगा स्वास्थ्य शिविर गर्वनर सीपी राधाकृष्णन ने किया उद्घाटन

### शिविर में 2378 लोगों की हुई जांच

**PHOTON NEWS RANCHI :** कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय नामकुम में स्वास्थ्य शिविर आयुष्मान भव का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन, स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने किया। इस दौरान शिविर में कुल 2378 लोगों का स्वास्थ्य जांच की गई। मौके पर डॉ. जी लोगनाथन एवं उनकी टीम ने बधाई दी। कहा कि स्वास्थ्य शिविर के आयोजन से लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आती है। बहुत सारे लोग जो किसी कारणवश चिकित्सक या अस्पताल नहीं जा पाते हैं, उन्हें शिविर के माध्यम से अपनी बीमारियों का पता होता है। उनका त्वरित इलाज भी संभव हो पाता है। शिविर बीमारियों की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। मौके पर 11 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि शिविर में लोगों को जीवन में स्वस्थ जीवनशैली, उचित पोषण की भी जानकारी प्रदान की जाती है। उन्होंने कहा कि किसी बीमारी से उबरने के लिए इलाज के साथ-साथ मानसिक बल भी आवश्यक है। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं के साथ-साथ आसपास के समाज के लोग भी इस शिविर से लाभान्वित होंगे। लोगों के कल्याण के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा आयुष्मान भव योजना राष्ट्र को समर्पित किया गया। इस योजना का उद्देश्य ही है कि समाज के सभी वर्गों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा के साथ-साथ बीमा कवरेज से आच्छादित करना। भगवान बिरसा मुंडा की धरती झारखंड से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वास्थ्य के क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी बीमा योजना आयुष्मान भारत योजना की शुरूआत की गई थी।

## खेलो झारखंड वुशू प्रतियोगिता : रांची टीम को मिले 19 गोल्ड मेडल, ओवरऑल चैंपियन का मिला खिताब

झारखंड वुशू प्रतियोगिता में खिताब मिलने के बाद रांची टीम के खिलाड़ी।

**PHOTON NEWS RANCHI :** स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के द्वारा झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद रांची के तत्वाधान में राज्य स्तरीय खेलो झारखंड वुशू प्रतियोगिता का समापन हुआ। रांची के ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव इंडोर स्टेडियम, खेल गांव में आयोजित इस प्रतियोगिता में राज्य भर से वूशु के अंडर 14/17 बालक बालिका के 35 भार वर्ग में खिलाड़ियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में रांची ओवरऑल चैंपियन टीम बनी। वहीं रामगढ़ की टीम को ओवरऑल रनर का खिताब मिला। प्रतियोगिता में रांची की टीम 19 स्वर्ण, 12 रजत एवं 13 कांस्य पदक के साथ ओवरऑल चैंपियन बनी। वहीं रामगढ़ की टीम 10 स्वर्ण, 6 रजत एवं 6 कांस्य पदक के साथ दूसरे स्थान पर रही। राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी धीर सेन सोरेंग ने बताया कि विजेताओं के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित की जायेगी। जिसके बाद रांची में जनवरी में होने वाली राष्ट्रीय स्कूली खेल 2023-24 में राज्य टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्रतियोगिता को सफल बनाने में शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद कोषांग के सदस्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ विजय कुमार सिंह, (रजिस्ट्रार सरला बिरला यूनिवर्सिटी रांची), विशिष्ट अतिथि शिवेंदु दुबे, (कोषाध्यक्ष झारखंड ओलिंपिक संघ), शैलेंद्र दुबे (महासचीव झारखंड वुशू संघ), कुमुद प्रसाद साहू, उदय साहू, अमर प्रियदर्शी (निदेशक-झारखंड वूशु संघ) ने विजेता टीमों को ट्रॉफी प्रदान किया। मंच का संचालन अमरेंद्र द्विवेदी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन सुशील कच्छप ने किया।

## रांची में वन्यप्राणी सप्ताह का शुभारंभ

### डीजीपी अजय कुमार सिंह ने दिया वनों के संरक्षण का संदेश

प्रतिभागियों को हरी झंडी दिखकर रवाना करते डीजीपी व अन्य।

**PHOTON NEWS RANCHI :** 69वें वन्यप्राणी सप्ताह 2023 के उपलक्ष्य में रविवार को सुबह 6 बजे वन्यप्राणी सप्ताह का शुभारंभ वॉकाथन के आयोजन से किया गया। इस कार्यक्रम में रांची के अलग-अलग विद्यालयों से 350 बच्चे एवं ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के माध्यम से 400 आम लोग, मुख्य वन संरक्षक एवं अन्य संस्थानों के पदाधिकारी/कर्मचारी सहित 1000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। झारखंड के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख द्वारा सभी प्रतिभागियों एवं आम लोगों को वन एवं वनों के संरक्षण के संदर्भ में जागरूक किया गया। मुख्य अतिथि पुलिस महानिदेशक अजय कुमार सिंह ने आम लोगों एवं स्कूली बच्चों को वन एवं वनों के संरक्षण को लेकर जागरूकता संदेश दिया। वॉकाथन का आयोजन एस आर नटेशा, भावसे, मुख्य वन संरक्षक, वन्यप्राणी के द्वारा किया गया। झारखंड के पुलिस महानिदेशक एवं झारखंड के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख द्वारा हरी झंडी दिखाकर सभी प्रतिभागियों को पलाश वन सभागार (डोरंडा) से रवाना किया गया।

### राज्य के चार जिले पाकुड़, साहिबगंज, दुमका और गोड्डा कालाजार से प्रभावित

## समन्वित प्रयास से कालाजार नियंत्रण के मिल रहे बेहतर नतीजे : वीरेंद्र

**PHOTON NEWS RANCHI :** कालाजार उन्मूलन के लिए झारखंड में किये जा रहे समन्वित प्रयास के बेहतर नतीजे आ रहे हैं। राज्य के चार जिले पाकुड़, साहिबगंज, दुमका और गोड्डा कालाजार से प्रभावित हैं। इनमें पाकुड़ में अपेक्षाकृत अधिक मामले मिलते हैं लेकिन लगातार इस बीमारी के नियंत्रण के लिए चलाये जा रहे अभियान के कारण यह संभावना बनती दिख रही है कि इस साल झारखंड कालाजार से उन्मूलित हो जाए। झारखंड में

वेक्टर बोर्न डिजीज के स्टेट प्रोग्राम ऑफिसर वीरेंद्र कुमार सिंह ने रविवार को बताया कि सिर्फ पाकुड़ जिला का लिट्टीपाड़ा एक ऐसा ब्लॉक है, जहां प्रति 10 हजार की आबादी पर एक केस अभी भी मिल रहा है। कुछ प्रखंड में प्रति दस हजार की आबादी पर केस की संख्या 0.90 या 0.86 है। उन्होंने कहा कि स्थिति में सुधार हो रहा है और हमलोग आशान्वित हैं। स्वास्थ्य केंद्र व अस्पतालों में कालाजार से संबंधित सभी दवाइयां उपलब्ध हैं और स्वास्थ्य कार्यकर्ता लगातार काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि झारखंड कालाजार उन्मूलन की दिशा में स्थानीय ग्राम प्रधान, परगनैत के सहयोग और सहिया, समूह की दीदियों व स्वास्थ्य कार्यकताओं की मदद से आगे बढ रहा है। लिट्टीपाड़ा के परगनैत चुटार किस्कू कहते हैं। पाकुड़ जिले में छह ब्लॉक है। महीने में एक दिन हर ब्लॉक में और उसके बाद जिले के स्तर पर हमलोग प्रधान व परगनैत की बैठक करते हैं, उसमें भी हमलोग कालाजार के नियंत्रण व उन्मूलन प्रयासों की चर्चा व समीक्षा करते हैं। अभी यह बीमारी काफी नियंत्रण में है।

हिरणपुर ब्लॉक के दराजमाथ के प्रधान जय शिव ने कहा कि हमारे यहां कालाजार नियंत्रण के लिए प्रभावी काम हो रहा है। आंगनबाड़ी व ग्रुप की दीदियों की मदद से महिलाओं में भी बीमारी को लेकर काफी जागरुकता आयी है। पाकुड़ के हिरणपुर ब्लॉक के शिवनगर की सहिया बेबी किस्कू कहती हैं कि हमने 15 दिनों का अभियान चला कर सर्वे कर लिया है और स्थिति नियंत्रण में है। वे कहती हैं कि अब महिलाएं भी इस बीमारी के लेकर जागरूक हो गयीं हैं और वे इसके होने की वजह और इससे बचाव को उपाय को जानने लगी हैं। पाकुड़ के डीएमओ, वेक्टर बोर्न डिजीज डॉ केके सिंह ने कहा कि हम इस साल कालाजार के उन्मूलन (एलिमिनेशन) का पूरा प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ज्यादातर ब्लॉक में यह बीमारी नियंत्रण में है। लिट्टीपाड़ा और अमड़ापाड़ा ब्लॉक पर हमारी विशेष नजर है। पाकुड़ में कालाजार बीमारी के कंसलटेंट राजू के अनुसार, लिट्टीपाड़ा, अमड़ापाड़ा और हिरणपुर ब्लॉक पर हमलोग ध्यान केंद्रित कर काम कर रहे हैं।

## महिला होमगार्ड से काम करवाने के आरोप से मुक्त हुए मृत्युंजय कुमार

**CRIME REPORTER RANCHI :** महिला गृह रक्षक पर उसकी अनिच्छा के विरूद्ध आवास पर कार्य करने के लिए दबाव बनाने के आरोपों से तत्कालीन पुलिस उप महानिरीक्षक,होमगार्ड सम्प्रति रिटायर मृत्युंजय कुमार को आरोपों से मुक्त कर दिया गया है। उनके खिलाफ 12 अगस्त 2017 को आरोप गठित हुआ था। आरोपों में महिला होमगार्ड को आवास में काम करने का दवाब दिया जाना, आवस ड्यूटी से इंकार करने पर महिला रक्षक एवं उनकी माता को कार्यालय में बुलाकर दुर्व्यवहार करना, महिला होमगार्ड को 55 दिनों तक ड्यूटी से वंचित रखने का भी आरोप था। पूरे मामले की तत्काल जांच हुई थी जिसमें प्रथम दृष्टया आरोप सही पाये गये थे। बाद में विभागीय जांच कार्यवाही भी संचालित हुई।जांच संचालन पदाधिकारी भी नियुक्ति किए गये जिसकी रिपोर्ट 2019 में सरकार को सौंपी गयी। पूरे मामले की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गयी। समीक्षा के क्रम में यह बात सामने आई कि सभी आरोप बेबुनियाद थे और जांच में आरोप प्रमाणित नहीं पाये गये। ऐसे में सभी आरोपों से मुक्त करते हुए विभागीय कार्यवाही निस्तारित कर दी गयी।

BRIEF NEWS

## सीआरपीएफ ने गोविंदपुर में चलाया स्वच्छता अभियान

JAMSHEDPUR : छोटा गोविंदपुर पंचायत अंतर्गत कैलाश नगर में रविवार को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) जमशेदपुर द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया। मौके पर मुख्य रूप से विनय कुमार सिंह, द्वितीय कमान अधिकारी ने कहा कि आज के कार्यक्रम का उद्देश्य स्वच्छता के साथ-साथ लोगों को स्वच्छ रहने के लिए जागरूक करना भी है। स्वच्छ तन से ही स्वच्छ समाज का निर्माण होता है। वहीं जिला पार्षद डॉ परितोष सिंह ने कहा की स्वच्छता की जिम्मेदारी प्रत्येक नागरिक की है। स्वच्छ गोविंदपुर स्वस्थ गोविंदपुर के तहत विगत 1 माह से गोविंदपुर में स्वच्छता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस अवसर पर निरीक्षक सुजय कुमार, प्रमोद कुमार उप निरीक्षक कमलेश कुमार, हरिम खान सहायक उप निरीक्षक सुमित कुमार, रंजीत कुमार सिंह, कल्याणी मिश्रा, हवलदार सोम शंकर सिंह,ओम प्रकाश सिपाही विश्वजीत, अनीश उत्तर पंचायत के मुखिया रंजीत सिंह सरदार, सतवीर सिंह बग्गा, अंजय सिंह, दिनेश कुमार, लक्ष्मी देवी, कलावती देवी, स्वीटी कुमारी, प्याली दत्ता, किशोर कुमार, प्रशांत कुमार मुख्य रूप से उपस्थित थे।

## बड़ाजुड़ी पंचायत भवन में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन

JAMSHEDPUR : प्रखंड के बड़ाजुड़ी पंचायत भवन में पूर्णिमा नेत्रालय की ओर से रविवार को निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मौजूद पूर्णिमा नेत्रालय की वर्षा गुप्ता, श्वेता कुमारी व अनुराग ने बताया कि चयनित मरीजों का निःशुल्क ऑपरेशन किया जाएगा। 67 लोगों ने नेत्र जांच कराया। इसमें 26 लोगों का मोतियाबिंद तथा एक का पीटीआर पाया गया। मौके पर उपस्थित जिला परिषद सदस्य देवयानी मुर्मू ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में आंखों की समस्या में बढ़ोतरी हुई है। इसे देखते हुए ग्रामीणों की मांग पर लगातार शिविर लगाया जाएगा। बांकी पंचायत के तिलका मांझी पुस्तकालय में 4 अक्टूबर को नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर मुखिया रायश्री सामाद, पंसस छायारानी साव, सेफाली भकत, अलोका भकत, सुभाष भकत, विष्णुप्रिया भकत, जासमी सोरेन समेत अनेक लोग उपस्थित थे।

## टाटा मैजिक वाहन को ट्रेलर ने मारी टक्कर, नौ घायल

JAMSHEDPUR : धालभूमगढ़ थाना क्षेत्र के महुलीसोल चौक के समीप रविवार की शाम टाटा मैजिक सवारी गाड़ी को ट्रेलर ने टक्कर मार दी। इस दुर्घटना में टाटा मैजिक में सवार नौ लोग घायल हो गए। सभी घायलों को पुलिस की पेट्रोलिंग वाहन से अनुमंडल अस्पताल लाया गया। अस्पताल में डॉ मीरा मुंडा ने सभी घायलों का प्राथमिक उपचार किया। डॉक्टर ने बताया कि दो घायलों की स्थिति गंभीर है। इनमें गुड़ाबांधा थाना क्षेत्र के हथियापाटा गांव की रहने वाली दुर्गा देवी मुंडा (42) तथा ओडिशा के मयूरभंज जिले के रहने वाले रथो सिंह (25) शामिल है। जिन्हें बेहतर इलाज के लिए एमजीएम अस्पताल भेजा गया है। अन्य घायलों में धालभूमगढ़ थाना क्षेत्र के चोईरा गांव निवासी मंटू मुंडा (55), दिनेश मुंडा (12), हथियापाटा गांव निवासी प्रिया मुंडा (18), गुरुवारी मुंडा (22), महेश्वर मुंडा (15), दिनवाला मुंडा (40) और महेश्वर मुंडा (20) शामिल है। सभी लोग टाटा मैजिक वाहन से हाथी खेदा मंदिर में पूजा-अर्चना कर वापस घर लौट रहे थे।

## स्वच्छता ही सेवा के तहत स्टेशन क्षेत्र में चला सफाई अभियान

JAMSHEDPUR : देश भर में स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत सफाई अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत टाटानगर स्टेशन व उसके आसपास सफाई अभियान चलाया गया। मौके पर रेलकर्मियों के साथ-साथ जमशेदपुर लायंस क्लब, गायत्री क्लब, जेएसआर ऑन व्हिल्स समेत कई संस्था और स्काउट गाइड्स भी मौजूद थे। कार्यक्रम की शुरूआत में सभी को शपथ दिलाई गई, जिसके बाद स्टेशन परिसर के आस-पास प्रभात फेरी निकाली गई। इस दौरान पौधरोपण भी किया गया।

### राउरकेला चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों की बैठक आयोजित

# बुनियादी सुविधाओं के विकास को लेकर चैंबर ने रखी मांग

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला स्टील प्लांट के के निदेशक अतानु भौमिक के साथ रविवार को राउरकेला चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों की बैठक सम्मेलन कक्ष में आयोजित हुई। इस दौरान चैंबर अध्यक्ष सुनील कयाल, उपाध्यक्ष गुरुमीत सिंह और नरेश आर्य, जीएस प्रभात टिबरेवाल, संतोष अग्रवाल और शुभम कपूर मौजूद थे।

बैठक में शामिल राउरकेला चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

बैठक में एमएसएमई और स्टार्टअप का विकास, एमएसएमई और आपूर्तिकर्ताओं को प्राथमिकताएं, पंजीकरण सरलीकरण, डाउनस्ट्रीम और सहायक उद्योग, एचएसएम गेट पर बुनियादी सुविधाएं, हनुमान वाटिका और त्रिशक्ति धाम के पास फुटओवर ब्रिज की मांग, राउरकेला हवाई अड्डे पर आईएलएस सिस्टम की स्थापना और कई अन्य मुद्दे पर चर्चा हुई।

आरएसपी निदेशक अतनु भौमिक ने चैंबर की गतिविधियों की सराहना की और उद्योगों के समग्र विकास और शहर के विकास के लिए काम करने का आश्वासन दिया। उन्होंने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और साथ ही अपने भाषण में पूर्व और वर्तमान टीम को बधाई दी।

आरसीसीआई की ओर से जनरल सेक्रेटरी प्रभात टिबरेवाल ने मुद्दे उठाए, जबकि वीपी गुरमीत सिंह ने धन्यवाद दिया।

# टाटा-थावे और तपस्विनी एक्सप्रेस को राउरकेला तक बढाने को लेकर रेल मंत्री को सौपेंगे ज्ञापन

मंत्री को ज्ञापन देते पार्टी के लोग। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : ट्रेन नंबर 15027/28मौर्या एक्सप्रेस एवं ट्रेन नंबर 18181/82 थावे टाटा एक्सप्रेस को राउरकेला तक बढाने की मांग को लेकर राउरकेला से लोक जनशक्ति पार्टी के ओड़िशा अध्यक्ष राजन श्रीवास्तव और बिहार समाज सेवा संघ के ओड़िशा अध्यक्ष सुमेर सिंह तपस्विनी एक्सप्रेस से रांची होते हुए देश की राजधानी दिल्ली रवाना हुए हैं।

अपने तय कार्यक्रम के अनुसार रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव,लोक जनशक्ति पार्टी के नेता एवं जमूई के सांसद चिराग पासवान, दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी के अलावा अन्य कई नेताओं से मुलाकात कर मौर्या एक्सप्रेस एवं टाटा थावे ट्रेन को राउरकेला तक बढाने की मांग से अवगत कराते हुए अपनी मांग पत्र देंगे। रविवार को उन्हें राउरकेला स्टेशन पर विदा करने तथा शुभाकामना देकर रवाना करने राष्ट्रीय बिहारी समाज के ओपी सिंह, क्लब के सचिव जीतू राय रेलवे स्टेशन गए । वहीं उद्धव के सचिव वेद प्रकाश तिवारी, राष्ट्रीय जन जागरण सेवा संघ के अरुण सिंह, बिहार सांस्कृतिक परिषद के अध्यक्ष राम सिंह ने यात्रा के सफलता की शुभकामनाएं दी।

# कॉलेजों में चला स्वच्छता अभियान

PHOTON NEWS ROURKELA : राजकीय स्वशासी महाविद्यालय, राउरकेला में स्वच्छता के लिए श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। केंद्र सरकार द्वारा नौ वर्ष पूर्व प्रारंभ किए गए स्वच्छ भारत कार्यक्रम का समापन बालक विभाग के समन्वयक समीर सौरभ पारवी एवं संयोजिका रामेश्वरी भोई के नेतृत्व में किया गया।

स्वच्छता कार्य में भाग लेती छात्राएं। ● फोटोन न्यूज

संडे कॉलेज राष्ट्रीय सेवा योजना की संबद्ध शाखा की ओर से बालिका विभाग का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कॉलेज के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. विजय कुमार बेहरा के मार्गदर्शन में बड़ी संख्या में स्वयंसेवक शामिल हुए। राष्ट्रीय सेवा योजना ने भाग लिया और कॉलेज परिसर के साथ-साथ छात्रावासों और छात्रावासों की सफाई के लिए एक घंटे का दान दिया।

इस अवसर पर 'स्वच्छता ही सेवा' से संबंधित शपथ ली गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता अजय कुमार बेहरा ने की और छात्रावास पदाधिकारी सनीराम केरकेट्टा, प्रभारी पदाधिकारी ममता बक्सला, प्रदीप खेस एवं आवास कुमार होता ने छात्रावास एवं अन्य जगहों की साफ-सफाई की।

## पूर्व सैनिक सेवा परिषद ने शहीद स्थल गोलमुरी में चलाया सफाई अभियान

JAMSHEDPUR : अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद ने ह्वएक तारीख, एक घंटा, एक साथह्व मुहिम के तहत रविवार को तीनों सेना से सेवानिवृत सैनिक साथियों ने शहीद स्थल गोलमुरी में सफाई अभियान चलाया। मौके पर संगठन के महामंत्री विनय यादव ने कहा कि आज दुनिया की आबादी को सुरक्षित और संरक्षित करना है तो स्वच्छता जरूरी है। साफ-सफाई आम लोगों की नैतिक जिम्मेवारी है। इस अवसर पर वरुण कुमार, राघवेंद्र, एसपी जायसवाल, सुखविंदर सिंह, अनिल सिन्हा, विनेश प्रसाद एवं अन्य पूर्व सैनिक उपस्थित थे।

# पानपोस रेलवे टनल के पास चला सफाई अभियान

स्वच्छता अभियान में शामिल सरस्वती शिशु मंदिर के शिक्षक व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : सरस्वती शिशु मंदिर पानपोस के बैनर तले सड़क की मरम्मत एवं सफाई अभियान रविवार को चलाया गया। पानपोस रेलवे टनल के आसपास सरस्वती शिशु मंदिर के शिक्षकों एवं समिति सदस्यों ने मिलकर सफाई अभियान की शुरूआत की। रेलवे टनल के आसपास लोगों को आने-जाने में असुविधा होती थी,क्योंकि वहां पानी हर समय भरा रहता था।वहां से जगह से कीचड़ एवं पत्थर निकालकर सफाई किया गया। एवं टनल के बाहर दो-तीन गड्ढे थे उसमें मिट्टी डालकर उस गड्ढे को बंद किया गया। इस अभियान में समिति के सदस्यों में रमेश अग्रवाल, चंदन अग्रवाल, संतोष मोहंती, राजा मोहंती, अमर साहू, रविंद्र सामल एवं मनमोहन भाई सम्मिलित थे।

# स्वच्छता को अपने जीवन का अंग बनाएं विद्यार्थी : प्राचार्य

PHOTON NEWS CHAIBASA : टाटा कॉलेज परिसर में स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत एक दिन एक घंटा स्वच्छता कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस स्वच्छता कार्यक्रम में टाटा कॉलेज एनएसएस एवं एनसीसी के स्वयंसेवकों और कॉलेज के विद्यार्थियों ने भाग लिया। स्वच्छता अभियान का नेतृत्व कॉलेज के प्राचार्य डॉ एससी दाश ने किया। प्राचार्य के नेतृत्व में कॉलेज परिसर की साफ सफाई की गई।

स्वच्छता कार्यक्रम में लगे लोग।

प्राचार्य डॉ दाश ने स्वच्छता को अपने जीवन का अंग बनाने और छात्रों को कॉलेज परिसर को स्वच्छ रखने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के खेल पदाधिकारी डॉ मनमथ नारायण सिंह, एनएसएस के कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो। रिंकी दोराई एवं डॉ हरीश कुमार समेत अन्य उपस्थित थे।

# भक्त को भगवान से मिलाने की कथा है श्रीमद्भागवत कथा: ब्रजेश गोस्वामी

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : श्री राजस्थान शिव मंदिर जुगसलाई के तत्वाधान में श्रीमद्भागवत कथा की शुरूआत रविवार को हुई। कथा के पहले दिन श्रीमद्भागवत कथा की पूजा अर्चना के बाद भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

कथा करते ब्रजेश गोस्वामी ● फोटोन न्यूज

इस दैरान व्यास पीठ से बोलते हुये प्रसिद्ध कथा वाचक, ब्रजेश गोस्वामी जी ने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा एक पुस्तक मात्र नहीं है, बल्कि यह भवसागर से तारने वाली, भक्त को भगवान से मीलाकर मानव जीवन को सफल बनाने का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सशक्त माध्यम है, इसके आयोजन से, सुनने से पितृ सुखी होते हैं। अर्पण, तर्पण एवं समर्पण का भाव ही श्रीमद्भागवत कथा का सार है, आचार्य जी ने श्रीमद्भागवत कथा के लिखे जाने के स्थान बद्रीनाथ के पास माणा गांव, इसे सुनाये जाने के स्थान हरिद्वार इत्यादि के संबध में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की। मौके पर छीतर मल धूत, अरुण अग्रवाल, सांवर लाल शर्मा, पवन सिंगोदिया, पवन काबरा, सुरेश नरेडी, कैलाश अग्रवाल, दीपक रामूका, सीताराम भरतिया, विश्व नाथ शर्मा, रतन मैंगोतिया आदि उपस्थित थे।

## भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष ने की बैठक, चुनाव की तैयारी पर दिया जोर

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : रविवार को कदमा के भाटिया बस्ती पुष्पांजलि क्लब में भाजपा मंडल कमेटी की एक बैठक मंडल अध्यक्ष राजेश सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में विशिष्ट अतिथि के रूप में मंडल प्रवासी और किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार सिंह उपस्थित थे। बूथ सशक्तिकरण को लेकर हुई इस बैठक में मंडल पदाधिकारी, शक्ति केंद्र प्रभारी और बूथ अध्यक्ष मौजूद थे। इस अवसर पर राजकुमार सिंह ने कार्यकर्ता का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि बूथ अध्यक्ष संगठन की रीढ़ होते है। सभी कार्यकर्ता संगठित होकर आगामी चुनाव की तैयारी में लग जाए।

इस अवसर पर मुख्य रूप से महानगर उपाध्यक्ष सुधांशु ओझा, मंडल महामंत्री अजय झा,ललन चौहान, अमरेंद्र मल्लिक, रमेश बास्के, भोला शर्मा, प्रेम कुमार, शोभा श्रीवास्तव, राजेश सोनकर, कार्तिक गोप, कमल कुमार, संजय शर्मा, डीएन सिंह, केएन ओझा, बर्मा प्रसाद, कृष्णा देवी, विक्की यादव, गणेश भूमिज, बिनोद रजक, राघव प्रसाद, संतोष सिंह, प्रकाश कुमार, रेणु झा, रीना सरदार, खुशी ओझा, यशवंत सिंह, गुड्डी देवी, सीमा जयसवाल, निर्मला देवी, सुब्रत दास, संतोष शर्मा, रीता सरदार, बीना देवी सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

# महिला कॉलेज की छात्राओं ने किया श्रमदान, परिसर को किया गया स्वच्छ

PHOTON NEWS CHAIBASA : महिला कॉलेज में एक तारीख एक घंटा एक साथ कार्यक्रम आयोजित कर स्वच्छता अभियान चलाई गई। नागरिकों के नेतृत्व में स्वच्छता के लिए एक घंटे के श्रमदान कर कॉलेज के आसपास साफ सफाई की गई। महिला कॉलेज के आईक्यूएससी और एनएसएस बीएड यूनिट की ओर से बापू को स्वच्छांजलि अर्पित की गई।

स्वच्छता अभियान में शामिल कॉलेज की छात्राएं। ● फोटोन न्यूज

मौके पर एनएसएस वॉलिंटियर्स के साथ-साथ कॉलेज की छात्राओं ने भी बढ़-चढ़कर के हिस्सा लिया। उन्होंने स्कॉट स्कूल से लेकर महिला कॉलेज के मुख्य द्वार तक तथा पूरे कॉलेज कैंपस की साफ सफाई की। प्रातः 9 बजे से वालंटियर्स और छात्राए उपस्थित हो गई थी और उन्होंने 10 बजे से 11 बजे तक सफाई अभियान चलाया।

मौके पर आईक्यूएससी कोऑर्डिनेटर सह एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर डॉ अर्पित सुमन ने बताया कि एक घंटे का स्वच्छता श्रमदान किया गया। 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर वेबिनार का आयोजन किया जाएगा। जिसका मुख्य विषय महात्मा गांधी और उनका व्यक्तित्व रखा गया है। इस अवसर पर पूर्व प्राचार्य डॉ लोकनाथ, डॉ सुचिता बाड़ा , मोबारक करीम हाशमी और धनंजय कुमार ने भी सभी को स्वच्छता के महत्व को बताया। साथ ही कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।

# सूरजमल जैन डीएवी स्कूल में चला स्वच्छता पखवाड़ा, परिसर के बाहर से हटाई गंदगी

PHOTON NEWS CHAIBASA : स्थानीय सूरजमल जैन डीएवी पब्लिक स्कूल में 'स्वच्छता पखवाड़ा' के अंतर्गत स्कूल की प्राचार्य रेखा कुमारी के निर्देशन में स्वच्छता अभियान चलाया गया। स्कूली छात्र-छात्राओं, कराटे तथा ताइक्वांडो के प्रशिक्षणार्थियों के अलावे विद्यालय शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भी इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। परिसर के बाहर की गंदगी की लगभग 1 घंटे तक सफाई की गई। खेल शिक्षक जयप्रकाश व अर्जुन महाकुड ने इसमें महती भूमिका अदा की। स्वच्छता ही सेवा गांधी जी के इस सूत्र वाक्य के मदेनजर आज देश व्यापी अभियान चल रहा है। इस अवसर

स्वच्छता अभियान में शामिल स्कूल के शिक्षक, कर्मचारी व छात्र-छात्राएं। ● फोटोन न्यूज

पर वरिष्ठकर्मी आरएस सिन्हा, हिंदी विभागाध्यक्ष एसबी सिंह, शिक्षक साकिब सलीम, एएन पाणिग्रही, शुभम चिरानिया, एकेएस महापात्रा, मनोज महंती, अनीता चक्रवर्ती, रमा सुनिधि, ज्योति, सीमा चौरसिया सहित सभी चतुर्थ वर्गीय कर्मचारियों ने अपना योगदान दिया। सबने एकजुट होकर पूज्य बापू को अपनी स्वच्छांजलि दी। कराटे प्रशिक्षक पंकज कुमार, ताइक्वांडो प्रशिक्षक अनुराग तथा उत्कर्ष कुमार ने भी अभियान को सफल बनाने में अहम रोल अदा किया।

### तीन दिवसीय NDBBJS MEMORIAL फुटबॉल प्रतियोगिता का समापन, मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए विधायक दीपक बिरुवा

# आजाद परिंदा को टाइब्रेकर में 4-3 से हराकर चैंपियन बना सिंहभूम शेर

PHOTON NEWS CHAIBASA : सदर प्रखंड के कमारहातु में मैदान में नव युवक संघ की ओर से आयोजित तीन दिवसीय एनडीबीबीजेएस मेमोरियल फुटबॉल प्रतियोगिता का फाइनल सह समापन रविवार को हुआ। आजाद परिंदा बुरुइगुटु बनाम सिंहभूम शेर की बीच शानदार फाइनल मैच हुआ। जिसमें सिंहभूम शेर ने आजाद परिंदा को टाइब्रेकर में 4-3 से पराजित कर विजेता बनी। मध्यांतर तक दोनों टीमें वहीं वरिष्ठ खिलाड़ियों का फोर्टी प्लस फुटबॉल प्रतियोगिता में सदर प्रखंड की टीम और पलटन फुटबॉल टीम

खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते विधायक दीपक बिरुवा। ● फोटोन न्यूज

के बीच फाइनल मुकाबला हुआ। जिसमें पलटन टीम ने ट्राइब्रेकर में जीत हासिल किया।

समारोह में बतौर मुख्य अतिथि विधायक दीपक बिरुवा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला 20 सूत्री क्रियान्वयन समिति सदस्य श्री सुभाष बनर्जी शामिल हुए। मुख्य अतिथि विधायक दीपक बिरुवा व जिला 20 सूत्री क्रियान्वयन समिति सदस्य सुभाष बनर्जी ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करने के बाद गेंद को किक मारकर फाइनल मैच का शुभारंभ किया।

विजेता व उपविजेता टीमों को मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक दीपक बिरुवा के हाथों एक-एक खस्सी एवं नकद राशि से पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में सिंहभूम शेर के गोलकीपर ललित बेंकुरा और आजाद परिंदा के चंद्र देवगम को समाजसेवी डॉ. अनंत कुमार महतो के सौजन्य से एक-एक साइकिल प्रदान किया गया। साथ ही प्रतियोगिता में कुल 48 टीमों ने भाग लिया। वहीं फोर्टी प्लस में आठ टीमों ने भाग लिया।

विजेता-उपविजेता टीमों को एम्स, नई दिल्ली के असिस्टेंट इंजीनियर रुपनारायण देवगम एवं बीएआरसी, मुंबई के वैज्ञानिक सहायक की ओर से अतिरिक्त नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। फाइनल मैच में रेफरी सनी बारी और चांबरा देवगम थे। पूरे प्रतियोगिता के कमेंटेटर गोपीनाथ गोप थे। मौके पर मतकमहातु पंचायत मुखिया जुलियाना देवगम, पूर्व मुखिया लादु देवगम, ग्राम मुंडा बिरसा देवगम, पंसस दीनबंधु देवगम, पंसस मंजू देवगम, पंचायत दिउरी चंद्रमोहन बिरुवा, समाजसेवी अधिवक्ता सुरेन्द्र पूर्ति, वीरसिंह बुड़ीउली, अरुण मुंडरी, जीतू बारी, कृष्णा देवगम, रांधो देवगम, रमेश देवगम,सोनाराम देवगम, समिति के अध्यक्ष सोना सिंह देवगम, सचिव सुरजा देवगम, राजेश देवगम, सालुका देवगम, प्रकाश देवगम, सोमय देवगम, अभय देवगम, चांबरा देवगम, अजय हेम्ब्रम, नारायण सुंडी, ललिता देवगम, सिंगराय देवगम समेत काफी संख्या में महिला-पुरुष खेलप्रेमी दर्शक उपस्थित थे।

# ब्लॉक कर्मचारी के बेटे की हत्या

## गांव के युवक ने लातझघुसे और डंडे से मारकर की हत्या, मंदिर के पास शव छोड़कर फरार

**पटना।** टाउन थाना क्षेत्र के मझौवां गांव में शनिवार रात एक चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी की डंडे से पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। घटना को लेकर आसपास के इलाके में सनसनी फैल गई है। हालांकि युवक की पीट-पीटकर हत्या क्यों की गई, इसका कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। वहीं घटना की सूचना मिलते ही टाउन थानाध्यक्ष संजीव कुमार अपने पुलिस बल के साथ सदर अस्पताल पहुंचे और मृतक के परिजनों से मिल घटना की पूरी जानकारी ली। इसके बाद पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। जानकारी के अनुसार मृतक टाउन थाना क्षेत्र के मझौवां गांव निवासी लंगड़ सिंह का 28 वर्षीय पुत्र सह चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी राकेश सिंह है। वह वर्तमान में बड़हरा ब्लॉक में चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी के पद पर कार्यरत था। इधर मृतक के पिता लंगड़ सिंह ने बताया कि शनिवार की शाम करीब सात बजे उसका दोस्त रोशन कुमार सिंह घर पर आया और उसे बुलाकर अपने साथ गांव में ही स्थित काली मंदिर के पास ले गया था। इसके बाद करीब दो घंटे बाद हमें सूचना मिली के वह बेहोशी के हालात में काली मंदिर की सीढ़ी पर गिरा पड़ा है। सूचना पाकर परिजन तुरंत वहां पहुंचे और उसे अनान-फानन में इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल ले आए। जहां चिकित्सक ने देख उसे मृत घोषित कर दिया। इसके पश्चात परिजनों ने इसकी सूचना स्थानीय थाना को दी। सूचना पाकर स्थानीय थाना सदर अस्पताल पहुंची और शव अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम करवाया। वहीं दूसरी ओर मृतक के

पिता ने अपने बेटे राकेश सिंह का गांव में किसी भी व्यक्ति से किसी भी प्रकार की दुश्मनी एवं विवाद की बातों से साफ इनकार किया है। साथ ही उन्होंने राकेश सिंह को बांधकर उसकी पीट-पीटकर हत्या करने का आरोप लगाया है। हालांकि उसकी हत्या किसने और क्यों की। यह अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। जबकि दूसरी ओर घर से बुलाकर उसे गांव में ही स्थित काली मंदिर के पास अपने साथ ले गए उसके दोस्त रौशन कुमार सिंह ने बताया कि गांव में काली मंदिर के पास मैं,मेरा दोस्त भगेड़न और राकेश सिंह थे। उसी बीच राकेश सिंह ने गांव के हीं हुलचुल भईया नामक व्यक्ति के पास कॉल लगाकर कहा कि क्या आप मुझे नहीं पहचानते और नही जानते हैं। कॉल करने के कुछ देर बाद ही अचानक हुलचुल भईया वहां आ गए और उसके दोस्त राकेश सिंह की थप्पड़, लात-घुसो से जमकर पिटाई की। इसके बाद वह उसे घसीट कर वहां से कुछ दूर ले जाकर उसकी डंडों से भी जमकर पिटाई की। जिससे वह बेहोश हो गया। इसके बाद वह उसे काली मंदिर के सीढ़ी पर लाकर बेहोशी हालत में छोड़ दिया। उसके बाद वह मुझे भी मारने लगे। तभी वहां मौजूद लोगों ने मुझे उनसे छुड़ाया। जिसके बाद में वहां से भाग गया। तभी कुछ देर बाद एक व्यक्ति द्वारा फोन कर उसे सूचना दी गई के तुम्हारे दोस्त को होश नहीं आ रहा है। वहीं रोशन कुमार सिंह ने गांव के ही हुलचुल भईया नामक व्यक्ति पर अपने दोस्त राकेश सिंह की पीट-पीटकर हत्या करने एवं खुद को मार कर जख्मी करने का आरोप लगाया है।\ साथ ही उसने अपने दोस्त राकेश सिंह एवं खुद की हुलचुल भईया नामक व्यक्ति से किसी भी प्रकार की दुश्मनी एवं विवाद की बातों से साफ इनकार किया है। बहरहाल पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है। बताया जाता है कि मृतक अपने तीन भाई व चार बहन में तीसरे स्थान पर था। उसके परिवार में मां मनोरमा देवी,चार बहन प्रियंका देवी,बंटी सिंह,मोनी,पारो व दो भाई राजीव एवं रोहित है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। घटी इस घटना के बाद मृतक की मां मनोरमा देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

## सांप के डसने से बच्चे की मौत

**आरा।** मुफस्सिल थाना क्षेत्र के सैदपुर गांव में शनिवार को विषैले सांप के डसने से एक बालक की मौत हो गई। इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाने के दौरान उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। झाड़-फूंक के चक्कर में ही बच्चे की जान चली गई। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा-तफरी का आलम रहा। मृत बालक बक्सर जिला के बगेन गोला थाना क्षेत्र के पोखराहा गांव निवासी सोनू कुमार का 10 वर्षीय पुत्र आशीष कुमार है। इधर,मृत बालक के मामा हरमेन्द्र कुमार ने बताया कि उसके पिता सोनू कुमार दिल्ली में रहकर प्राइवेट कंपनी में काम करते हैं और छह महीने से वह अपने दो बहन तथा मां के साथ अपने ननिहाल में ही रह रहा है। जब वह अपनी मां के साथ कमरे में सोया था। उसी बीच विषैले सांप ने उसे डस लिया।जिससे उसकी हालत काफी गंभीर हो गई। इसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए अस्पताल ना ले जाकर पहले उसे झाड़-फूंक कराने को लेकर उत्तरप्रदेश के अमवा के सती माई ले गए। जहां मौजूद ओझा द्वारा उसका घंटो उसका झाड़-फूंक किया गया। लेकिन झाड़-फूंक के बाद भी जब उसकी हालत में कोई सुधार ना हुआ तो उक्त ओझा द्वारा उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाने को कहा गया। जिसके बाद परिजन उसे आनन-फानन में इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल ले आए। जहां चिकित्सक ने देख उसे मृत घोषित कर दिया। इसके पश्चात परिजन अपनी स्वेच्छा से शव का बिना पोस्टमार्टम कराए ही वापस गांव ले गए।

# प्रशासन और पंडा समाज के बीच विवाद

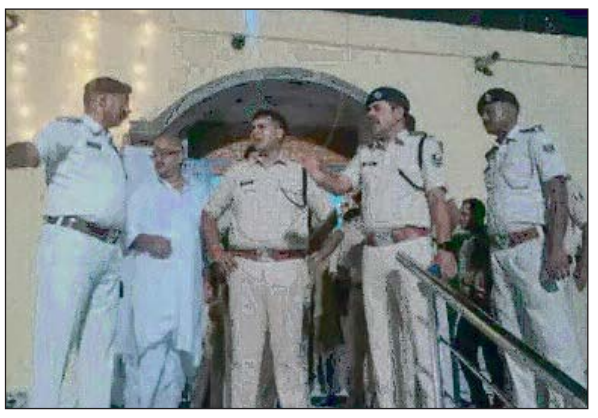

**गया ।** विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला चल रहा है, ऐसे में विष्णुपद मंदिर क्षेत्र में पंडा समाज और पुलिस के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ा की हंगामा होने लगा।

पंडा समाज ने मोर्चा खोल दिया और इसके बाद विष्णुपद मंदिर अंतर्गत की सभी दुकानों को बंद कर दिया गया। इतना हीं नहीं पंडा समाज ने पुलिस प्रशासन से नाराजगी को जाहिर करने के लिए कुछ देर के लिए विष्णुपद मुख्य द्वार का पट बंद कर दिया। मंदिर कपाट बंद कर दिए जाने से तीर्थ यात्रियों पिंडदानियों को भगवान विष्णु के श्री चरण पादुका के दर्शन करने के लिए काफी देर तक इंतजार करना पड़ गया। पितृपक्ष मेले के दौरान इस तरह के हंगामे की सूचना मिलने के फौरन बाद हीं जिलाधिकारी डॉ त्याग राजन एसएम एवं एसएसपी आशीष भारती मौके पर पहुंच गए। इसके बाद जिला प्रशासन और गया पंडा समाज के लोगों के साथ बैठकर शांति वार्ता की है मामले को नियंत्रण में लाया गया।

जानकारी के अनुसार विष्णुपद मंदिर परिसर में इस तरह की हंगामा के बाद पंडा समाज के लोग पुलिस पर जबरन अमानवीय व्यवहार करने का करने का आरोप लगा रहे थे। इधर गया जिला प्रशासन के द्वारा बताया गया। विष्णुपद मंदिर एरिया में बैरिकेडिंग को लेकर पंडा समाज और दुकानदारों में काफी नाराजगी थी। जिसे दूर किया गया है।वहीं ट्रैफिक को लेकर समय सीमा तय की गई है। जिसमें अब 5:00 बजे संध्या के बाद ही बाइक की एंट्री चांद चौरा से विष्णुपद की ओर के लिए दी जाएगी।वहीं राशन पानी ढोने वाले वाहनों की एंट्री रात 11:00 के बाद ही होगी। इसके अलावा व्यापार पंडा की ओर से अन्य समस्याओं को बताया जा रहा है। उसे पर भी विचार किया जाएगा।

इधर गया पाल पंडा समाज का कहना है कि पुलिस प्रशासन के लोग स्थानीय दुकानदारों को जहां तंग कर रहे हैं। वहीं ट्रैफिक व्यवस्था भी सही नहीं है। ट्रैफिक के नाम पर दुकानदारों पंडा समाज के लोगों और तीर्थ यात्रियों को भी पीटा जा रहा है। गया पाल पंडा मोहन बिहारी ने बताया कि मंदिर परिसर में भी पंडा समाज को तंग किया जा रहा है। इसे लेकर गया पाल पंडा समाज रोष में है। इसी क्रम में शनिवार को एक बार फिर से पुलिस प्रशासन के लोग गया पाल पंडा समाज के लोगों से उलझ गए।इसे लेकर गया पाल पंडा समाज में काफी नाराजगी थी फिर दुकानों को बंद कर दिया गया। वहीं कुछ देर के लिए विष्णुपद मंदिर का कपाट भी बंद कर दिया गया। क्या कहते हैं एसएसपी इस संबंध में गया के पुलिस कप्तान आशीष भारती ने शनिवार की देर लगभग 11 बजे बताया कि कुछ बातों को लेकर गया पाल पंडा समाज में विवाद था। अब उसे दूर किया जा रहा है, जो भी समस्या होगी उसे पर बात कर समाधान निकाला जाएगा।

## संक्षिप्त डायरी

### जिला पुलिस और एसएसबी द्वारा नक्सलियों के ठिकाने पर छापेमारी

**गया ।** नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में नक्सलियों के विरुद्ध अर्धसैनिक बल एवं जिला पुलिस की संयुक्त छापेमारी सर्च अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में धनगांई थाना अंतर्गत ग्राम कुंभी से करीब 4 किलोमीटर बाकरखोली पहाड़ी के जंगलों में जमीन के अंदर आईईडी विस्फोटक गड़े होने और उसके आसपास अवैध रूप से हथियार कारतूस होने की सूचना एसएसबी ए-कंपनी-32 बटालियन को मिली थी। बताया कि नक्सली किसी बड़ी विंध्वसकारी एवं हिंसात्मक घटना को अंजाम देने के फि राक में लगे हैं। इस तरह की जानकारी मिलने के बाद एसएसबी के अधिकारियों ने इसकी जानकारी गया पुलिस कप्तान को दी। सूचना मिलते हीं एसएसपी आशीष भारती के निदेर्शानुसार एसएसबी ए-कंपनी-32 वीं बटालियन एवं बम निरोधक दस्ता व गया पुलिस की संयुक्त छापामारी दल टीम का गठन किया गया। छापेमारी दल को भारी मात्रा में विस्फोटक आईईडी समेत हथियार कारतूस सहित अन्य सामान बरामद किया छापेमारी दल द्वारा धनगांई अंतर्गत ग्राम कुंभी स्थित बाकरखोली पहाड़ में सर्च करते हुए आगे बढ़ रह थी। पुलिस बल को देखकर जंगल में एक स्थान पर रहे कुछ नक्सली वहां से घने जंगल का फायदा उठाकर भाग निकलने में सफल हो गए। इस दौरान टीम के द्वारा सर्च अभियान चलाया गया। नक्सलियों द्वारा दो विस्फोटक आईईडी लगभग 22 किलो का विस्फोटक बरामद किया गया। इसके साथ दो डेटोनेटर 13 पीस बरामद किया गया। जिसे घटनास्थल पर ही विधिवत बमनिरोधक दस्ता द्वारा निष्क्रिय कर दिया गया । टीम द्वारा सर्च अभियान के दौरान पत्थर के नीचे छुपा कर रखें एक प्लास्टिक के बोरे की तलाशी ली गई। तलाशी के क्रम में बोड़े में रखें देसी थ्रीनट एक पीस, देसी कट्टा 2 पीस, 8 एम एम की जिंदा कारतूस 7 पीस बैटरी 6 पीस ब्लैक तपे एक पीस फ्यूज पावर बंडल एक पीस बरामद किया गया। एसएसपी आशीष भारती ने जानकारी देते हुए बताया बरामद हथियार, कारतूस, विस्फोटक सहित और बरामदगी के मामले में धनगांई थाने में कांड संख्या 109/23 दर्ज किया गया है। मामले में स्थानीय पुलिस और एसएसबी की टीम कार्रवाई कर रही है।

### नालंदा में चाकूबाजी के दौरान 3 घायल

**नालंदा ।** मामूली विवाद में युवक ने अपने ही चाची समेत तीन लोगों को चाकू मार जख्मी कर दिया। मामला बिन्द थाना क्षेत्र के सैदपुर गांव का है। देर शाम परिजन घायलों को ईलाज के लिए बिहार शरीफ सदर अस्पताल लेकर पहुँचे। जख्मी सैदपुर निवासी अवधेश बिन्द की (55) वर्षीया पत्नी सुनीता देवी, (20) वर्षीया पुत्री तेतरी कुमारी एवं (13) वर्षीया पुत्री पुतो कुमारी है। घटना के संबंध में परिजन ने बताया कि युवक नशे की हालत में धुत्त था, पूर्व से उन लोगों के बीच घरेलू विवाद चला आ रहा है। वह शाम में घर आया और कहासुनी करने लगा। इसके उपरांत जब सुनीता देवी मना करने लगी तो युवक ने चाकू निकालकर उनके ऊपर हमला कर दिया। बीच बचाव करने आई उनकी बेटी तेतरी कुमारी एवं पूतो कुमारी को भी चाकू मार कर जख्मी कर दिया और मौके से फरार हो गया। आनन फानन में सभी घायलों को इलाज के लिए बिन्द प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। बिन्द थाना अध्यक्ष सुधीर कुमार ने बताया कि आपसी विवाद में घर के ही युवक ने तीन लोगों को चाकू मार दिया है। घटना की सूचना मिलने के उपरांत पुलिस मौके पर पहुंची, तब तक आरोपी घर से फरार हो चुका था। घायलों को बिन्द प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है। पुलिस पूरे मामले की छानबीन में जुट गई है। आवेदन मिलने पर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

# मानसून फिर एक्टिव: पूरे बिहार में बारिश के आसार

## कैमूर, गया, औरंगाबाद, रोहतास में हेवी रेन का अलर्ट, बगहा में गंडक के कटाव ने डराया

**पटना।** बिहार में मानसून एकबार फिर एक्टिव हो रहा है। आज से 4 अक्टूबर के बीच मानसून के सक्रिय होने से अच्छी बारिश की संभावना जताई जा रही है। इस दौरान राजधानी पटना समेत राज्य के अधिकतर हिस्से में बारिश के आसार हैं। दक्षिण बिहार के अधिकतर स्थानों पर भारी से बहुत भारी बारिश हो सकती है। वहीं, मौसम विभाग में आज प्रदेश के सभी 38 जिलों में बारिश के साथ-साथ आकाशीय बिजली की भी संभावनाएं जताई है। वहीं चार जिले कैमूर, गया, औरंगाबाद और रोहतास में भारी बारिश को लेकर के अलर्ट जारी किया गया है। बगहा में गंडक के कटाव से लोगों में दहशत है। वार्ड नंबर 15 पर नदी का दबाब बढ़ गया है। ये इलाका नेशनल हाईवे से 100 मीटर की दूरी पर है। इधर सीतामढ़ी में तापमान 40 डिग्री के करीब पहुंच गया है। 39.4 डिग्री सेल्सियस के साथ सीतामढ़ी सबसे गर्म जिला रहा। बगहा में गंडक नदी तेजी से कटाव करते हुए वार्ड नंबर 15 पर दबाव बना रही है। यहां से 100 मीटर की दूरी पर नेशनल हाईवे है। जबकि 90 मीटर दूर लोगों के घर हैं। बीती रात से गंडक कटाव शुरू हुआ है, हालांकि जल स्तर में तेजी से गिरावट आई है। बताया जा रहा है कि नदी के दूसरे किनारे में सिल्ट है, जिसके कारण नदी शहर की तरफ दबाव बना रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि देर रात को कटाव शुरू हुआ था, अब तक 15 चौड़ाई और 50 फीट लंबाई में गंडक कटाव कर चुकी है। मौसम विभाग ने पटना, गया, भागलपुर, कैमूर, रोहतास, नवादा, शेखपुरा, नालंदा, भोजपुर, औरंगाबाद, अरवल, जहानाबाद, लखीसराय, जमुई, बांका, मुंगेर, बेगूसराय, खगड़िया समेत अन्य जिलों में हल्की बारिश की संभावना जताई है। वहीं, बारिश के साथ आकाशीय बिजली को लेकर भी अलर्ट है। मौसम विभाग के अनुसार फिलहाल पूर्वोत्तर और इससे सटे पूर्व मध्य बंगाल की खाड़ी में निम्न दबाव का क्षेत्र चक्रवती परिसंचरण के साथ समुद्र तल से 7.2 किलोमीटर ऊपर तक स्थित है। इसके प्रभाव से अगले 48 घंटों के दौरान चिह्नित निम्न दबाव क्षेत्र में परिवर्तित होकर उत्तर-पश्चिम की ओर उत्तरी उड़ीसा और आसपास के पश्चिम बंगाल तट की ओर बढ़ने की संभावना है। इस कारण बिहार में 01 अक्टूबर यानी आज से भारी बारिश की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार रविवार को भी पटना में बारिश की संभावना जताई गई है। मौसम वैज्ञानिकों ने पटना के एक या दो स्थानों पर वज्रपात होने की भी आशंका जताई गई है। आज पटना में 11-18 डट/ल्ह की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं। शाम को हवा के साथ बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 31 डिग्री तो न्यूनतम 27 डिग्री रहने की उम्मीद जताई गई है। शनिवार को पटना व आसपास इलाकों में दोपहर बाद हल्की वर्षा होने से मौसम सुहाना बना गया।

### पूर्णिया में कटाव से लोगों की परेशानियां बढ़ी, आशियानी में 17 घर पानी में समाए

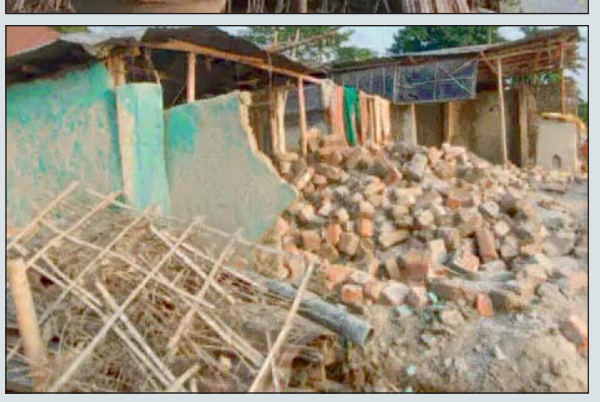

**पूर्णिया ।** अमौर में कटाव कहर बरपा रहा है। तियारपाड़ा पंचायत के आशियानी गांव में परमान नदी के कटाव से हालात बेकाबू हैं। यहां 17 से अधिक घर देखते ही देखते नदी में विलीन हो गए हैं। करीब 3 हजार की आबादी वाले आशियानी में पिछले साल 2022 में भी करीब 10 घर परमान के पानी में समा गए। हालांकि इस बार हालात पिछले साल से कहीं अधिक खराब हैं। माल मवेशी, अन्न और आंगन नदी की लहरों में समा चुके है। हालत ऐसे हैं कि मजबूरन अब उन्हें अपने हाथों से आशियाने उजाड़ने पर रहे हैं। हालात का जायजा लेने अमौर से एआईएमआईएम विधायक अख्तरूल ईमान कटाव से जूझते तियारपाड़ा पंचायत के आशियानी गांव पहुंचे। कटाव की चपेट में आए घरों का निरीक्षण किया। पीड़ित परिवारों से मिले। खाद्य सामग्री वितरित करने के साथ ही आर्थिक मदद की। साठभी कटाव में घर गंवा चुके पीड़ित परिवारों से मिलकर हर संभव मदद का आश्वासन दिया। ग्रामीण बताते हैं कि ऐसे हालात 10 दिनों के भीतर बने हैं। परमान नदी के कारण 10 मीटर से अधिक भूमि अब तक कट चुकी है। आंखों के सामने 15 आशियाने उजड़ गए। आशियानी गांव के पीड़ित परिवारों में मो वसीम, मो मुबारक, मो मुजाहिद, मो जसीम, मो कासिम, मो नौमान, मो रिजवान, मो मुस्मात दरूदा, मो अय्यूब, मो अब्दुल मतिम, मो तबरेज, मो अब्दुल मन्नान, मो तैय्यब, मो जुबैर, मो शहादत, मो मिग्नुन जैसे ग्रामीण शामिल हैं। ग्रामीणों की मानें तो उनकी माल मवेशियां, चूल्हे और नल आंगन वाली जगह परमान में समा गई। पिछले एक दशक में गांव की रौनक ही खत्म हो गई। कटाव के हालात ऐसे हैं कि आने वाले वक्त में आशियानी गांव के वजूद पर खतरा मंडरा रहा है। मगर अब तक उन्हें इसके बदले में दूसरी जगह जमीन तक उपलब्ध नहीं कराई गई। जिसके चलते अब ऐसे सभी पीड़ित परिवार सड़क किनारे या फिर किसी दूसरी जगह झुग्गी बना कर रह रहे हैं। एक साल गुजरने को है एक बार फिर से गांव में कटाव का कहर जारी है। करीब 3 हजार की आबादी वाले इस गांव में परमान नदी से जारी कटाव के बढ़ते प्रकोप के बाद एक बार फिर से इस गांव में बसे सैकड़ों घरों पर कटाव का खतरा मंडरा रहा है। लोगों का कहना है कि समय रहते कटाव निरोधी कार्य नहीं हुआ तो किसी भी वक्त ये घर परमान नदी के पानी में समा जाएंगे। वहीं आशियानी से सामने आई कटाव की इन डरावनी तस्वीरों ने ग्रामीणों की नींद उड़ा रखी है। ग्रामीण हाफिज मो मुजाहिद बताते हैं कि रात में नदी की लहर की डरवानी आवाज के आगे उनकी आंखों की नींद गायब है। गांव के कई लोग रतजग्गा को मजबूर हैं। दैनिक भास्कर से बात करते हुए एआईएमआईएम विधायक अख्तरूल ईमान ने कहा कि अमौर कटाव और सैलाब की त्रासदी से गुजर रही है। मगर न सरकार की इस ओर नजर पड़ी और न ही जिला प्रशासन का ध्यान गया। यही वजह है कि हर साल कटाव कई आशियाने उजाड़ जाता है। जैसे विभाग किसी बड़ी अनहोनी का इंतेजार कर रही हो। हैरत की बात है कि इन सब के बावजूद जलसंसाधन विभाग कुंभकर्णी निद्रा में सोया है।

# उज्जैन मामले के सबक

देश को स्तब्ध कर देने वाले उज्जैन रेप केस में हालांकि आरोपी गिरफ्तार कर लिया गया है, लेकिन यह मामला लंबे समय तक हमारे समाज के अंतःकरण को धिक्कारता रहेगा। यह सही है कि घटना का विडियो वायरल होने के बाद उज्जैन पुलिस ही नहीं, राज्य सरकार ने भी तेजी दिखाई। चूंकि विक्टिम नाबालिग बच्ची कुछ बताने की स्थिति में नहीं थी, इसलिए पुलिस का काम थोड़ा मुश्किल लग रहा था, लेकिन अलग-अलग इलाकों के सीसीटीवी फुटेज और उसकी टाइमिंग के आधार पर पुलिस ने न केवल बच्ची को लिफ्ट देने वाले ऑटोचालक को ढूंढ लिया बल्कि आरोपी तक भी पहुंच गई। आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है और पुलिस को वारदात की जगह पर भी ले गया, जहां बच्ची के कपड़े बरामद हुए। यानी माना जा सकता है कि यह केस प्राथमिक तौर पर सुलझ गया है। वैसे संबंधित आरोपियों से तफसील से पूछताछ और जांच-पड़ताल के जरिए बाकी सबूत जुटाने का काम जारी है। इसलिए अगर साजिश का कोई और भी पहलू हुआ तो उम्मीद की जानी चाहिए कि पुलिस उसकी तहों तक पहुंच जाएगी। मगर इस पूरे मामले का सबसे दुखद और शर्मनाक पक्ष है हमारे शहरी समाज की बढ़ती संवेदनहीनता। यह बात सही है कि एक अनजान बच्ची को बेहोश पाकर आश्रम के एक पुजारी ने अपना पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम स्थगित करते हुए उसकी मदद की और उसे अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था कर उसका इलाज सुनिश्चित करवाया, लेकिन इस तथ्य का क्या किया जाए कि बेहोश होने से पहले खून से लथपथ वह बच्ची अर्धनग्न अवस्था में मदद की गुहार लगाती घर-घर घूमती और जगह-जगह से दुत्कारी जाती रही। यहां बात सिर्फ उज्जैन की नहीं है। हमारे शहरी समाज का यह एक चिर-परिचित सा चेहरा बनता जा रहा है। आए दिन ऐसी घटनाएं सामने आती रहती हैं, जिसमें दिन-दहाड़े और भीड़भाड़ वाले इलाकों में महिलाओं, बुजुर्गों के साथ अपराध होता है और कोई मदद के लिए सामने नहीं आता। इसके पीछे यह तर्क दिया जाता है कि लोग अगर आगे नहीं आते तो इसका कारण है उन समाजविरोधी तत्वों के हमले का शिकार होने का डर। मगर उज्जैन की घटना ने साबित किया कि यह स्पष्टीकरण पूरी तरह सच नहीं है। सड़क हादसों के मामलों में भी कहा जाता था कि पुलिस-अदालत के चक्करों का डर लोगों की मदद करने की भावना पर भारी पड़ता है। लेकिन कानून में जरूरी सुधार और अस्पताल पहुंचाने वालों के लिए संरक्षण की व्यवस्था किए जाने के बाद भी इस मोर्चे पर कोई प्रगति देखने में नहीं आई है। जाहिर है, मामला सिर्फ डर का नहीं। हमारे शहरों और महानगरों का जीवन ही कुछ ऐसा होता जा रहा है, जिसमें दूसरों के लिए सोचने, उनकी परवाह करने की प्रवृत्ति और गुंजाइश लगातार कम होती दिख रही है। इस स्थिति को बदलने की पहल समाज की ही ओर से हो सकती है। उसमें और देर करना उचित नहीं होगा।

# दहशतगर्दी की आग

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में एक बार फिर बड़ा बम विस्फोट हुआ। जुमे की नमाज और ईद-ए-मिलाद उन नबी के मौके पर जब लोग इकट्ठा थे, दो मस्जिदों के बाहर जबरदस्त धमाके हुए, जिसमें कम से कम छप्पन लोगों के मारे जाने और करीब एक सौ तीस के गंभीर रूप से घायल होने की पुष्टि हुई है। आजादी के बाद से ही बलूचिस्तान में चरमपंथी गतिविधियां बढ़ती रही हैं। मगर पाकिस्तान सरकार उस पर काबू पाने के लिए राजनीतिक रास्ता अख्तियार करने के बजाय बंदूक का सहारा लेती रही है। इसका नतीजा यह हुआ है कि उस इलाके में चरमपंथी संगठन अब सेना को चुनौती देने की स्थिति में पहुंच गए हैं। 2005 के बाद जब पाकिस्तानी सेना ने बड़े पैमाने पर बलूचों का सफाया करना शुरू किया, तो चरमपंथ और ताकतवर होता गया। उसके बाद से उस इलाके में कई बड़े बम धमाके हुए हैं, जिनमें बड़े पैमाने पर लोग मारे जा चुके हैं। पाकिस्तान की सुरक्षा व्यवस्था अब इस पर काबू पाने में पूरी तरह विफल नजर आती है। उल्टा कुछ मौकों पर पाकिस्तानी हुक्मरान पलट कर बलूचिस्तान में अशांति का जिम्मेदार भारत को ठहराने की कोशिश करते देखे गए। दरअसल, बलूच लोगों की शुरू से शिकायत रही है कि भूभाग के हिसाब से उन्हें न तो राजनीतिक हिस्सेदारी मिली है और न आर्थिक। बलूचिस्तान पाकिस्तान का करीब चालीस फीसद हिस्सा है, मगर इतना गरीब और पिछड़ा हुआ है कि बच्चों के लिए माकूल मदरसे तक नहीं हैं। बलूच लोग पाकिस्तान से अलग अपना स्वायत्त शासन चाहते हैं। मगर पाकिस्तान की हुकूमत उन्हें बंदूक के बल पर खामोश करने की कोशिश करती रही है। विचित्र है कि पाकिस्तान अपने यहां के एक बड़े हिस्से में व्याप्त अलगाववाद को तो संभाल नहीं पाता, मगर भारत के कश्मीर में अलगाववाद की आग जलाए रखने की हर कोशिश करता है। वह खुद जिस आग में जल रहा है, वही आग भारत में लगाए रखना चाहता है। इसके लिए उसकी सेना और खुफिया एजंसी बेपनाह पैसा खर्च करती हैं। अभी कुछ दिनों पहले वहां के विदेशमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र के मंच पर फिर से कश्मीर की स्वायत्तता का राग अलापा। इसके पहले अनेक मौकों पर उसके प्रधानमंत्री और दूसरे आला नेता अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर का मुद्दा उठाते रहे हैं।

# गांधी विश्व सभ्यता के विरल नायक

ANALYSIS

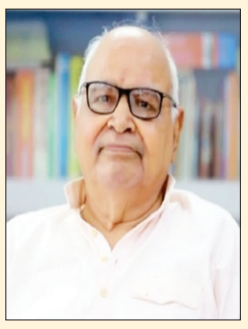

हृदयनारायण दीक्षित

**गांधी जी का सर्वोत्तम जीवन के सभी आयामों में प्रकट होता है। कदाचित इसका मूलकारण विश्व मानवता के प्रति उनका प्रेम है। संगीत भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रतिष्ठित अनुशासन है। गांधी जी ने लिखा, 'हम पर संगीत का बहुत असर होता है। वेद मंत्रों की रचना संगीत के आधार पर हुई जान पड़ती है। मधुर संगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है। अगर संगीत की शुद्ध शिक्षा मिले तो नाटक के गीत गाने में और बेसुरा राग अलापने में उनका (बच्चों) समय नष्ट न हो।ह्व आश्चर्यजनक है कि एक सत्याग्रही संयमी महात्मा संगीत के बारीक तत्वों और उसके आत्यंतिक प्रभावों से भी सुपरिचित था। गांधी जी का सौन्दर्य बोध अप्रतिम था। अनुभूतियां गहरी थीं। उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी के वर्णन में लिखा, 'नदी समुद्र की तरह विशाल जान पड़ती है। नदी की भव्य शान्ति मनोहर प्रतीत होती है। बादलों में छिपा हुआ चन्द्रमा पानी पर अपनी हल्की रोशनी बिखेरे है। फिर भी मेरे मन को चैन कहां?' यह राजनेता या पत्रकार की भाषा नहीं है।**

देश गांधी जयंती के उत्सवों में है। गांधी विश्व सभ्यता के विरल नायक थे। बहुआयामी व्यक्ति थे। वैसे भारत का प्रत्येक व्यक्ति बहुआयामी है। यूरोप में विशेषज्ञों की भरमार है लेकिन जीवन के सभी क्षेत्रों का ज्ञान रखने वाले जनसामान्य भारत में होते हैं। भारत का प्रत्येक व्यक्ति थोड़ा थोड़ा दार्शनिक है। कामचलाऊ नास्तिक है। यथार्थवादी आस्तिक है। वह धार्मिक है, वह तार्किक है, वह साहित्यिक है, वह घरेलू वैद्य या डाक्टर है। वह संगीत पारखी/प्रेमी है। वह परिवर्तनकामी है। लेकिन उसके व्यक्तित्व का सर्वोत्तम किसी एक या दो आयामों में ही प्रकट होता है। मनुष्य की सर्वोत्तम उर्जा प्रेम या युद्ध में चरम पर पहुंचती है। गांधी जी का सर्वोत्तम जीवन के सभी आयामों में प्रकट होता है। कदाचित इसका मूलकारण विश्व मानवता के प्रति उनका प्रेम है। संगीत भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रतिष्ठित अनुशासन है। गांधी जी ने लिखा, 'हम पर संगीत का बहुत असर होता है। वेद मंत्रों की रचना संगीत के आधार पर हुई जान पड़ती है। मधुर संगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है। अगर संगीत की शुद्ध शिक्षा मिले तो नाटक के गीत गाने में और बेसुरा राग अलापने में उनका (बच्चों) समय नष्ट न हो।ह्व आश्चर्यजनक है कि एक सत्याग्रही संयमी महात्मा संगीत के बारीक तत्वों और उसके आत्यंतिक प्रभावों से भी सुपरिचित था। गांधी जी का सौन्दर्य बोध अप्रतिम था। अनुभूतियां गहरी थीं। उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी के वर्णन में लिखा, 'नदी समुद्र की तरह विशाल जान पड़ती है। नदी की भव्य शान्ति मनोहर प्रतीत होती है। बादलों में छिपा हुआ चन्द्रमा पानी पर अपनी हल्की रोशनी बिखेरे है। फिर भी मेरे मन को चैन कहां?' यह राजनेता या पत्रकार की भाषा नहीं है। यहां गहन सौन्दर्यबोध की भावाभिव्यक्ति है। 1920 में वे काशी में थे, लिखा है 'आकाश में जैसे जैसे प्रकाश बढ़ता जाता, वैसे वैसे गंगा के पानी पर स्वर्णिम प्रकाश बिखरता जाता है और अंत में जब सूर्य पूर्णतया दृष्टिगोचर होता, उस समय ऐसा प्रतीत होता मानो पानी में एक वृहदाकार स्वर्ण स्तंभ प्रतिष्ठापित कर दिया गया है। उस भव्य दृश्य को देखने के बाद सूर्य की उपासना, नदियों की महिमा और गायत्री मंत्र के अर्थ को मैं अच्छी तरह समझ सका।ह्व इन शब्दों में प्राणवान काव्यरस का प्रवाह है। वेद नदियों की स्तुतियों से भरे पूरे हैं। यही अनुभूति गांधी जी को भी हुई थी। इसका मूल उनका सौन्दर्य बोध था। सौन्दर्यबोध काव्य सृजन का मूल है लेकिन गांधी जी के सौन्दर्यबोध में सुन्दरतम् के साथ सत्य और शिवत्म भी हैं। मनुष्य जन्मजात सौन्दर्यप्रेमी है। प्रकृति विविध रूपों से भरी पूरी है। यहां रूप रूप प्रतिरूप सौन्दर्य की छटा है। सौन्दर्यबोध मनुष्य को सुकुमार, सुकोमल और निरहंकारी बनाता है। जिसमें जितना गहन सौन्दर्यबोध वह उतना ही सुकोमल भावनिष्ठ। वैदिक ऋषि कवि भी सौन्दर्यबोध से लबालब परिपूर्ण थे। दुनिया की सभी सभ्यताओं का विकास सौन्दर्यबोध से हुआ। चार्ल्स डारविन ने लिखा है कि, 'प्रकृति के रूपों को देखकर भावोत्तेजन होते हैं।' भावोत्तेजन के संकेत मस्तिष्क में जाते हैं। मनुष्य की बुद्धि इन भावोत्तेजनों का विवेचन करती है। विवेचन से आया निष्कर्ष बोध सम्बंधित व्यक्ति का 'सौन्दर्यबोधह्व होता है। आधुनिक काल में रवीन्द्रनाथ टैगोर का सौन्दर्यबोध याद किये जाने योग्य है। गांधी जी का सौन्दर्यबोध वैदिक ऋषियों की याद दिलाता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर का सौन्दर्यबोध परिधिगत है। बेशक उसमें सत्यम्, शिवम् ओर सुन्दरतम् की त्रयी है लेकिन उसमें रूप की सत्ता है। गांधी जी का सौन्दर्यबोध रूप से परे जाता है। यजुर्वेद के 40वें अध्याय (ईशावास्योपनिषद्) में सत्य का मुख हिरण्यपात्र से ढका हुआ बताया गया है - हिरण्यमय पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। प्रार्थना है कि यह हिरण्यपात्र हटाओ, ऋषि सत्य का दर्शनाभिलाषी है। यहां हिरण्य सौन्दर्य से ढका हुआ सत्य देखने का आग्रह है। गांधी जी का सौन्दर्य बोध भी ऐसा ही है बिल्कुल सीधा, सरल और निश्छल। रवीन्द्र नाथ का सौन्दर्यबोध विशिष्ट है, गांधी जी का सौन्दर्य बोध ऋक्व है, सरल और सामान्य है। 1980 के दशक में एक अर्थशास्त्री ई0एफ0 सूमाखर ने अर्थशास्त्र की अपनी किताब का नाम रखा था 'स्माल इज ब्यूटीफुलह्व। यहां लघुता ही सुन्दरता है कि छोटे उद्योग, छोटी कारीगरी, घरेलू उत्पादन सुन्दर है। सुन्दरता में आकर्षण होते हैं। क्रान्तियां सुन्दर नहीं होती। उनके परिणाम सुन्दरता ला सकते हैं। जय प्रकाश नारायण ने देश की स्वतंत्रता के बाद समग्र क्रान्ति की बात की थी। उनके एक लेख आह्वान का शीर्षक था 'दि रिवूल्यूशन ब्यूटीफुलह्व। प्रख्यात गांधीवादी चिन्तक धर्मपाल जी ने अंग्रेजों के पहले के भारत को 'ब्यूटीफुल ट्रीह्व की संज्ञा दी थी। रवीन्द्रनाथ और गांधी जी समकालीन थे। एक विश्वकवि और दूसरा विश्वमानव। विश्व कवि रवीन्द्र के सौन्दर्य बोध में मादकता थी। विश्वमानव गांधी के सौन्दर्य बोध में सम्मोहन था। विश्व कवि के सौन्दर्य बोध में भाव-दृश्य थे। यहां हृदय और रूप का वितान था। इसलिए उनका सौन्दर्य बोध चाक्षुष था, इन्द्रियबोध की परिधि में था। गांधी जी का सौन्दर्य बोध चाक्षुष ही नहीं था, उसमें मानवीय अनुभूति का अमृत था, संगधा पृथ्वी की सुगंध थी। गांधी जी का सत्याग्रह इसी मानवीय सौन्दर्यबोध का रूपांतरण था। संस्कृत के महाकवि माघ ने सुन्दरता की परिभाषा दी थी 'क्षणे क्षणे यन्नवता मुपैति, तदैव रूपं रमणीयतायाः - सुन्दर - रमणीय वह है जो प्रतिक्षण नया हो, आकर्षित करता रहे।ह्व सौन्दर्य की ऐसी परिभाषा फिर दूसरी नहीं हुई। माघ की यह परिभाषा वैदिक ऋषियों की 'सत्यह्व की परिभाषा से मिलती जुलती है - जो त्रिकाल अबाधित है, वही सत्य है। सत्य पर समय की सत्ता का प्रभाव नहीं पड़ता। वह तीनों कालों में सत्य रहता है। इसी तरह जो बोध प्रतिक्षण नया और आकर्षक हो वही सौन्दर्य है। गांधी जी के सौन्दर्यबोध में प्रकृति की सनातन सरलता है। प्रकृति का सौन्दर्य स्वयं बोलता है। सौन्दर्य प्रेमी आंखों से भी सुन लेते हैं। कलांए प्रकृति की अनुकृति होती है। कला में व्यक्त सौन्दर्य को भी स्वयं बोलना चाहिए। गांधी जी सौन्दर्यबोध से युक्त थे। उन्होंने कहा, 'चित्र ऐसे होने चाहिए जो मुझसे बोलें मेरे आगे नाचें, ऐसे चित्र दुनिया में बहुत थोड़े हैं।ह्व गांधी जी की दृष्टि में आत्मबल से युक्त स्वस्थ शरीर ही सुन्दर होता है और जो स्वस्थ व सुन्दर होता है वह हथियारबंद यूरोपीय का सामना भी कर सकता है। उन्होंने लिखा, 'भारत का ग्वाला भीमसेनी शरीर और बहुत अच्छे गठन वाला होता है। अपनी मोटी मजबूत लाठी से वह किसी भी तलवार वाले साधारण यूरोपीय का सामना कर सकता है।

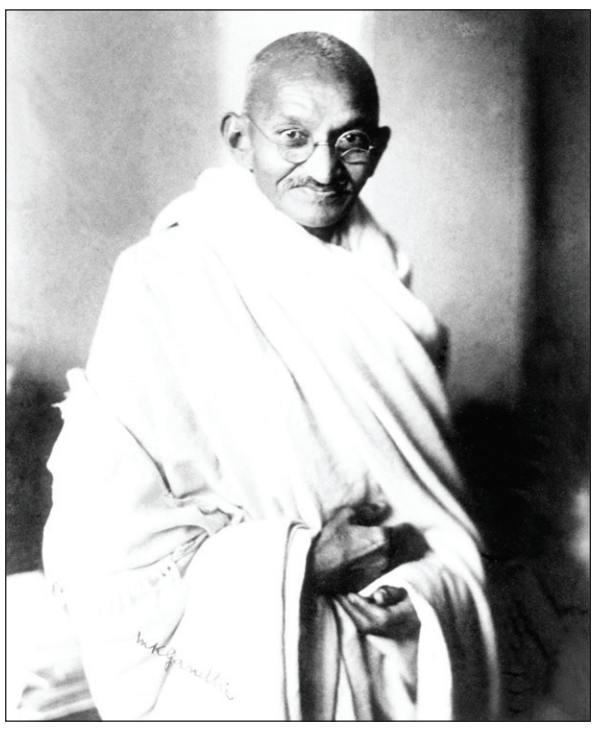

**लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।**

# पर्यावरण संरक्षण-संवर्द्धन का आनंद है ग्वालियर का 'अल्मोड़ा'

उत्तराखंड के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल अल्मोड़ा के बारे में आप सबने सुना होगा। अल्मोड़ा अपने सुरम्य वातावरण के साथ ही साहसिक गतिविधियों के लिए पर्यटकों को आमंत्रित करता है। अल्मोड़ा अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा और वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है। यह तो हुई हिमालय की गोद में बसे विश्व प्रसिद्ध अल्मोड़ा की बात। यदि मैं आपसे कहूं कि ग्वालियर में भी एक अल्मोड़ा है, तो आप हैरान रह जाएंगे। जी हां, ग्वालियर में भी सुरम्य वातावरण और ऊंची-नीची पहाड़ियों की गोद में ह्यअल्मोड़ाह्व मुस्कुरा रहा है। आमखो से सटी विशेष सशस्त्र बल (एसएएफ) की पहाड़ियों पर पर्यावरण प्रेमियों ने निरंतर पौधरोपण करके सूखी पहाड़ियों का नाना प्रकार के वृक्षों से शृंगार कर दिया है। यहां कुछ हिस्सों में तो सघन वन विकसित हो गए हैं। ऐसे ही एक हिस्से को पर्यावरण प्रेमी डॉ. नरेश त्यागी ने विकसित किया और उसे नाम दिया है-अल्मोड़ा। यदि आप ट्रैकिंग के शौकीन हैं और प्रकृति की गोद में आनंद आता है, तब यह स्थान अवश्य ही आपके हृदय को प्रसन्नता से भर देगा। अल्मोड़ा के सृजक डॉ. त्यागी को मालूम है कि मुझे जंगल में घुमक्कड़ी खूब भाती है। इसलिए लंबे समय से उनका आग्रह भी था कि कभी अल्मोड़ा के लिए समय निकालूं। अपने ग्वालियर प्रवास के दौरान 28 अगस्त को सामाजिक कार्यकर्ता निरूपम नेवासकर, कमल किशोर शर्मा और ललित जी के साथ हम त्यागी जी के घर पारिजात निकेतन पर धमक पड़े। उनका घर अल्मोड़ा से ही सटा है और उस क्षेत्र में पारिजात के कई वृक्ष हैं। घर के नामकरण की कहानी आपको ध्यान आ गई होगी। हमने यहीं से अल्मोड़ा में प्रवेश किया। पहले चरण में हमने आसपास ही थोड़ा भ्रमण किया। पूरे क्षेत्र की मोटा-माटी जानकारी ली। डॉ. त्यागी जब यहां रहने आए थे, तब बड़े वृक्ष गिनती के थे। कॉलोनी के सफाई पसंद लोग भी अपने घरों का कचरा यहां फेंका करते थे। धीरे-धीरे त्यागी जी ने पड़ोसियों के सहयोग से यहां का वातावरण बदलना शुरू किया। वे निजी विद्यालय में हिन्दी के व्याख्याता हैं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समर्पित कार्यकर्ता भी हैं। विद्यालय से आने के बाद थोड़ा समय उन्होंने पौधों को देना शुरू किया। अवकाश के दिन सुबह ही अल्मोड़ा को अपने पसीने से सींचने पहुंच जाते। प्रतिवर्ष दक्खिनी बबूल, कटीला, मकोई आदि के झाड़ उगते थे लेकिन बकरी चरानेवाले और लकड़ी के लिए वृक्षों को नुकसान पहुंचानेवाले, इन झाड़ों को भी बढ़ने नहीं देते थे। जब उन्हें पेड़-पौधों को नुकसान पहुँचाने से रोकने का प्रयत्न किया जाता, तब वे विरोध में खड़े हो जाते। डॉ. त्यागी ने स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं समाजसेवियों का साथ लेकर इस चुनौती का समाधान किया। इस कार्य में समाजसेवी रमाकांत महते, सुरेन्द्र यादव, नवनीत शर्मा, कर्नल साहब डॉ. आरएस भदौरिया, बीएम बोहरे, महिपाल सिंह भदौरिया, डॉ. नीरज शर्मा, राजपाल सिंह, शिवरतन सिंह चौहान, केपी सिंह भदौरिया, डॉ. दीपक यादव, हरिशंकर त्यागी, दिनेश शर्मा और पुलिस प्रशासन का उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ। यहां यह भी उल्लेख करना आवश्यक होगा कि पौधों के लालन-पालन में त्यागी जी की धर्मपत्नी कांती त्यागी और पुत्र हिमांशु का सहयोग भी रहा है। मुखिया की अनुपस्थिति में अकसर परिजन ही रोपे गए पौधों की देखभाल करते। उन्हें पानी देते। उनकी बागड़ को व्यवस्थित करते। सबके प्रयासों से कुछ ही वर्षों में यहां नीम, कचनार, कनेर, आम, जामुन, कदम, पीपल, पाकर, बाँस, बरगद, खैर, आँवला, मीठा नीम, कटहल, नींबू सहित कई प्रकार के वृक्ष लहलहाने लगे। कभी बबूल के पेड़ों को देख-देखकर उदास बैठा अल्मोड़ा आज भांति-भांति के वृक्षों से सुशोभित होकर उल्लासित हो उठा है। कभी मंद तो कभी तीव्र हवा के प्रवाह से बांस, पीपल, जामुन की पत्तियां आपस में टकराकर मधुर संगीत की सुर-लहरियां कानों तक पहुंचा रही थीं। जब हम अरण्य के संगीत का आनंद ले रहे थे तभी हमारे आनंद में और अधिक वृद्धि करनेवाला स्वर पारिजात निकेतन से सुनाई दिया-चाय तैयार हो गई है, ले जाइए। आज प्रकृति के सान्निध्य में चाय पे चर्चा का कार्यक्रम था। चाय पर चर्चा के दौरान ही डॉ. नरेश त्यागी और कमल किशोर शर्मा जी ने बताया कि अल्मोड़ा की तरह ही, इससे सटी दूसरी पहाड़ी पर बैंक ऑफ महाराष्ट्र से सेवानिवृत्त दिनेश मिश्रा और उनकी धर्मपत्नी ने आनंद वन विकसित किया है। अपने बेटे के असमय निधन से दुखी मिश्रा दंपति ने पौधों को अपना पुत्र मानकर, उनके पालन-पोषण को ही अपने जीवन का व्रत बना लिया। हिन्दू धर्म में वृक्षों के महत्व को प्रतिपादित करते हुए एक वृक्ष की तुलना दस पुत्रों से की गई है- दशकूप समावापीः दशवापी समोह्रदः। दशह्रद समःपुत्रो दशपत्र समोद्रुमः।। एसएएफ के अधिकारियों एवं प्रातः भ्रमण के लिए आनेवाले आम लोगों के सहयोग से मिश्रा जी ने सूखी पहाड़ी को आनंद वन से हर्षित कर दिया। पत्रकार शुभम चौधरी ने भी अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि कैसे पर्यावरण मित्रों ने लाल मिट्टी की सूखी पहाड़ी पर 12 हजार 885 पौधे रोपकर उसका रूप-रंग ही बदल दिया है। दिनेश मिश्रा के साथ इस काम में इंद्रदेव सिंह, रूप सिंह राठौर, अनिल कपूर, देवेन्द्र सिंह सहित अनेक पर्यावरण प्रेमियों का सक्रिय सहयोग रहा है। वन विकसित करना सरल कार्य नहीं है कि केवल पौधे रोपने भर से काम पूरा हो जाए। पौधों का पालन-पोषण भी करना होता है। उन्हें विकसित होने के लिए उचित वातावरण, आवश्यकतानुसार जल और खाद भी चाहिए होती है। पहाड़ी पर पानी की उपलब्धता नहीं थी, इसलिए सबसे बड़ी चुनौती पौधों को पानी देने की ही थी। इस समस्या का समाधान पर्यावरण प्रेमियों ने रचनात्मक ढंग से किया है। चाय खत्म करने के बाद हम अल्मोड़ा के दर्शन के लिए निकले। इस जंगल की खूबसूरती बढ़ाने एवं पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यहां बारिश के पानी को रोकने के लिए दो छोटे स्टॉप डेम भी हैं।

## Social Media Corner

सच के हक में...

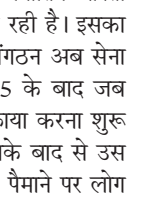

तमिलनाडु के नीलगिरी जिले में एक दुखद बस दुर्घटना में लोगों की मृत्यु अत्यंत दुखद है। मैं शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।

**(राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के ट्विटर अकाउंट से)**

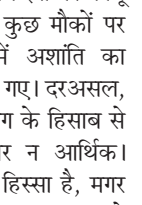

स्वच्छता में ही ईश्वर का वास होता है। मोदी जी ने समाज की अनेक समस्याओं को जनआंदोलन बनाया है, जिसमें स्वच्छता सर्वप्रथम है। 'स्वच्छ भारत अभियान' को जनभागीदारी की शक्ति से सींचकर मोदी जी ने गांधी जी के स्वच्छता ही सेवा के मंत्र को चरितार्थ किया है। उनकी प्रेरणा से हर भारतीय स्वच्छता को जीवनचर्या का अभिन्न हिस्सा बना कर देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। आज मोदी जी के आह्वान पर अहमदाबाद में स्वच्छता के लिए श्रमदान किया। आइये, हम सभी मिलकर एक स्वच्छ और स्वर्णिम भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

**(गृह मंत्री अमित शाह के ट्विटर अकाउंट से)**

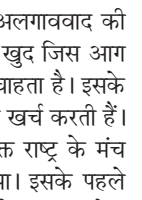

मेनहर्ट नियुक्ति घोटाला का सच जानने के लिए मेरी पुस्तक ह्वलम्हों की खताह्व और टॉफी-टी शर्ट घोटाला का सच जानने के लिए मेरी पुस्तक तिजोरी की चोरी पढ़िए। इनमें जो लिखा है वह दावे के साथ शत प्रतिशत सच है। किसी ने इन पुस्तकों के तथ्यों का खंडन नहीं किया है, गलत नहीं ठहराया है।

**(विधायक सरयू राय के ट्विटर अकाउंट से)**

# परदे की पहली लोकप्रिय सीता

आज की पीढ़ी सीता के रूप में रामानंद सागर द्वारा निर्मित और निर्देशित रामायण धारावाहिक की सीता यानी दीपिका चिखलिया की छवि को याद करती है। जबकि चालीस के दशक में सीता का मतलब शोभना समर्थ हुआ करता था। शोभना समर्थ यानी नूतन और तनूजा की मां। वो चालीस के दशक की एक लोकप्रिय नायिका थीं। राम (प्रेम अदीब) के साथ उनकी जोड़ी कुछ ऐसी हिट हुई थी कि घर-घर में राम-सीता के फोटो के रूप में इन दोनों के फोटो लगाए जाते थे और बकायदा पूजा की जाती थी। शोभना समर्थ का मूल नाम शोभना शिलोत्री था और उनका जन्म 17 नवंबर 1916 को बंबई (अब मुंबई) के अमीर बैंकर परिवार में हुआ था। वह अपने परिवार में इकलौती थीं और छोटी उम्र से ही मराठी रंगमंच से जुड़ गईं थीं। पिता की मृत्यु के बाद उनके मामा जयंत यानी नलिन जयवंत के पिता ने शोभना को सहारा दिया। कुमार सेन समर्थ जो कि एक सिनेमाटोग्राफर थे के साथ शादी के बाद वे शोभना समर्थ कहलाईं। विवाह के बाद ही उनके फिल्मी करियर की शुरूआत हुई। उनकी पहली फिल्म थी बिलासी ईश्वर उर्फ निगाह ए नफरत (1935)। इसके बाद कोल्हापुर सिनेटोन के बैनर के साथ उन्होंने कुछ फिल्में की जिनमें उनके नायक मोतीलाल थे। दो दीवाने (1936) फिल्म के बाद उनकी बड़ी बेटी नूतन का जन्म हुआ। इस कारण उन्होंने कुछ समय फिल्मों से रिश्ता तोड़ लिया। वापसी के बाद कई सफल फिल्मों में काम किया। उन्हें पहली बार लोकप्रियता प्रकाश पिक्चर्स की फिल्म भरत मिलाप (1942) से मिली। विजय भट्ट द्वारा निर्देशित यह फिल्म रामायण के भरत मिलाप कांड पर केंद्रित थी। उनकी अगली फिल्म रामराज्य भी बेहद सफल रही और उनकी सीता की छवि घर-घर में बेहद लोकप्रिय हो गई। रामराज्य अभी भी सबसे अधिक सफल पौराणिक फिल्म मानी जाती है। इसके बाद तो उन्होंने प्रकाश पिक्चर्स की रामबाण, राम विवाह, रामायण आदि में प्रेम अदीब के साथ सीता का अभिनय किया और अपार लोकप्रियता पाई । शोभना समर्थ ने अपनी सीता वाली छवि को तोड़ने की कोशिश में पृथ्वीराज के साथ फिल्म नल दमयंती की और किशोर साहू के साथ वीर कुणाल । वीर कुणाल में हीरोइन होते हुए भी उनका चरित्र ग्रे शेड्स लिए हुए था। इस चरित्र में उनके अभिनय की तारीफ तो बहुत हुई , लेकिन यह फिल्म बहुत ज्यादा लोकप्रिय नहीं हुई। धार्मिक और पौराणिक फिल्मों का निर्माण 1950 में कम होने लगा तो शोभना समर्थ ने अपनी दोनों बेटियों नूतन और तनूजा का करियर बनाने पर ध्यान देना शुरू किया। नूतन को फिल्म हमारी बेटी से लांच किया और तनुजा के लिए फिल्म छबीली बनाई। मोतीलाल के साथ उनका प्रेम का रिश्ता जीवन भर बना रहा और फिल्मी पत्र पत्रिकाओं में इसे लगातार सुर्खियां मिलती रहीं। नौ फरवरी 2000 को शोभना समर्थ हमारे बीच नहीं रहीं। वीर कुणाल फिल्म में शोभना समर्थ ने सम्राट अशोक की पत्नी तिष्यरक्षिता का रोल निभाया था जो अपने सौतेले पुत्र कुणाल से प्रेम करने लगती है। उसकी आंखों की सुंदरता पर आशक्त वह उसे पाना चाहती है और अस्वीकार होने पर वह कुणाल को बंदी बनाकर उसकी आंखें निकलवा देती है। पहले शोभना समर्थ अपनी सीता वाली छवि के चलते यह फिल्म करने से मना कर रही थीं लेकिन किशोर साहू द्वारा यह समझाने पर कि उन्हें पहली बार अभिनय करने का सार्थक मौका मिलेगा वे तैयार हो गईं । किशोर साहू ने उन्हें पारिश्रमिक के रूप में उस समय की लोकप्रिय और सबसे ज्यादा पैसे लेने वाली अभिनेत्री शांता आप्टे के मुकाबले 10,000 रुपये ज्यादा दिए थे। सम्राट अशोक की भूमिका के लिए उन्होंने कंजई आंखों वाले और दमदार आवाज के मालिक चंद्रमोहन को चुना था।

# बदलते सुर

कभी भी दो देशों के बीच लंबे समय तक तनातनी फायदेमंद साबित नहीं होती। वह भी जब दो ऐसे देशों के बीच किसी मसले पर मनमुटाव हो जाए, जो लंबे वक्त से बेहद करीबी रहे हैं, तो उन्हें उस मसले को मिल-बैठ कर सुलझा लेने में ही बेहतरी समझी जाती है। अच्छी बात है कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो का भारत के प्रति रुख अब नरम पड़ रहा है। उन्होंने भारत के साथ कनाडा के संबंधों का महत्त्व बताते हुए रिश्ते बेहतर करने की बात कही है। उन्होंने कहा है कि भारत के साथ करीबी संबंधों को लेकर कनाडा बहुत गंभीर है और दोनों अहम भू-राजनीतिक भागीदार हैं। वैश्विक स्तर पर भारत का महत्त्व बढ़ रहा है। ऐसे में जरूरी है कि कनाडा और उसके सहयोगी भारत के साथ मिलकर काम करें। दरअसल, भारत में आतंकी और आपराधिक मामलों में वांछित हरदीप सिंह निज्जर की बीते जून माह में अज्ञात लोगों ने कनाडा में हत्या कर दी थी। जस्टिन ट्रूडो ने न केवल भारत पर उसकी हत्या के आरोप लगाए, बल्कि भारतीय राजनयिक को कनाडा से निकालने जैसा सख्त कदम भी उठाया। यही नहीं, उन्होंने अमेरिका समेत अपने मित्र और साझीदार देशों के जरिए भारत के खिलाफ दबाव की रणनीति भी अपनानी चाही, मगर इसमें वह कामयाब नहीं हुए। निज्जर मामले में कनाडा की अनावश्यक अक्रामकता के बाद भारत ने अपने एक के बाद एक लिए फैसलों से ट्रूडो को बता दिया कि उस पर अब वैश्विक दबाव काम नहीं करेगा। भारत ने कनाडा के जवाब में जिस प्रकार सबसे पहले उसके राजनयिक को वापस भेजा, फिर कनाडाई नागरिकों को वीजा जारी करने पर अस्थायी रोक लगाई और अंतरराष्ट्रीय जगत के समक्ष अपना पक्ष मजबूती से रखा, उसका सकारात्मक असर पड़ा। सिख फार जस्टिस के प्रमुख और कनाडा में रहकर भारत विरोधी गतिविधियां चला रहे खालिस्तानी चरमपंथी और निज्जर के करीबी गुरपतवंत सिंह पन्नू की संपत्तियों को कुर्क किए जाने से भी दुनिया को यह संदेश गया कि भारत किसी भी तरह के अलगाववाद के सख्त खिलाफ है।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

# तेल तिलहन बाजारों में कारोबार का मिलाजुला रुख रहा

## - सोयाबीन डीगम तेल के थोक भाव पूर्व पूर्वस्तर पर बंद हुए

**नई दिल्ली ।**

देश के तेल-तिलहन बाजारों में कारोबार का मिला जुला रुख रहा। एक ओर जहां सोयाबीन दिल्ली एवं इंदौर तेल में सुधार आया वहीं सोयाबीन डीगम तेल के थोक भाव पूर्व पूर्वस्तर पर बंद हुए। नये फसल की आवक अगले 10-15 दिनों में शुरु होने की उम्मीद के बीच सोयाबीन तिलहन में गिरावट आई। इसके अलावा सामान्य कारोबार के दौरान बिनौला तेल कीमतों में भी सुधार देखा गया। दूसरी ओर सोयाबीन तिलहन के अलावा आयातित तेलों की बहुतायत के दवाब में कच्चा पामतेल (सीपीओ) एवं पामोलीन तेल कीमतों में गिरावट देखी गई। सामान्य कारोबार के बीच सरसों एवं मूंगफली तेल तिलहन और सोयाबीन डीगम तेल की थोक कीमतें पूर्वस्तर पर बंद हुई। बाजार सूत्रों ने कहा कि आयातक बैंकों का भुगतान करने के दवाब में आयातित तेल लागत से कम भाव पर बेच रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सोयाबीन के मामले में नई फसल की आवक जल्द शुरु होने की संभावना को देखते हुए सोयाबीन तिलहन की कीमतों में मामूली गिरावट रही। सोयाबीन दिल्ली एवं इंदौर तेल कीमतों में सुधार देखने को मिला क्योंकि इनके दाम पहले के निचले स्तर से थोड़ा उठे हैं जिससे यह सुधार दिख रहा है। तेल-तिलहनों के भाव इस प्रकार रहे- सरसों तिलहन 5,510-5,560 (42 प्रतिशत कंडीशन का भाव) रुपए प्रति क्विंटल, मूंगफली 7,475-7,525 रुपए प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल मिल डिलिवरी (गुजरात) 18,025 रुपए प्रति क्विंटल, मूंगफली रिफाइंड तेल 2,640-2,925 रुपए प्रति टिन, सरसों तेल दादरी 10,120 रुपए प्रति क्विंटल, सरसों पक्की घानी 1,720 -1,815 रुपए प्रति टिन, सरसों कच्ची घानी 1,720 - 1,830 रुपए प्रति टिन, तिल तेल मिल डिलिवरी 18,900-21,000 रुपए प्रति क्विंटल, सोयाबीन तेल मिल डिलिवरी दिल्ली 9,550 रुपए प्रति क्विंटल, सोयाबीन मिल डिलिवरी इंदौर 9,460 रुपए प्रति क्विंटल, सोयाबीन तेल डीगम, कांडला 8,000 रुपए प्रति क्विंटल, सीपीओ एक्स-कांडला 7,750 रुपए प्रति क्विंटल, बिनौला मिल डिलिवरी (हरियाणा) 8,525 रुपए प्रति क्विंटल, पामोलिन आरबीडी, दिल्ली- 9,000 रुपए प्रति क्विंटल, पामोलिन एक्स-कांडला 8,100 रुपए (बिना जीएसटी के) प्रति क्विंटल, सोयाबीन दाना 4,980-5,075 रुपए प्रति क्विंटल, सोयाबीन लूज 4,730-4,845 रुपए प्रति क्विंटल और मक्का खल (सरिस्का) 4,015 रुपए प्रति क्विंटल।

# कच्चे तेल की ऊंची कीमतों से भारतीय बाजार में रहेगा उथल पुथल

**नई दिल्ली।**

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा है कि कच्चे तेल की ऊंची कीमतों के कारण घरेलू मुद्रास्फीति के बढ़ने के जोखिम को देखते हुए आने वाले समय में अस्थिरता बनी रहेने की संभावना है। उन्होंने कहा कि निवेशक अन्य संकेतकों के अलावा घरेलू, अमेरिकी और चीनी पीएमआई डेटा की रिलीज पर बारीकी से नजर रखेंगे। उन्होंने कहा कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और मुद्रास्फीति के दबाव के कारण बढ़ती चिंताओं के बीच, जो फेड द्वारा दरों में एक और बढ़ोतरी की आशंकाओं से बढ़ी है, घरेलू बाजार में पूरे सप्ताह उथल पुथल जारी रहेगा। अमेरिकी बांड यील्ड में वृद्धि और भारतीय रुपये में अस्थिरता ने विदेशी निवेशकों के लिए घरेलू सूचकांकों के आकर्षण को और कम कर दिया है। इसके अलावा, कम तरलता और खरीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए उत्प्रेरकों की कमी के कारण, बाजार को उच्च स्तर पर मजबूत प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है। पूरे सप्ताह, आईटी शेयरों ने प्रतिकूल वैश्विक संकेतों के कारण कमजोर प्रदर्शन किया, जबकि फार्मा क्षेत्र में मजबूत खरीददारी देखी गई। निवेशकों ने वैश्विक अनिश्चितताओं के जवाब में रक्षात्मक रणनीति अपनाई है। उन्होंने कहा, फिर भी बाजार ने औद्योगिक विकास की स्वस्थ गति के कारण सकारात्मक रुख के साथ सप्ताह का समापन किया। कोर सेक्टर में सालाना आधार पर 12 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के खुदरा शोध प्रमुख सिद्धार्थ खेमका ने कहा, सोमवार को गांधी जयंती के अवसर पर भारतीय बाजार बंद रहेंगे। उन्होंने कहा, कुल मिलाकर हम उम्मीद करते हैं कि आगे बाजार व्यापक दायरे में कारोबार करेगा क्योंकि तेल की ऊंची कीमत ने मुद्रास्फीति पर चिंता को फिर से बढ़ा दिया है और इसके चलते लंबे समय तक उच्च ब्याज दर का माहौल बना रह सकता है। ऑटो स्टॉक फोकस में रहेंगे क्योंकि कंपनियां मासिक बिक्री संख्या की घोषणा करेंगी। ब्याज दर के प्रति संवेदनशील क्षेत्र भी फोकस में रहेगा, क्योंकि आरबीआई की नीति बैठक अगले सप्ताह होने वाली है। उन्होंने कहा कि निवेशक वैश्विक स्तर पर जारी होने वाले कुछ आंकड़ों से भी संकेत लेंगे।

# हर मिनट 142,690 डॉलर कमाने के दावे पर मस्क ने कहा- भारी नुकसान उठाता हूं

**नई दिल्ली।**

टेक अरबपति एलन मस्क ने रविवार को उन खबरों का खंडन किया कि वह हर मिनट 142,690 डॉलर या प्रति घंटे 8,560,800 डॉलर कमाते हैं। उन्होंने कहा कि जब भी टेस्ला के स्टॉक में गिरावट आती है तो वह अधिक पैसा गवां देते हैं।एक यूजर को जवाब देते हुए, एक्स के मालिक ने कहा कि ऐसी रिपोर्ट मूर्खतापूर्ण मैट्रिक्स पर निर्भर करती हैं। मस्क ने पोस्ट किया, यह नकदी का ढेर नहीं है। वास्तव में मेरे पास उन कंपनियों में स्टॉक हैं जिन्हें बनाने में मैंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि तकनीकी रूप से, हर बार टेस्ला के स्टॉक में बेतरतीब गिरावट से उन्हें कहीं अधिक नुकसान होता है। रिपोर्ट में दावा किया गया था कि तीन साल की अवधि के दौरान मस्क की कुल संपत्ति औसतन लगभग 2,378 डॉलर प्रति सेकंड बढ़ी। रिपोर्ट में दावा किया, यह प्रति मिनट 142,680 डॉलर या प्रति घंटा 8,560,800 डॉलर है। अगर वह आठ घंटे के लिए बिस्तर पर जाते हैं, तो अगली सुबह वह उठते है और खुद को 68,486,400 डॉलर अधिक अमीर पाते है। टेस्ला और स्पेसएक्स के सीईओ ने जनवरी से जून 2023 तक अपनी कुल संपत्ति में 96.6 बिलियन डॉलर की वृद्धि दर्ज की। वह वर्तमान में 248.7 बिलियन डॉलर की संपत्ति के साथ दुनिया के सबसे अमीर आदमी हैं। टेस्ला में मस्क की फिलहाल 23 फीसदी हिस्सेदारी है। उनकी संपत्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा, लगभग दो-तिहाई, टेस्ला की सफलता से जुड़ा है। मस्क ने अक्टूबर, 2022 में तब सुर्खियां बटोरीं, जब उन्होंने ट्विटर को 44 बिलियन डॉलर में खरीदा और फिर उसका नाम एक्स रख दिया। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, टेस्ला के शेयरों में हालिया गिरावट के बाद मस्क की संपत्ति गिरकर 137 अरब डॉलर हो गई है। उनकी इलेक्ट्रिक कार कंपनी के शेयर करीब 65 फीसदी नीचे चले गए हैं। नवंबर 2021 में मस्क की संपत्ति चरम पर थी, जो भारी गिरावट से पहले 340 अरब डॉलर तक पहुंच गई थी।

# सबसे ज्यादा बिकने वाली बाइक है हीरो स्पलेंडर

**नई दिल्ली ।**

देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली बाइक हीरो स्पलेंडर है। आपके बजट में आने वाली इस बाइक को आप आसानी से खरीद सकते हैं। इसके लिए आपको पैसों की भी जररूत नहीं होगी और आसानी से ऑन रोड फाइनेंस आपको इस पर मिल जाएगा। अब बात की जाए माइलेज की तो ये बेस्ट इन क्लास माइलेज देती है। वहीं इसकी मेंटेनेंस भी बहुत कम है। हम यहां पर बात कर रहे हैं हीरो स्पलेंडर की। माइलेज की बात की जाए तो स्पलेंडर को इसमें सभी का बॉस कहा जाए तो गलत नहीं होगा। कीमत में भी ये काफी वाजिब है और इसको आप केवल 73 हजार रुपये एक्स शोरूम कीमत पर खरीद सकते हैं। स्पलेंडर के इंजन की बात की जाए तो ये आपको 97.2 सीसी, एयर कूल्ड 4 स्ट्रोक सिंगल सिलेंडर इंजन के साथ आती है। मोटरसाइकिल का इंजन आपको 8.02 बीएचपी की पावर और 8.05 एनएम का पीक टॉर्क जनरेट करती है। माइलेज की बात की जाए तो ये 75 किलोमीटर प्रति लीटर का माइलेज आपको देगी। बता दें कि त्योहारी सीजन आने को है। लोग इस दौरान नई गाड़ियां खरीदने की प्लानिंग करते हैं। खासकर नई मोटरसाइकिलों की बिक्री का दौर अब आसमान छुएगा।

# सितंबर में जीएसटी संग्रह 2.2 प्रतिशत बढ़कर 1,62,712 करोड़ रुपये हुआ

**नई दिल्ली।**

सितंबर महीने के लिए सकल जीएसटी राजस्व अगस्त के 1,59,069 करोड़ रुपये से 2.2 प्रतिशत बढ़कर 1,62,712 करोड़ रुपये हो गया। सितंबर के लिए 1,62,712 करोड़ रुपये के जीएसटी संग्रह में से केंद्रीय जीएसटी 29,818 करोड़ रुपये, राज्ये य जीएसटी 37,657 करोड़ रुपये, एकीकृत जीएसटी 83,623 करोड़ रुपये (माल के आयात पर एकत्र 41,145 करोड़ रुपये सहित) और उपकर 11,613 करोड़ रुपये (माल के आयात पर 881 करोड़ रुपये के संकलन के साथ) शामिल है। सरकार ने आईजीएसटी से सीजीएसटी को 33,736 करोड़ रुपये और एसजीएसटी को 27,578 करोड़ रुपये का निपटान किया। नियमित निपटान के बाद सितंबर में केंद्र और राज्यों का कुल राजस्व सीजीएसटी के मद में 63,555 करोड़ रुपये और एसजीएसटी के मद में 65,235 करोड़ रुपये था। मौजूदा वित्त वर्ष 2023-24 में चौथी बार सकल जीएसटी संग्रह 1.60 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया है। सितंबर में समाप्त होने वाली 2023-24 की पहली छमाही के लिए सकल जीएसटी संग्रह (9,92,508 करोड़ रुपये) रहा है जो 2022-23 की पहली छमाही (8,93,334 करोड़ रुपये) के सकल जीएसटी संग्रह से 11 प्रतिशत अधिक है।

## बायजू की बोर्ड की बैठक अगले सप्ताह

**नई दिल्ली ।** शिक्षा प्रौद्योगिकी कंपनी बायजू वित्त वर्ष 2021-22 के वित्तीय परिणामों को मंजूरी देने और अपनाने के लिए अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में निदेशक मंडल की बैठक बुलाएगी। कंपनी ने शनिवार को यह जानकारी दी। कंपनी के नतीजों को अंतिम रूप देने में काफी देरी होने के बाद अब निदेशक मंडल के साथ इस पर चर्चा की जाएगी। कंपनी ने एक बयान में कहा कि थिंक एंड लर्न प्राइवेट लिमिटेड (बायजू ब्रांड की संचालक) ने शनिवार को वित्त वर्ष 2021-22 के लिए खातों को मंजूरी देने और अपनाने के लिए अक्टूबर 2023 के दूसरे सप्ताह में निदेशक मंडल की बैठक बुलाने के लिए अधिसूचना जारी की है। निदेशक मंडल, सलाहकार परिषद और कुछ आमंत्रित सदस्यों के साथ ऑडिट किए गए खातों को औपचारिक रूप से अपनाने के लिए बैठक की जाएगी। डेलॉयट ने वित्तीय विवरण जमा करने में देरी का हवाला देते हुए जून में कंपनी के ऑडिटर पद से इस्तीफा दे दिया था।

## गोल्डविंग टूर बाइक इंडिया में लॉन्च

### -कंफर्ट के आगे फेल कई लग्जरी कार

**नई दिल्ली ।** बाजार में एक ऐसी बाइक लॉन्च हुई है जो किसी लग्जरी कार से कम नहीं है। हालांकि ये बाइक पहले भी आती थी लेकिन अब कंपनी ने इसको पूरी तरह से बदल कर लॉन्च कर दिया है। यहां पर हम बात कर रहे हैं होंडा गोल्डविंग टूर की। होंडा ने 2023 गोल्डविंग टूर को इंडिया में लॉन्च कर दिया है। हालांकि ये एक प्रीमियम टूरिंग बाइक सेगमेंट में आती है और इसकी कीमत भी किसी लग्जरी कार से कम नहीं है। यहां तक की इसकी कीमत में आप करीब करीब 10 ऑल्टो के 10 का एक्स शोरूम प्राइस पे कर सकते हैं। कंपनी ने इस कार को 39.20 लाख रुपये एक्स शोरूम रखा है।होंडा गोल्ड विंग के इंजन की बात की जाए तो अच्छी से अच्छी एसयूवी भी इसके दम के सामने पानी भरती नजर आएं। गोल्ड विंग में कंपनी ने 1833 सीसी का लिक्विड कूल्ड 23 वॉल्व और 6 फ्लैट सिलेंडर इंजन दिया है। मोटरसाइकिल 125 बीएचपी की पावर जनरेट करती है और इसका मैक्सिमम टॉर्क 170 एनएम का है। बाइइ में 7 स्पीड गियरबॉक्स है जो डुअल क्लच ट्रांसमिशन से कनेक्टेड है। मोटरसाइकिल में आपको रिवर्स का भी फंके शन मिलता है। गोल्ड विंग के फीचर्स ऐसे हैं जिनके बारे में आपने न किसी बाइक में सुना होगा और न ही देखें होंगे। कंपनी ने इसमें फुल एलईडी लाइट्स दी हैं। इसी के साथ बाइक में 7 इंच का कलर टीएफटी डिस्े प्ले दिया गया है। ये एंड्रॉयड ऑटो और एप्पल कार प्ले को सपोर्ट करता है। इस बाइक में आप आसानी से अपनी पसंद के गाने भी सुन सकते हैं। वहीं इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल फ्लाई स्क्रीन, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, यूएसबी टाइप सी सॉकेट, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम और एयरबैग जैसे फीचर्स भी मिलते हैं। लॉन्च के साथ ही कंपनी के सेल्स और मार्केटिंग डायरेक्टर योगेश माथुर ने जानकारी दी कि कार की बुकिंग शुरू कर दी गई है और इस लग्जरी टूरर की डिलीवरी कंपनी अक्टूबर में ही शुरू कर देगी। वहीं बाइक की हीटेड और वेंटिलेटेड सीट्स के साथ ही हीटेड ग्रिप्स भी मिलती हैं। इसी के साथ बाइक में आपको ब्लोअर भी मिलता है।

## आईफोन को टक्कर देने आ रहे गूगल के ये फोन

**मुंबई ।** गूगल के फ्लैगशिप सीरीज के फोन गूगल पिक्सल 8 और पिक्सल 8 प्रो लांच के लिए तैयारा हैं। लॉन्चिंग से पहले फोन को लेकर कई तरह की जानकारी सामने आ चुकी है। अब फोन के लीक हुई यूएसए कीमत के आधार पर ये सामने आया है कि भारत में उनकी कीमत कितनी हो सकती है। अगर अफवाहों की मानें तब पिक्सल 8 संभवतः 699 की कीमत पर लांच हो सकता है, जबकि पिक्सल 8 प्रो संभवतः 999 की कीमत पर लांच हो सकता है, जो कि पिक्सल 7 सीरीज की लांच कीमतों की तुलना में 100 ज्यादा है। फिलहाल ये कहना गलत नहीं होगा कि इस कीमत पर पूरी तरह से भरोसा नहीं किया जा सकता है, क्योंकि ये कीमत ऑफिशियल नहीं है, और कंपनी ने इसे लेकर कोई जानकारी नहीं है। सीरीज़ के दोनों फोन की कीमत का खुलासा तो लॉन्चिंग के बाद ही मालूम होगा। गूगल पिक्सल 8 की खासियत की बात करें तब पिक्सल 8 का डिजाइन पिक्सल 7 की तरह है, जिसमें पीछे की तरफ एक कैमरा बार और पंच-होल कटआउट के साथ एक फ्लैट डिस्प्ले होगा। वेनिला पिक्सल में दो रियर कैमरे दिए जा सकते हैं, जबकि प्रो मॉडल में तीन सेंसर होने की उम्मीद की जा रही है। पिक्सल 8 के रियर पर 50-मेगापिक्सल का जीएन 2 प्राइमरी सेंसर और 12-मेगापिक्सल का आईएमएक्स 386 अल्ट्रा-वाइड सेंसर दिया जा सकता है।

# (शेयर बाजार समीक्षा) रिजर्व बैंक के ब्याज दर पर तय होगी बाजार की दिशा

## - बाजार भागीदारों की नजर रुपए की चाल और कच्चे तेल की कीमतों पर भी रहेगी

**मुंबई ।**

इस सप्ताह भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की मौद्रिक समीक्षा बैठक, वृहद आर्थिक आंकड़े, वैश्विक रुझान और विदेशी निवेशकों की गतिविधियां देश के शेयर बाजारों की दिशा तय करेंगी। विश्लेषकों ने यह कहना है। सोमवार दो अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर शेयर बाजार बंद रहेंगे। बाजार` विश्लेषकों ने कहा` कि जहां वैश्विक संकेतक बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण रहेंगे, वहीं शुक्रवार को आने वाली रिजर्व बैंक की मौद्रिक समीक्षा पर सभी का` विशेष ध्यान रहेगा। हालांकि बाजार ब्याज दरों के मोर्चे पर यथास्थिति की उम्मीद कर रहा है, लेकिन डॉलर सूचकांक की मजबूती और बांड पर प्रतिफल के अलावा कच्चे तेल के दाम निवेशकों की चिंता का विषय बने हुए हैं। उन्होंने कहा` कि इसके अलावा सितंबर में भारत सहित उभरते बाजारों में विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की सतत बिकवाली ने बाजार को प्रभावित किया है। बाजार रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक पर बारीकी से नजर रखेगा। तीन दिन की यह बैठक चार अक्टूबर को शुरू होगी। बैठक के नतीजों की घोषणा छह अक्टूबर को की जाएगी। बाजार भागीदारों की नजर डॉलर के मुकाबले रुपए की चाल और कच्चे तेल की कीमतों पर भी रहेगी। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) और घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) का रुख भी बाजार के लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इस सप्ताह विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के लिए खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) के आंकड़े आने हैं। इसके अलावा वाहन कंपनियों के मासिक बिक्री आंकड़ों की भी घोषणा होगी। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) सितंबर में लगातार बिकवाल बने रहे। उन्होंने कहा कि डॉलर के लगातार मजबूत रहने से एफपीआई ने भारतीय बाजार में बिकवाली की। डॉलर सूचकांक बढ़कर 107 के करीब पहुंच गया है। इसके अलावा अमेरिका में बॉन्ड पर प्रतिफल भी लगातार बढ़ रहा है। 10 साल के बॉन्ड पर प्रतिफल 4.7 प्रतिशत हो गया है। कच्चे तेल का दाम 97 डॉलर प्रति बैरल के पास है। इन सब कारकों ने भी एफपीआई की बिकवाली को बढ़ावा दिया है।

बाजार विशेषज्ञों ने कहा कि बाजार कुछ प्रमुख घरेलू और वैश्विक व्यापक आर्थिक आंकड़ों से दिशा लेगा। इस सप्ताह विभिन्न देशों के एसएंडपी वैश्विक विनिर्माण और सेवा पीएमआई आंकड़े आने हैं। इसके अलावा ओपेक की बैठक भी है। अमेरिका के कारखाना ऑर्डर और बेरोजगारी दावों के आंकड़े भी बाजार के लिए महत्वपूर्ण रहेंगे। घरेलू मोर्चे पर आरबीआई की मौद्रिक समीक्षा बैठक और वाहन कंपनियों के मासिक बिक्री आंकड़े बाजार के लिए महत्वपूर्ण रहेंगे।

## कमर्शियल गैस सिलेंडर 209 रुपए महंगा

**नई दिल्ली ।** ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने कमर्शियल एलपीजी गैस सिलेंडर के दाम बढ़ा दिए हैं। 19 किलोग्राम वाले वाणिज्यिक एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमत 1 अक्टूबर से 209 रुपए बढ़ जाएगी। 19 किलोग्राम वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की दिल्ली खुदरा बिक्री कीमत 1 अक्टूबर से 1731.50 रुपए होगी। हालांकि घरेलू एलपीजी सिलेंडर के दामों में कोई बदलाव नहीं किया गया। वैसे तो मूल्यों में बढ़ोतरी कमर्शियल एलपीजी गैस सिलेंडर पर हुई है लेकिन इससे बाजार में खाने-पीने की चीजें महंगी होंगी और इसका सीधा असर आम आदमी की जेब पर बढ़ेगा। बता दें` कि एक सितंबर को तेल कंपनियों ने वाणिज्यिक गैस सिलेंडर की कीमतों में 158 रुपए की कटौती की थी। इसके बाद दिल्ली में 19 किलोग्राम के वाणिज्यिक गैस सिलेंडर की कीमत घटकर 1,522 रुपए हो गई थी। अगस्त महीने की शुरुआत में भी तेल कंपनियों ने कमर्शियल एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमतों में 99.75 रुपए की कटौती की थी। इस तरह पिछले दो महीनों में कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतों में करीब 258 रुपए की कटौती की गई थी। कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतों में ताजा बढ़ोतरी से महंगाई पर असर पड़ सकता है। खास कर रेस्टोरेंट में भोजन के लिए आपको अधिक पैसे चुकाने पड़ सकते हैं।

# एयरटेल ने अपने नेटवर्क पर 50 मिलियन ग्राहकों के साथ 5जी विकास का सिलसिला जारी रखा

## -सेवाएँ अब देश के सभी जिलों में उपलब्ध -

**नई दिल्ली/इन्दौर ।**

एयरटेल 5G प्लस के लॉन्च के 1 साल के भीतर, भारत के अग्रणी दूरसंचार सेवा प्रदाता में से एक, भारती एयरटेल (एयरटेल) ने आज घोषणा की कि उसके नेटवर्क पर 50 मिलियन से अधिक अद्वितीय 5G ग्राहक हैं। कंपनी ने यह भी घोषणा की कि एयरटेल 5G प्लस सेवाएं देश के सभी जिलों (पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के जिलों, छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों और लक्षद्वीप के द्वीपों को छोड़कर, जो वीएसएटी के माध्यम से जुड़े हुए हैं) में उपलब्ध हैं।

इसे देश में सबसे तेज़ रोलआउट में से एक बनाते हुए, एयरटेल 5G प्लस सभी 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों में उपलब्ध है। बिहार के सुंदर बलिया से लेकर ओडिशा के ऐतिहासिक कटक तक, झारखंड के सबसे छोटे रामगढ़ जिले से लेकर राजस्थान के वन्यजीव प्रेमियों के लिए बिश्नोई भूमि तक, केरल के शांत सराय से लेकर कश्मीर के दलदली गांवों तक, एयरटेल के ग्राहक अब डिजिटल सुपरहाइवे पर हैं, और तेज गति का आनंद ले रहे हैं। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए, भारती एयरटेल के सीटीओ, रणदीप सेखों ने कहा, हम अपने लाखों ग्राहकों द्वारा 5G को अपनाने की गति से रोमांचित हैं और हम योजना से पहले इस मील के पत्थर तक पहुंच रहे हैं। यह एयरटेल के 5G कवरेज के एक बड़े विस्तार का प्रतीक है जो अक्टूबर 2022 में 1 मिलियन से बढ़कर लॉन्च के केवल 12 महीनों में 50 मिलियन हो गया।

विस्तार पूरी गति से जारी है और मुझे यकीन है हम तेजी से बढ़ना जारी रखेंगे क्योंकि हम राष्ट्रव्यापी कवरेज की दिशा में काम कर रहे हैं और अपने सभी ग्राहकों को 5त युग में प्रवेश करने में सक्षम बना रहे हैं।

## पेट्रोल और डीजल कुछ राज्यों में हुआ सस्ता

**नई दिल्ली ।** वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में हल्की गिरावट है। डब्ल्यूटीआई क्रूड 1 फीसदी की गिरावट के साथ 90.77 डॉलर प्रति बैरल पर बिक रहा है। वहीं ब्रेंट क्रूड भी 1 फीसदी कमजोर होकर 92.09 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। हालांकि इस गिरावट के बावजूद देश में फिर भी पेट्रोल-डीजल की कीमतें स्थिर बनी हुई है। देश के कुछ राज्यों में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में मामूली रूप से गिरावट आई है जबकि कुछ राज्यों में कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपए और डीजल 89.62 रुपए प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए और डीजल 94.27 रुपए प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपए और डीजल 92.76 रुपए प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.77 रुपए और डीजल 94.37 रुपए प्रति लीटर, उत्तर प्रदेश में पेट्रोल 96.48 रुपए और डीजल 89.55 रुपए प्रति लीटर हो गया है। बिहार में पेट्रोल 109.33 रुपए और डीजल 95.82 रुपए प्रति लीटर हो गया है। मध्य प्रदेश में पेट्रोल 109.95 रुपए और डीजल 94.89 रुपए प्रति लीटर हो गया है। छत्तीसगढ़ में पेट्रोल 103.08 रुपए और डीजल 95.96 रुपए प्रति लीटर हो गया है। तमिलनाडु में पेट्रोल 103.58 रुपए और डीजल 95.25 रुपए प्रति लीटर हो गया है।

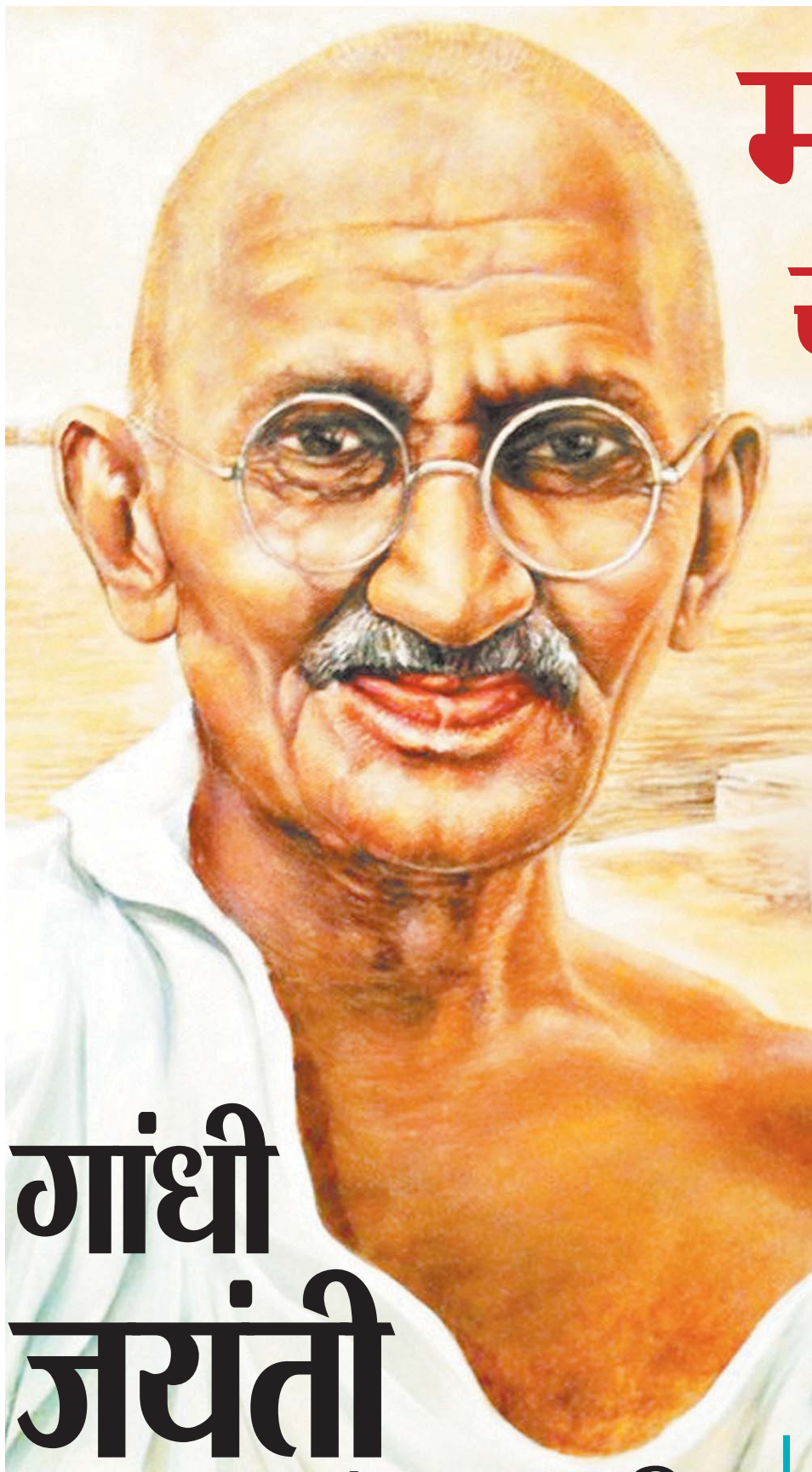

# महात्मा गांधी
## स्वतंत्र भारत के पिता

**भारत के राष्ट्रपिता मोहनदास कर्मचंद गांधी जिन्हें बापू या महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है, के जन्म दिन 2 अक्तूबर को गांधी जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। वस्तुतः गांधीजी विश्व भर में उनके अहिंसात्मक आंदोलन के लिए जाने जाते हैं, और यह दिवस उनके प्रति वैश्विक स्तर पर सम्मान व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है ।**

मोहनदास करमचंद गांधी (2 अक्तूबर 1869 – 30 जनवरी 1948) भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह – व्यापक सविनय अवज्ञा के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव संपूर्ण अहिंसा पर रखी गई थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति आंदोलन के लिए प्रेरित किया।उन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत- महात्मा अथवा महान आत्मा एक सम्मान सूचक शब्द जिसे सबसे पहले रवीन्द्रनाथ टेगौर ने प्रयोग किया और भारत में उन्हें बापू के नाम से भी याद किया जाता है। उन्हें सरकारी तौर पर राष्ट्रपिता का सम्मान दिया गया है 2 अक्टूबर को उनके जन्म दिन राष्ट्रीय पर्व गांधी जयंती के नाम से मनाया जाता है और दुनियाभर में इस दिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है। सबसे पहले गांधी ने रोजगार अहिंसक सविनय अवज्ञा प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका, में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु प्रयुक्त किया। 1915 में उनकी वापसी के बाद उन्होंने भारत में किसानों , कृषि मजदूरों और शहरी श्रमिकों को अत्याधिक भूमि कर और भेदभाव के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए एकजुट किया। 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभालने के बाद गांधी जी ने देशभर में गरीबी से राहत दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण, आत्म-निर्भरता के लिए अस्पृश्यता का अंत आदि के लिए बहुत से आंदोलन चलाएं। किंतु इन सबसे अधिक विदेशी राज से मुक्ति दिलाने वाले स्वराज की प्राप्ति उनका प्रमुख लक्ष्य था। गाँधी जी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नमक कर के विरोध में 1930 में दांडी मार्च और इसके बाद 1942 में , ब्रिटिश भारत छोड़ो आन्दोलन छेडकर भारतीयों का नेतृत्व कर प्रसिद्धि प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीका और भारत में विभिन्न अवसरों पर कई वर्षों तक उन्हें जेल में रहना पड़ा। गांधी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिए वकालत भी की। उन्होंने आत्म-निर्भरता वाले आवासीय समुदाय में अपना जीवन गुजारा किया और पंरपरागत भारतीय पोशाक धोती और सूत से बनी शॉल पहनी जिसे उसने स्वयं ने चरखे पर सूत कात कर हाथ से बनाया था। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि तथा सामाजिक प्रतिकार दोनों के लिए लंबे-लंबे उपवास भी किए।

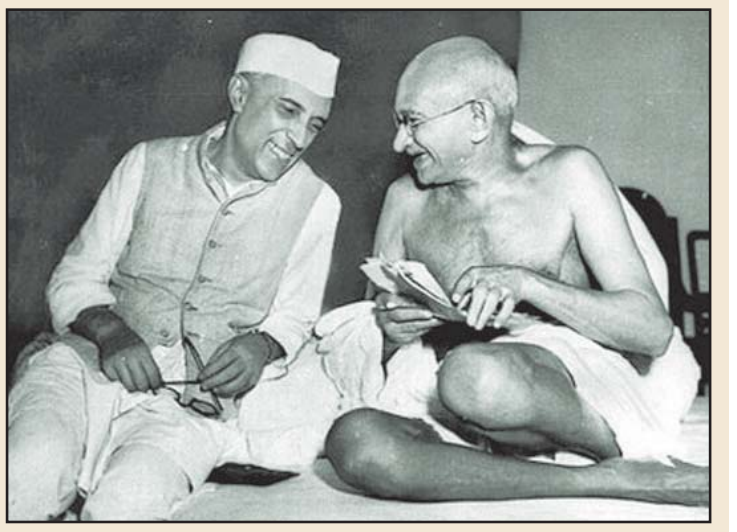

### गांधी दक्षिण अफ्रीका में (1895)

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी को भारतीयों पर भेदभाव का सामना करना पड़ा। आरम्भ में उन्हें प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इन्कार करने के लिए ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इतना ही नहीं पायदान पर शेष यात्रा करते हुए एक यूरोपियन यात्री के अन्दर आने पर चालक की मार भी झेलनी पड़ी। उन्होंने अपनी इस यात्रा में अन्य भी कई कठिनाइयों का सामना किया। अफ्रीका में कई होटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। इसी तरह ही बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने नहीं माना। ये सारी घटनाएँ गान्धी के जीवन में एक मोड़ बन गईं और विद्यमान सामाजिक अन्याय के प्रति जागरुकता का कारण बनीं तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुईं। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गान्धी ने अंग्रेजी साम्राज्य के अन्तर्गत अपने देशवासियों के सम्मान तथा देश में स्वयं अपनी स्थिति के लिए प्रश्न उठाये।

### 1906 के जुलु युद्ध में भूमिका

1906 में, दक्षिण अफ्रीका में नए चुनाव कर के लागू करने के बाद दो अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला गया। बदले में अंग्रेजों ने जूलू के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। गांधी जी ने भारतीयों को भर्ती करने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों को सक्रिय रूप से प्रेरित किया। उनका तर्क था अपनी नागरिकता के दावों को कानूनी जामा पहनाने के लिए भारतीयों को युद्ध प्रयासों में सहयोग देना चाहिए। तथापि, अंग्रेजों ने अपनी सेना में भारतीयों को पद देने से इंकार कर दिया था। इसके बावजूद उन्होने गांधी जी के इस प्रस्ताव को मान लिया कि भारतीय घायल अंग्रेज सैनिकों को उपचार के लिए स्टेचर पर लाने के लिए स्वैच्छा पूर्वक कार्य कर सकते हैं। इस कोर की बागडोर गांधी ने थामी। 21 जुलाई 1906 को गांधी जी ने इंडियन ओपिनिय में लिखा कि 23 भारतीय निवासियों के विरूद्ध चलाए गए आप्रेशन के संबंध में प्रयोग द्वारा नेटाल सरकार के कहने पर एक कोर का गठन किया गया है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों से इंडियन ओपिनियन में अपने कॉलमों के माध्यम से इस युद्ध में शामिल होने के लिए आग्रह किया और कहा, यदि सरकार केवल यही महसूस करती हे कि आरक्षित बल बेकार हो रहे हैं तब वे इसका उपयोग करेंगे और असली लड़ाई के लिए भारतीयों का प्रशिक्षण देकर इसका अवसर देंगे।

### भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष

1915 में, गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत में रहने के लिए लौट आएं।उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों पर अपने विचार व्यक्त किए, लेकिन वे भारत के मुख्य मुद्दों, राजनीति तथा उस समय के कांग्रेस दल के प्रमुख भारतीय नेता गोपाल कृष्ण गोखले जो एक सम्मानित नेता थे पर ही आधारित थे।

**चंपारण और खेड़ा** – गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन और खेड़ा सत्याग्रह, आंदोलन में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भत्ता दिया गया जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गांवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढता ही गया। यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा, गुजरात में भी यही समस्या थी। गांधी जी ने वहां एक आश्रम बनाया जहाँ उनके बहुत सारे समर्थकों और नए स्वेच्छिक कार्यकर्ताओं को संगठित किया गया। उन्होंने गांवों का एक विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया जिसमें प्राणियों पर हुए अत्याचार के भयानक कांडों का लेखाजोखा रखा गया और इसमें लोगों की अनुत्पादकीय सामान्य अवस्था को भी शामिल किया गया था। ग्रामीणों में विश्वास पैदा करते हुए उन्होंने अपना कार्य गांवों की सफाई करने से आरंभ किया जिसके अंतर्गत स्कूल और अस्पताल बनाए गए और उपरोक्त वर्णित बहुत सी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए ग्रामीण नेतृत्व प्रेरित किया।

**असहयोग आन्दोलन** – गांधी जी ने असहयोग, अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ़ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। पंजाब में अंग्रेजी फोजों द्वारा भारतीयों पर जलियावांला नरसंहार जिसे अमृतसर नरसंहार के नाम से भी जाना जाता है ने देश को भारी आघात पहुंचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी। गांधीजी ने ब्रिटिश राज तथा भारतीयों द्वारा प्रतिकारात्मक रवैया दोनों की की। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों तथा दंगों के शिकार लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा पार्टी के आरंभिक विरोध के बाद दंगों की भर्त्सना की। गांधी जी के भावनात्मक भाषण के बाद अपने सिद्धांत की वकालत की कि सभी हिंसा और बुराई को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है। किंतु ऐसा इस नरसंहार और उसके बाद हुई हिंसा से गांधी जी ने अपना मन संपूर्ण सरकार आर भारतीय सरकार के कब्जे वाली संस्थाओं पर संपूर्ण नियंत्रण लाने पर केंद्रित था जो जल्दी ही स्वराज अथवा संपूर्ण व्यक्तिगत, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक आजादी में बदलने वाला था।

**स्वराज और नमक सत्याग्रह** – गांधी जी सक्रिय राजनीति से दूर ही रहे और 1920 की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता , शराब, अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ आंदोलन छेड़ते भी रहे। उन्होंने पहले 1928 में लौटे एक साल पहले अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक नया संवेधानिक सुधार आयोग बनाया जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। इसका परिणाम भारतीय राजनैतिक दलों द्वारा बहिष्कार निकला। दिसंबर 1928 में गांधी जी ने कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा गया था अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में संपूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहें। गांधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे पुरूषों द्वारा तत्काल आजादी की मांग के विचारों को फलीभूत किया बल्कि अपनी स्वयं की मांग को दो साल की बजाए एक साल के लिए रोक दिया। अंग्रेजों ने कोई जवाब नहीं दिया। नहीं 31 दिसंबर 1929 , भारत का झंडा फहराया गया था लाहौर में है . 26 जनवरी 1930 का दिन लाहौर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने मनाया। यह दिन लगभग प्रत्येक भारतीय संगठनों द्वारा भी मनाया गया। इसके बाद गांधी जी ने मार्च 1930 में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया जिसे 12 मार्च से 6 अप्रेल तक नमक आंदोलन के याद में 400 किलोमीटर (248 मील) तक का सफर अहमदाबाद से दांडी, गुजरात तक चलाया गया ताकि स्वयं नमक उत्पन्न किया जा सके। समुद्र की ओर इस यात्रा में हजारों की संख्या में भारतीयों ने भाग लिया। भारत में अंग्रेजों की पकड़ को विचलित करने वाला यह एक सर्वाधिक सफल आंदोलन था जिसमें अंग्रेजों ने 80,000 से अधिक लोगों को जेल भेजा।

**द्वितीय विश्व युद्ध और भारत छोड़ो** – द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में जब छिड़ने नाजी जर्मनी आक्रमण पोलैंड. आरंभ में गांधी जी ने अंग्रेजों के प्रयासों को अहिंसात्मक नैतिक सहयोग देने का पक्ष लिया किंतु दूसरे कांग्रेस के नेताओं ने युद्ध में जनता के प्रतिनिधियों के परामर्श लिए बिना इसमें एकतरफा शामिल किए जाने का विरोध किया। कांग्रेस के सभी चयनित सदस्यों ने सामूहिक तौर पर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। लंबी चर्चा के बाद, गांधी ने घोषणा की कि जब स्वयं भारत को आजादी से इंकार किया गया हो तब लोकतांत्रिक आजादी के लिए बाहर से लड़ने पर भारत किसी भी युद्ध के लिए पार्टी नहीं बनेगी। जैसे जैसे युद्ध बढता गया गांधी जी ने आजादी के लिए अपनी मांग को अंग्रेजों को भारत छोड़ो आन्दोलन नामक विधेयक देकर तीव्र कर दिया। यह गांधी तथा कांग्रेस पार्टी का सर्वाधिक स्पष्ट विद्रोह था जो भारतीय सीमा से अंग्रेजों को खदेड़ने पर लक्षित था। गांधी जी के दूसरे नंबर पर बैठे जवाहरलाल नेहरू की पार्टी के कुछ सदस्यों तथा कुछ अन्य राजनैतिक भारतीय दलों ने आलोचना की जो अंग्रेजों के पक्ष तथा विपक्ष दोनों में ही विश्वास रखते थे। कुछ का मानना था कि अपने जीवन काल में अथवा मौत के संघर्ष में अंग्रेजों का विरोध करना एक नश्वर कार्य है जबकि कुछ मानते थे कि गांधी जी पर्याप्त कोशिश नहीं कर रहे हैं। भारत छोड़ो इस संघर्ष का सर्वाधिक शक्तिशाली आंदोलन बन गया जिसमें व्यापक हिंसा और गिरफ्तारी हुई। पुलिस की गोलियों से हजारों की संख?या में स्वतंत्रता सेनानी या तो मारे गए या घायल हो गए और हजारों गिरफ्तार कर लिए गए। गांधी और उनके समर्थकों ने स्पष्ट कर दिया कि वह युद्ध के प्रयासों का समर्थन तब तक नहीं देंगे तब तक भारत को तत?काल आजादी न दे दी जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार भी यह आन्दोलन बन्द नहीं होगा यदि हिंसा के व्यक्तिगत कृत्यों को मूर्त रूप दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके चारों ओर अराजकता का आदेश असली अराजकता से भी बुरा है। उन्होंने सभी कांग्रेसियों और भारतीयों को अहिंसा के साथ करो या मरो (अंग्रेजी में डू ऑर डाय) के द्वारा अन्तिम स्वतन्त्रता के लिए अनुशासन बनाए रखने को कहा।

### स्वतंत्रता और भारत का विभाजन

गांधी जी ने 1946 में कांग्रेस को ब्रिटिश केबीनेट मिशन के प्रस्ताव को ठुकराने का परामर्श दिया क्योकि उसे मुस्लिम बाहुलता वाले प्रांतों के लिए प्रस्तावित समूहीकरण के प्रति उनका गहन संदेह होना था इसलिए गांधी जी ने प्रकरण को एक विभाजन के पूर्वाभ्यास के रूप में देखा। हालांकि कुछ समय से गांधी जी के साथ कांग्रेस द्वारा मतभेदों वाली घटना में से यह भी एक घटना बनी। चूंकि नेहरू और पटेल जानते थे कि यदि कांग्रेस इस योजना का अनुमोदन नहीं करती है तब सरकार का नियंत्रण मुस्लिम लीग के पास चला जाएगा। 1948 के बीच लगभग 5000 से भी अधिक लोगों को हिंसा के दौरान मौत के घाट उतार दिया गया। गांधी जी किसी भी ऐसी योजना के खिलाफ थे जो भारत को दो अलग अलग देशों में विभाजित कर दे।भारत में रहने वाले बहुत से हिंदुओं और सिक्खों एवं मुस्लिमों का भारी बहुमत देश के बंटवारे के पक्ष में था। इसके अतिरिक्त मुहम्मद अली जिन्ना, मुस्लिम लीग के नेता ने, पश्चिम पंजाब, सिंध, उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत और ईस्ट बंगाल में व्यापक सहयोग का परिचय दिया। व्यापक स्तर पर फैलने वाले हिंदु मुस्लिम लड़ाई को रोकने के लिए ही कांग्रेस नेताओं ने बंटवारे की इस योजना को अपनी मंजूरी दे दी थी। कांगेस नेता जानते थे कि गांधी जी बंटवारे का विरोध करेंगे और उसकी सहमति के बिना कांग्रेस के लिए आगे बझना बसंभव था चुकि पाटर्ठी में गांधी जी का सहयोग और संपूर्ण भारत में उनकी स्थिति मजबूत थी। गांधी जी के करीबी सहयोगियों ने बंटवारे को एक सर्वोत्तम उपाय के रूप में स्वीकार किया और सरदार पटेल ने गांधी जी को समझाने का प्रयास किया कि नागरिक अशांति वाले युद्ध को रोकने का यही एक उपाय है। मज़बूर गांधी ने अपनी अनुमति दे दी।

### हत्या

30 जनवरी 1948 गांधी की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई जब वे नई दिल्ली के बिड़ला भवन के मैदान में रात चहलकदमी कर रहे थे। गांधी का हत्यारा नाथूराम गौड़से हिन्दू राष्ट्रवादी थे जिनके कट्टरपंथी हिंदु महासभा के साथ संबंध थे जिसने गांधी जी को पाकिस्तान को भुगतान करने के मुद्दे को लेकर भारत को कमजोर बनाने के लिए जिम्मेदार ठहराया था। गोड़से और उसके उनके सह षड्यंत्रकारी नारायण आप्टे को बाद में केस चलाकर सजा दी गई तथा 15 नवंबर1949 को इन्हें फांसी दे दी गई।

# गांधी जयंती
## आत्ममूल्यांकन का दिन

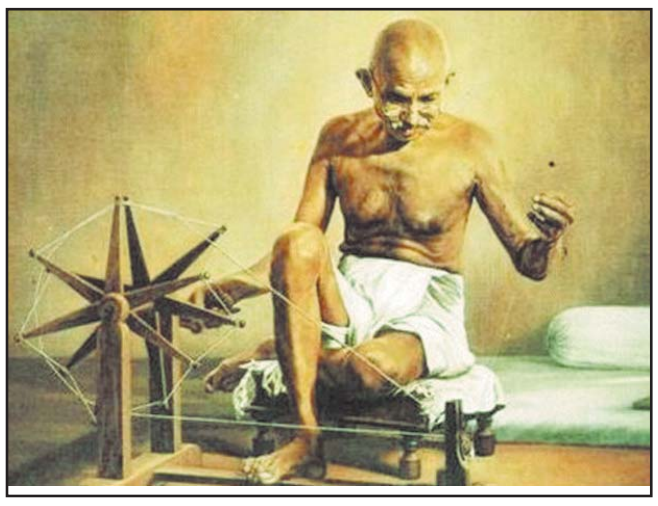

आज गांधी जयंती है। गांधी प्रतिमाओं और उनकी तस्वीरों को पिछली पुण्यतिथि के बाद धोने-पोंछने का यह पहला अवसर आया है। प्रत्येक वर्ष ऐसा ही होता है, जयंती और पुण्यतिथि के बीच की अवधि में गांधीजी के साथ कोई नहीं होता है। कड़वी बात तो यह है कि बचे-खुचे गांधीवादी भी नहीं। वे गांधीजी का साथ दे भी नहीं सकते हैं क्योंकि जरूरतों और परिस्थितियों ने उन्हें भी सिखा दिया है कि गांधी बनने से केवल प्रताड़ना मिल सकती है, संपदा, संपत्ति नहीं। वैचारिक धरातल में यह खोखलापन एक दिन या एक माह या एक वर्ष में नहीं आ गया। जान-बूझकर धीरे-धीरे और योजनाबद्ध ढंग से गांधी सिद्धांतों को मिटाया जा रहा है क्योंकि यह मौजूदा स्वार्थों में सबसे बड़े बाधक हैं। गांधी सिद्धांतों को मिटाने की इस गतिविधि को देखा नहीं गया, ऐसा नहीं है। सब चुप हैं क्योंकि अपना-अपना लाभ सभी को चुप रहने के लिए प्रेरित कर रहा है। आमतौर पर जन्मदिन या जयंती के दिन आस्था के फूल अर्पित करने की परंपरा है। इस दिन कड़वी बातों को कहने का रिवाज नहीं है। यदि इस रिवाज को तोड़ा जा रहा है, तो मजबूरी के दबाव को समझे जाने की आवश्यकता है। यह राष्ट्र नेताओं को महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर कीचड़ उछालने की अनुमति कैसे दे रहा है, क्यों दे रहा है? यह कैसी सहिष्णुता है जो राष्ट्र की बुनियादी विचारधारा को मटियामेट करने पर आमादा है?

कहते हैं कि जो राष्ट्र अपने चरित्र की रक्षा करने में सक्षम नहीं है, उसकी रक्षा कोई नहीं कर सकता है। क्या परमाणु बम भारतीयता की रक्षा कर पाएगा? दरअसल, यह भुला दिया गया है कि पहले विश्वास बनता है, फिर श्रद्धा कायम होती है। किसी ने अपनी जय-जयकार करवाने के लिए क्रम उलट दिया और उल्टी परंपरा बन गई। अब विश्वास हो या नहीं हो, श्रद्धा का प्रदर्शन जोर-शोर से किया जाता है। गांधीजी भी श्रद्धा के इसी प्रदर्शन के शिकार हुए हैं। उनके सिद्धांतों में किसी को विश्वास रहा है या नहीं, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। जयंती और पुण्यतिथि पर उनकी कसमें खाकर वाहवाही जरूर लूटी जा रही है। गांधीजी के विचार बेचने की एक वस्तु बनकर रह गए हैं। वे छपे शब्दों से अधिक कुछ नहीं हैं। इसलिए ही गांधीजी की जरूरत आज पहले से कहीं अधिक है। इस जरूरत को पूरा करने की सामर्थ्य वाला व्यक्तित्व दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा है। हर कोई चाहता है कि आदर्श और मूल्य इतिहास में बने रहें और इतिहास को वह पूजता भी रहेगा। परंतु अपने वर्तमान को वह इस इतिहास से बचाकर रखना चाहता है। अपने लालच की रक्षा में वह गांधी की रोज हत्या कर रहा है, पल-पल उन्हें मार रहा है और राष्ट्र भीड़ की तरह तमाशबीन बनकर चुपचाप उसे देख रहा है। शायद कल उनमें से किसी को यही करना पड़े! अपने हितों की विरोधी चीजों को इतिहास में बदल देने में भारतीयता आजादी के बाद माहिर हो चुकी है। वर्तमान और इतिहास की इस लड़ाई में वर्तमान ही जीतता आ रहा है क्योंकि इतिहास की तरफ से लड़ने वाले शेष नहीं हैं। आज गांधी जयंती है। गांधीजी की प्रतिमा के सामने आंख मूंदकर कुछ क्षण खड़े रहने वाले क्या यह पश्चाताप कर रहे होंगे कि वे गांधीजी के बताए रास्तों पर क्यों नहीं चल रहे हैं? नहीं, वे यह कतई नहीं सोच रहे होंगे। तब वे मन ही मन क्या कह रहे होंगे? सोचिए और उस पर मनन कीजिए। गांधी जयंती पर यही बड़ा काम होगा।

# गांधीजी ने बजाया था सत्याग्रह का बिगुल

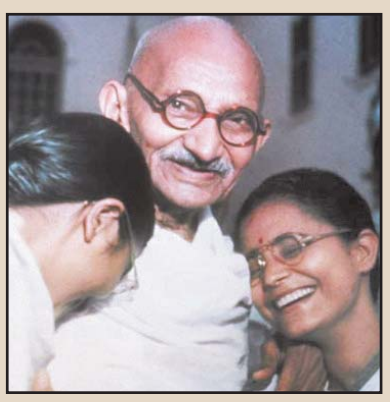

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद भारतवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए गांधी जी नेशनल इण्डियन कांग्रेस की स्थापना की। पहली बार सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग किया और विजय भी पाई। इस प्रकार सन? 1914-15 में गांधी जब दक्षिण अफ्रीका से वापिस भारत लौटे, तब तक इन विचारों और जीवन-व्यवहारों में आमूल-चूल परिवर्तन आ चुका था।

भारत लौटकर कुछ दिन गांधी जी देश का भ्रमण कर वास्तविक स्थिति का जायजा लेते रहे। फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संस्था को पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य देकर संघर्ष में कूद पड़े। क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध में वचन देकर भी अंग्रेज सरकार ने भारतीयों के प्रति अपने रवैये में कोई परिवर्तन नहीं किया था, इससे गांधी जी और भी चिढ़ गए और अंग्रेजी कानूनों का बहिष्कार और सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। भारतवासियों के मानवाधिकारों का हनन करने वाले रोलट एक्ट का स्थान-स्थान पर विरोध-बहिष्कार होने लगा। सन 1919 में जलियां-वाला बाग में हो रही विरोध-सभा पर हुए अत्याचार ने गांधी जी की अंतरात्मा को हिलाकर रख दिया। सो अब ये समूचे स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर सम्हाल खुलम-खुल्ला संघर्ष में कूद पड़े। इनका संकेत पाते ही सारे देश में विरोधी आंदोलनों की एक आंधी सी छा गई। अंग्रेज सरकार की लाठी-गोलियां भी अंधाधुंध बरसने लगीं। जेलें सत्याग्रहियों से भर उठीं। गांधीजी को भी जेल में डाल दिया गया। बिहार की नील सत्याग्रह, डाण्डी यात्रा या नमक सत्याग्रह, खेड़ा का किसान सत्याग्रह आदि गांधी जी के जीवन के प्रमुख सत्याग्रह हैं। इन्हें कई बार महीने-महीने भर का उपवास भी करना पड़ा। अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए इन्होंने नवजीवन और यंग इण्डिया जैसे पत्र भी प्रकाशित किए। विदेशी-बहिष्कार और विदेशी माल का दाह, मद्य निषेध के लिए धरने का आयोजन, अछूतोद्धार, स्वदेशी प्रचार के लिए चर्खे और खादी को महत्व देना, सर्वधर्म-समन्वय और विशेषकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रचार इनके द्वारा आरंभ किए गए अन्य प्रमुख सामाजिक सुधारात्मक कार्य माने गए हैं। इस प्रकार के स्वतंत्रता दिलाने वाले प्रयासों के लिए अक्सर बीच-बीच में इन्हें जेलयात्रा भी करनी पड़तीं। सन 1931 में इग्लैंड में संपन्न गोलमेज कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिए गांधी जी वहां गए, पर जब इनकी इच्छा के विरुद्ध हरिजनों को निर्वाचन का विशेषाधिकार हिन्दुओं से अलग करके दे दिया, तो भारत लौटकर गांधी जी ने पुनः आंदोलन आरंभ कर दिया। बंदी बनाए जाने पर जब ये अनशन करने लगे, तो सारा देश क्षुब्ध हो उठा। फलतः ब्रिटिश सरकार को गांधी जी के मतानुसार हरिजनों का पृथक निर्वाचनाधिकार का हठ छोड़ना पड़ा।

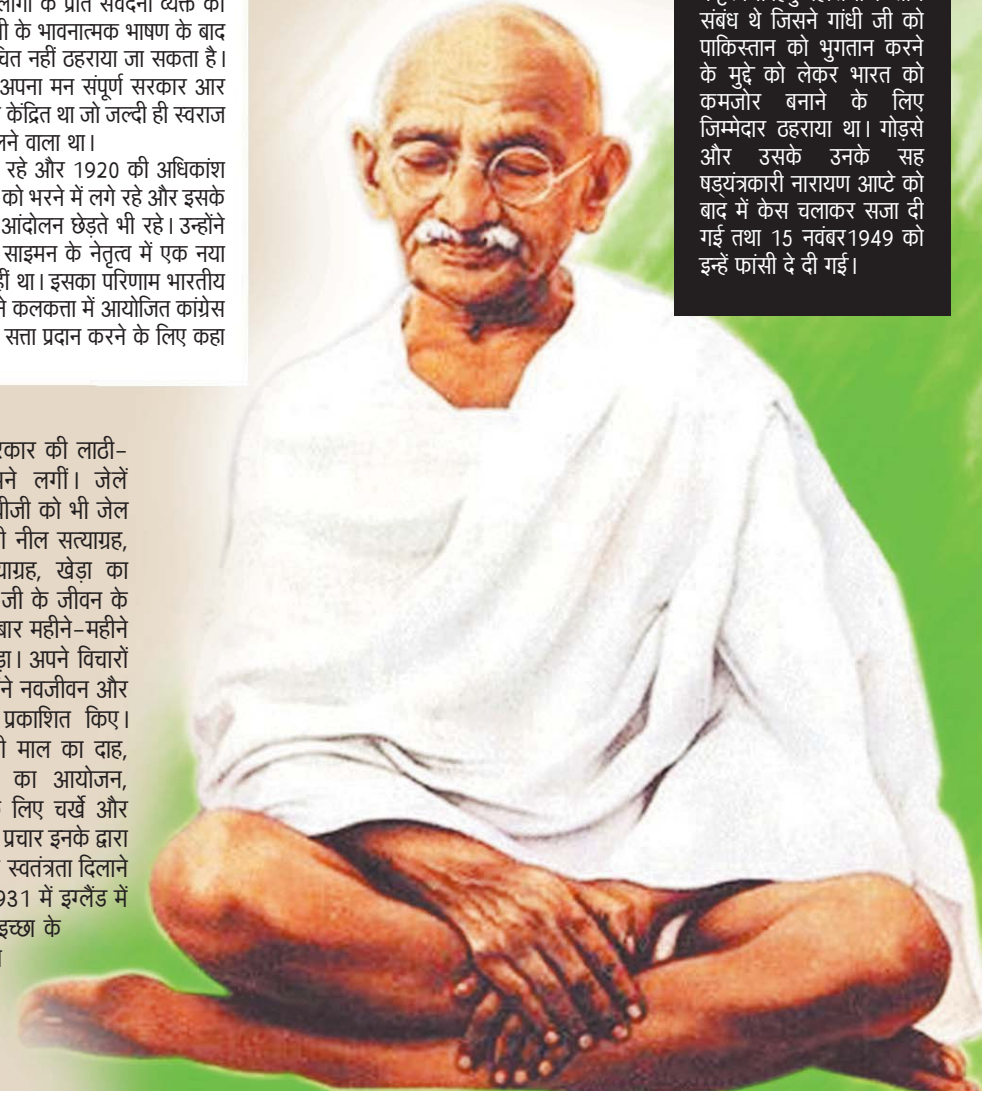

## एक्स ने अब तक क्रिएटर्स को किया 166 करोड़ रुपये से ज्यादा का भुगतान

नई दिल्ली । अपने प्लेटफॉर्म पर यूजर्स को बनाए रखने के लिए, एक्स कॉर्प ने अब तक क्रिएटर्स को लगभग 20 मिलियन डॉलर ( 166 करोड़ रुपये से अधिक) का भुगतान किया है। यह खुलासा सीईओ लिंडा याकारिनो ने किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने जुलाई में क्रिएटर्स को अन्य वेरिफाइड यूजर्स को उनके पोस्ट के जवाब में दिखाए गए विज्ञापनों से अर्जित विज्ञापन राजस्व के एक हिस्से के लिए भुगतान करना शुरू कर दिया। याकारिनो ने शुक्रवार देर रात एक्स पर पोस्ट किया, कि क्रिएट, कनेक्ट, कलेक्ट ऑल ऑन एक्स। हम क्रिएटर्स जैसे नए सेगमेंट की आर्थिक सफलता को सक्षम कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा ?कि अब तक हमने अपने निर्माता समुदाय को लगभग 20 मिलियन डॉलर का भुगतान किया है। एक्स के मालिक एलन मस्क के अनुसार, जुलाई में पहला भुगतान लगभग 5 मिलियन डॉलर था। क्रिएटर्स को अब यूजर्स से उनके ट्वीट का जवाब देने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। एक्स ने क्रिएटर्स के लिए अपने नए लॉन्च किए गए विज्ञापन राजस्व साझाकरण कार्यक्रम के तहत भारत सहित क्रिएटर्स को विज्ञापन राजस्व में से उनके हिस्से का भुगतान करना शुरू किया। दुनिया भर के कई क्रिएटर्स ने साझा किया है कि उन्हें माइक्रो-ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म से इसके नए प्रोग्राम के माध्यम से कितना पैसा मिला है। क्रिएटर ऐड रेवेन्यू के लिए पात्र होने के लिए, आपको एक्स प्रीमियम या वेरिफाइड आर्गेनाइजेशन को सब्सक्राइब करना होगा, पिछले 3 महीनों के भीतर आपके कम्युलेटिव पोस्ट पर कम से कम 5 मिलियन ऑर्गेनिक इंप्रेशन होने चाहिए और कम से कम 500 फॉलोअर्स होने चाहिए। योग्य यूजर्स ऐप के मुद्रीकरण अनुभाग के भीतर से शामिल होने और भुगतान सेट करने में सक्षम हैं। एक बार जब आप जॉइन और सेटअप पेआउट पर क्लिक करते हैं तो आपको अपना हिस्सा प्राप्त करने के लिए अकाउंट स्थापित करने के लिए हमारे पेमेंट प्रोसेसर, स्ट्राइप पर रीडायरेक्ट किया जाएगा। यह स्ट्राइप अकाउंट वह होगा जहां आप अपने बाहरी बैंक अकाउंट में फंड ट्रांसफर कर सकेंगे। एक बार जब आप विकल्प चुन लेते हैं, तो आपको नियमित गति से भुगतान प्राप्त होगा, इसके लिए 10 डॉलर से अधिक आया होनी चाहिए।

## किलारी के भूकंप ने देश को आपदा प्रबंधन का गुर सिखाया

लातूर, । राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) अध्यक्ष शरद पवार ने कहा है कि 1993 में किलारी में महसूस किए गए भूकंप की वजह से देश ने आपदा प्रबंधन का गुर सीखा और व्यक्तिगत स्तर पर उन्हें भविष्य के सभी संकटों का सामना करने का साहस मिला। श्री पवार ने शनिवार को किलारी गांव में भूकंप कार्रवाई समिति द्वारा आयोजित आभार पुरस्कार समारोह में अपने विचार साझा किये कहा, 'मैंने जो काम किया, वह एक जिम्मेदारी थी। हजारों लोगों ने मदद के लिए हाथ बढ़ाया था। ऐसे कई व्यक्ति और संगठन थे, जिन्होंने दान दिया था। भूकंप के दो घंटे के भीतर, मैं लातूर के तत्कालीन संरक्षक मंत्री विलासराव देशमुख, धाराशिव के संरक्षक मंत्री डॉ. पद्मसिंह पाटिल के साथ किलारी पहुंचा था।' उन्होंने कहा, 'मैं कामकाजी संगठनों, अधिकारियों और व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं।' उन्होंने शांतिलाल मुथा को भी विशेष सम्मान से नवाजा। श्री मुथा ने भूकंप में अपने माता-पिता को खोने वाले सैकड़ों बच्चों की देखभाल की।

## बारामूला में पुलिस ने 403 ड्रग तस्करों को गिरफ्तार किया, 12 करोड़ रुपये के नशीले पदार्थ बरामद

श्रीनगर। पुलिस ने इस साल जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में 403 ड्रग तस्करों को गिरफ्तार किया है और उनके कब्जे से 12.28 करोड़ रुपये की ड्रग बरामद की है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 30 सितंबर तक पुलिस ने नारकोटिक्स ड्रग एंड फोटोट्रॉपिक सब्सटेंस (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत 231 मामले दर्ज किए हैं, जिसके कारण 403 ड्रग तस्करों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें 62 कुख्यात ड्रग तस्कर शामिल हैं। इन लोगों के खिलाफ पीआईटी एनडीपीएस पीएसए के तहत मामला दर्ज किया गया है। इसके अतिरिक्त ड्रग तस्करों की 2.1 करोड़ रुपये की संपत्ति भी कुर्क की गई है, जिनमें तीन घर, तीन वाहन और 1.2 करोड़ रुपये की नकदी शामिल है। जब्त किए गए मादक पदार्थ में 3.47 करोड़ रुपये मूल्य की 2.670 किलोग्राम ब्राउन शुगर, 5.96 करोड़ रुपये मूल्य की 4.262 किलोग्राम हेरोइन, 56.22 लाख रुपये मूल्य की 11.245 किलोग्राम चरस तथा 1.16 करोड़ रुपये की कीमत के 194.492 किलोग्राम अनार का भूसा और भांग का पाउडर शामिल है। पुलिस ने इस साल सितंबर तक 28 वाहन भी जब्त किये हैं। बारामूला पुलिस ने हालाँकि, नशीले पदार्थों की तस्करी के खिलाफ अपने निरंतर अभियान के तहत उल्लेखनीय सफलता हासिल की है, क्योंकि हाल के महीनों में पंजीकृत मामलों की संख्या में काफी गिरावट आई है। पुलिस ने ड्रग तस्करों की 2.1 करोड़ रुपये की संपत्ति भी जब्त की है, जिसमें तीन घर, तीन वाहन और 1.2 करोड़ रुपये की नकदी शामिल है।

## भारत में कोविड-19 के 56 नये मामले सामने आए

नई दिल्ली। भारत में एक दिन में कोविड-19 के 56 नये मामले आए, जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या 440 दर्ज की गई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के रविवार सुबह आठ बजे तक अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, भारत में कोरोना वायरस संक्रमण से जान गंवाने वाले लोगों की संख्या 5,32,032 पर स्थिर है। देश में संक्रमण के कुल मामलों की संख्या बढ़कर 4,49,98,838 हो गई है। आंकड़ों के मुताबिक, इस बीमारी से उबरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 4,44,66,366 हो गई है और स्वस्थ होने वाले लोगों की राष्ट्रीय दर 98.81 प्रतिशत है। कोविड-19 से मृत्यु दर 1.18 प्रतिशत दर्ज की गई है। मंत्रालय की वेबसाइट के अनुसार, अभी तक देशव्यापी टीकाकरण अभियान के तहत कोविड-19 रोधी टीके की 220.67 करोड़ से अधिक खुराक दी जा चुकी हैं।

## गणेश विसर्जन के दौरान फैलाया ध्वनि प्रदूषण, अब दर्ज हुआ मामला

भदोही। भदोही जिले में गणेश प्रतिमा विसर्जन और बारावफात के जुलूस में तेज़ आवाज़ से डीजे बजाकर ध्वनि प्रदूषण फैलाने और घंटों सड़क जाम करने के आरोप में शनिवार को 14 डीजे संचालकों के खिलाफ शहर कोतवाली में मामला दर्ज किया गया। ये जुलूस 28 सितंबर को निकाले गए थे। शनिवार रात जारी एक बयान में पुलिस ने कहा, गणेश प्रतिमा विसर्जन और बारावफात के जुलूस (28 और 29 सितंबर) में डीजे संचालकों ने वाहन की क्षमता से अधिक साउंड बाक्स लगाकर नियमों का उल्लंघन किया। चौदह डीजे संचालकों और इनके मालिकों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। शहर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक अजय कुमार सेठ ने बताया की कटरा पुलिस चौकी इंचार्ज महेश कुमार सिंह की तहरीर पर कुल 14 डीजे संचालकों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया। उन्होंने बताया कि 28 सितंबर को गणेश प्रतिमा विसर्जन और बारावफात जुलूस के दौरान वाहनों पर काफी संख्या में बड़े डीजे और वूफर लगाने से बिजली के तार, खम्भे ,और अन्य सरकारी संपत्ति क्षतिग्रस्त हो गई। कई जगह बिजली आपूर्ति और वाई फाई बाधित हुई और सड़क जाम होने से यातायात घंटों बाधित रहा।

## भोपाल में टला बड़ा हादसा,आईएएफ के हेलीकॉप्टर की खेत में कराई गई इमरजेंसी लैंडिंग

भोपाल। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में एक बड़ा हादसा टल गया है। भोपाल में वायुसेना के एक विमान की इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी है। भोपाल से लगभग 60 किलोमीटर दूर इस हेलीकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई है। माना जा रहा है कि तकनीकी खराबी होने के कारण इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। बता दें कि इस हेलीकॉप्टर में भारतीय एयरफोर्स के 6 जवान सवार थे।

# मुख्य चुनाव आयुक्त का बड़ा ऐलान, पहली बार घर से वोट डाल सकेंगे बुजुर्ग और विकलांग भी

**जयपुर (एजेंसी)।** मुख्य चुनाव आयुक्त ने रविवार को कहा कि चुनाव आयोग स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें मतदान आम आदमी के लिये आसान बनाना और मतदान प्रतिशत बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। आयुक्त ने यह भी कहा कि आयोग के समक्ष अनिवार्य मतदान का कोई प्रस्ताव नहीं है। जयपुर में संवाददाताओं से बातचीत में मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने बताया कि चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को अखबारों में विज्ञापन देकर अपने आपराधिक रिकॉर्ड के बारे में बताना होगा। इसके साथ ही राजनीतिक दलों को यह कारण भी बताना होगा कि पार्टी ने उसे उम्मीदवार के तौर पर क्यों चुना है।

उन्होंने बताया कि राजस्थान में पहली बार बुजुर्ग मतदाताओं के साथ-साथ 40 प्रतिशत विकलांगता वाले व्यक्तियों के लिए भी घर से वोट देने की सुविधा उपलब्ध होगी। अनिवार्य मतदान के बारे में पूछे गये सवाल पर उन्होंने कहा, चुनाव आयोग के समक्ष अनिवार्य मतदान का कोई प्रस्ताव नहीं है। कुमार ने कहा कि मतदान प्रतिशत बढ़ाने और मतदान में आसानी बढ़ाने के लिए पहल की गई है, साथ ही, राज्य में कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सीमा क्षेत्र, खासकर हरियाणा और पंजाब सीमा पर शराब और नकदी के परिवहन की जांच करने के सख्त निर्देश दिए गए हैं।

उन्होंने बताया कि राज्य में कुल 5.25 करोड़ मतदाता हैं जिनमें 2.73 करोड़ पुरुष, 2.51 करोड़ महिला और 604 ट्रांसजेंडर शामिल हैं।उन्होंने बताया कि 18462 मतदाता 100 वर्ष से अधिक आयु के हैं, 11.8 लाख 80 वर्ष से अधिक आयु के हैं और 21.9 लाख पहली बार मतदाता हैं। आयोग के सदस्यों के साथ अपने प्रदेश दौरे के दौरान आयोग ने शुक्रवार से चुनाव तैयारियों के संबंध में राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ कई बैठकें कीं। आयोग ने तीन दिवसीय दौरे के दौरान राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों, मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक, जिला कलेक्टरों और जिला पुलिस अधीक्षकों और अन्य अधिकारियों के साथ बैठकें कीं। चुनाव में 1600 मतदान केंद्रों का प्रबंधन महिलाएं, 200 केंद्रों का प्रबंधन दिव्यांगजन और 1600 केंद्रों का प्रबंधन नवनियुक्त युवाओं द्वारा किया जाएगा। कुल 51756 मतदान केंद्रों में से 50 प्रतिशत की वेबकास्टिंग भी की जायेगी।

## भारत में अफगान दूतावास ने बंद किया काम, बताया फैसले के पीछे अहम कारण

नई दिल्ली। भारत में अफगान दूतावास आज से यानी 1 अक्टूबर से बंद हो रहा है। अफगानिस्तान के दूतावास ने 1 अक्टूबर से कामकाज बंद करने का ऐलान किया है। अफगानिस्तान का दावा है कि मेजबान देश यानी भारत सहयोग नहीं कर रहा इस कारण दूतावास को बंद किया जा रहा है। बता दें कि अफगानिस्तान दूतावास ने यह घोषणा शनिवार की रात को की थी। शनिवार को एक घोषणा कर अफगान दूतावास ने बताया था कि वह कामकाज बंद कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने यह भी कहा था कि यह घोषणा करने में उन्हें बहुत अफसोस हो रहा है। बहुत ही निराशा के साथ नई दिल्ली में अफगानिस्तान टूटा हुआ सपना कामकाज बंद करने के फैसले का ऐलान कर रहा है। अफगान दूतावास से अपने बयान में बताया है कि मिशन को प्रभावित तरीके से नहीं चल पाने के पीछे कुछ अहम कारण है। इसके लिए अफगान दूतावास ने भारत को भी अहम कारण बताया है। अफगान दूतावास ने एक बयान में कहा कि उसे इस फैसले की घोषणा करते हुए अफसोस हो रहा है। बयान के अनुसार, ''बड़े दुख और निराशा के साथ नयी दिल्ली स्थित अफगानिस्तान दूतावास अपना कामकाज बंद करने के इस फैसले की घोषणा कर रहा है।'' दूतावास ने अपने बयान में मिशन को प्रभावी तरीके से नहीं चला पाने के कुछ कारक गिनाये हैं और कहा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय के ये ही प्रमुख कारण हैं। उसने आरोप लगाया कि उसे मेजबान देश से अहम सहयोग की कमी महसूस हो रही है जिसकी वजह से वह प्रभावी तरीके से अपना काम नहीं कर पा रहा। दूतावास ने अफगानिस्तान के हितों को पूरा करने में अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरने की भी बात कही है।

# स्वच्छता अभियान पर केन्द्र और राज्य के नेताओं ने लगाई झाड़ू

### -गांधी जयंती पर शुरु भाजपा का स्वच्छता पखवाड़ा

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** देशभर में आज स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। महात्मा गांधी की 154वीं जयंती से पहले केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने अभियान का आगाज किया। इस अवसर पर केन्द्र और राज्य के अनेक केंद्रीय मंत्री और मुख्यमंत्री सतह पर उतरकर स्वच्छता अभियान में अपना सहयोग दे रहे हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी समेत कई नेताओं ने झाड़ू उठा लिया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुजरात के अहमदाबाद में स्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया वहीं गृह मंत्री कई भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ नजर आए।

इस मौके पर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी एक साथ अंबेडकर नगर बस्ती में अभियान का आगाज करते नजर आए। जेपी नड्डा ने कहा, कि भारतीय जनता पार्टी स्वच्छता पखवाड़ा के तहत स्वच्छता अभियान चला रही है। देश भर के कार्यकर्ता स्वच्छता अभियान में जुटे हुए हैं। केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी के साथ स्वच्छता अभियान में हिस्सा लेने पहुंचे नड्डा ने महात्मा गांधी के स्वच्छता अभियान को आगे बढ़ाने का आह्वान किया

उन्होंने कहा कि आइये संकल्प लें कि इस जन आंदोलन से जुड़कर जीवन में सदैव स्वच्छता को

ध्यान में रखते हुए जीवनशैली अपनायेंगे।उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि महात्मा गांधी ने स्वच्छता का जो सपना देखा और मोदी जी ने जिस सपने को साकार किया है, हम उसे और मजबूती से आगे ले जाए।

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने रेलवे बोर्ड और उत्तर रेलवे के अधिकारियों के साथ स्वच्छता अभियान कार्यक्रम में भाग लिया। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वंदे भारत ट्रेन के लिए 14 मिनट का क्लीन-अप प्रोटोकॉल तैयार किया गया है। आज 35 जगहों पर इसकी शुरुआत होगी और फिर बाद में इसे आगे बढ़ाया जाएगा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चक्रतीर्थ नैमिषारण्य में स्वच्छता अभियान कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर वे भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ सीतापुर क्षेत्र में झाड़ू लगाकर स्वच्छता के प्रति कर्तव्यबोध का अहसास कराया।

## भारत में भी शुरु हुई जापान की बुलेट ट्रेन जैसी सफाई तकनीक

### -रेलमंत्री वैष्णव ने दी जानकारी, सिर्फ 14 मिनट में साफ होगी वंदे भारत ट्रेन

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारतीय रेलवे ने 1 अक्टूबर से ट्रेनों की त्वरित सफाई के लिए '14 मिनट के चमत्कार' को मूर्त रुप दिया है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि अब भारत में भी जापान की बुलेट ट्रेन जैसी साफ-सफाई की तकनीक शुरु कर दी गई है। स्च्छता के मामले में यह एक बड़ा कदम बताया जा रहा है। इस काम की शुरुआत देश भर में उनके संबंधित गंतव्य स्टेशनों पर 32 वंदे भारत ट्रेनों से होगी। इसकी औपचारिक शुरुआत रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन में करने जा रहे हैं। जापान की बुलेट ट्रेनों में देखी गई तीव्र सफाई व्यवस्था का अनुकरण करते हुए भारतीय रेलवे ने भी इसी तर्ज पर तैयारी की है। बताया जा रहा है कि जापान में बुलेट ट्रेन को साफ करने में 7 मिनट का समय मिलता है। भारतीय रेलवे भी ट्रेन की सफाई के मानकों को फिर से परिभाषित करने के लिए तैयार है। वैष्णव ने संवाददाताओं से कहा कि वंदे भारत ट्रेनों को 14 मिनट के भीतर साफ कर दिया जाएगा ताकि उनकी समयबद्धता और टर्नअराउंड टाइम में सुधार किया जा सके।

रेल मंत्री ने कहा, कि यह एक अनोखी अवधारणा है और भारतीय रेलवे में पहली बार ऐसा हो रहा है। इस गतिविधि में पहले से लगे फ्रंट-लाइन कार्यबल की संख्या में वृद्धि किए बिना सफाई कर्मियों की दक्षता, कौशल और कामकाजी रवैये को बढ़ाकर यह सेवा संभव हो गई है। दिल्ली कैंट के अलावा, कुछ अन्य रेलवे स्टेशन जहां इसे शुरू किया जाएगा, वे हैं वाराणसी, गांधीनगर, मैसूर और नागपुर, जो वंदे भारत ट्रेनों के संबंधित आगमन समय पर निर्भर करता है। इस व्यवस्था को लॉन्च करने से पहले, रेलवे ने कुछ ड्राई-रन किए, जहां परिचारकों ने पहले ट्रेन को लगभग 28 मिनट में साफ किया और फिर इसमें सुधार कर 18 मिनट तक लाया गया।

रेल मंत्री ने कहा कि अब इसमें बिना किसी नई तकनीक को शामिल किए केवल 14 मिनट लगेंगे। वंदे भारत से शुरू करके धीरे-धीरे अन्य ट्रेनों में भी यही सफाई को लेकर यही व्यवस्था लागू की जाएगी, जिसका उनकी समयपालनता में सुधार पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। बता दें कि भारतीय रेलवे ने सितंबर में एक पखवाड़े तक चलने वाला स्वच्छता अभियान को शुरू किया, जिसमें रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और सीईओ ने नई दिल्ली में रेल भवन से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रेलवे अधिकारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई।

## जेएनयू में फिर लिखे गए विवादित नारे, छात्र संगठन एबीवीपी ने की जांच की मांग

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी एक बार फिर से चर्चा में आ गई है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में नाफरती मामला एक बार फिर से सामने आया है। यूनिवर्सिटी की दीवारों पर विवादित नारे लिखे जाने का मामला सामने आया है। यूनिवर्सिटी की दीवारों पर लिखे गए तारों को लेकर छात्र संगठनों ने गहरी आपत्ति जताई है। इससे पहले भी कई बार जेएनयू कैंपस में इस तरह के विवादित मामले सामने आते रहे हैं।

### कांग्रेस नेता ने दिया विवादित बयान

जेएनयू में देश विरोधी नई लिखे जाने की खबर के बाद कांग्रेस नेता रिटायर्ड कर्नल रोहित चौधरी ने विवादित बयान दे दिया है। करनाल रोहित चौधरी ने कहा कि बहुत सी चीज राज्य प्रायोजित होती है। उन्होंने कहा कि आज का समय व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी का समय है जिसमें दुष्प्रचार करने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाए जाते है।

### छात्र संगठनों ने की जांच की मांग

दीवारों पर लिखे गए विवादित नारों की बात सामने आने के बाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने इस मामले की जांच करने की मांग की है। एबीवीपी ने कहा है कि इस मामले को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और जेएनयू प्रशासन से इस मामले की जांच की मांग की है। इस संबंध में एबीवीपी ने जेएनयू प्रशासन को ज्ञापन भी सौंपा है। जानकारी मिली है कि जो नर जेएनयू की दीवारों पर लिखी गई है वह भारतीय जनता पार्टी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कश्मीर से संबंधित है। बता दे कि अब तक के सामने नहीं आया कि है कि इन तारों को किसने लिखा है और इन नारों को लिखने के पीछे क्या कारण है।

## पंजाब में कांग्रेस-आप के घमासान के बीच 'इंडिया' गठबंधन पर नवजोत सिंह सिद्धू ने दिया बड़ा बयान

**चंडीगढ़ (एजेंसी)।** कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू ने रविवार को कहा कि विपक्षी दलों का गठबंधन 'इंडिया' एक 'ऊंचे पहाड़' की तरह खड़ा है और इसकी शान यहां-वहां आने वाले तूफान से प्रभावित नहीं होगी। सिद्धू का यह बयान ऐसे वक्त आया है, जब पंजाब में कांग्रेस की प्रदेश इकाई के प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वडिंग और विधानसभा में विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा सहित कई कांग्रेस नेता 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले राज्य में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) के साथ गठबंधन का विरोध कर रहे हैं। सिद्धू ने कहा, ''पंजाब को यह समझना चाहिए कि यह भारत के प्रधानमंत्री को चुनने का चुनाव है, न कि पंजाब का मुख्यमंत्री चुनने का।''

सिद्धू ने 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर पोस्ट किया, ''इंडिया गठबंधन एक ऊंचे पहाड़ की तरह खड़ा है...यहां-वहां आने वाले तूफान से इसकी शान पर कोई असर नहीं पड़ेगा। हमारे लोकतंत्र की रक्षा के लिए इस ढाल को तोड़ने का कोई भी प्रयास निरर्थक साबित होगा।'' सिद्धू की यह टिप्पणी प्रदेश कांग्रेस प्रमुख वडिंग द्वारा 2015 के मादक पदार्थ मामले में पार्टी विधायक सुखपाल सिंह खैरा की गिरफ्तारी को ''राजनीतिक प्रतिशोध'' बताए जाने के कुछ दिनों

बाद आई है। भुलथ के विधायक खैरा की गिरफ्तारी से पंजाब में कांग्रेस और आप के बीच दूरियां बढ़ गई हैं। दोनों दलों के 'इंडिया' के सदस्य होने के कारण पंजाब में कांग्रेस नेताओं ने पूर्व में संकेत दिया था कि वे राज्य में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी के साथ किसी भी तरह के गठबंधन के खिलाफ हैं।

एक सितंबर को 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) ने मुंबई में अपनी बैठक में 2024 के लोकसभा चुनावों को ''जहां तक संभव हो'' एक साथ लड़ने का संकल्प लेते हुए इस बात पर जोर दिया कि राज्यों में सीट-बंटवारे की व्यवस्था ''सहयोगात्मक भावना'' के साथ जल्द से जल्द संपन्न की जाएगी। विपक्षी गठबंधन के नेताओं ने 14 सदस्यीय समन्वय समिति का गठन किया है जो गठबंधन की सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था के रूप में कार्य करेगी और सीट बंटवारे पर काम शुरू करेगी। गठबंधन के नेताओं ने यह भी विश्वास जताया कि नया मोर्चा भाजपा को आसानी से हरा देगा।

# चांद से भी परे पहुंचेंगे भारत और अमेरिका के संबंध : एस. जयशंकर

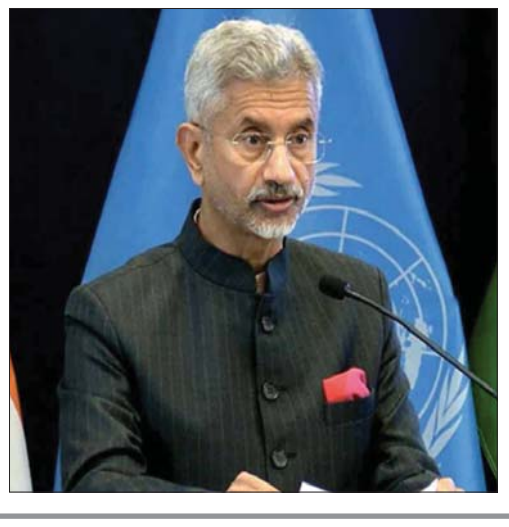

### -विदेश मंत्री ने चंद्रयान से की भारत और अमेरिका के संबंधों की तुलना

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि भारत और अमेरिका के संबंध चन्द्रयान के समान हैं, जो अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच रहे हैं उन्होंने कहा कि पीएम नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार उन्हें एक अलग स्तर तक लेकर जाएगी। ये द्विपक्षीय संबंध चंद्रयान की तरह चांद पर और उससे भी परे पहुंचेंगे। भारतीय दूतावास द्वारा शनिवार को यहां आयोजित 'सेलिब्रेटिंग कलर्स ऑफ फ्रेंडशिप' कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए अमेरिका के विभिन्न हिस्सों से 'इंडिया हाउस' में एकत्र हुए सैकड़ों भारतीय-अमेरिकियों को संबोधित करते हुए जयशंकर ने कहा कि आज एक स्पष्ट संदेश है कि हमारा रिश्ता अब तक के उच्चतम स्तर पर है, लेकिन जैसा कि अमेरिका में कहा जाता है कि आपने अभी तक कुछ भी नहीं देखा है, हम इन संबंधों को एक अलग स्तर, एक अलग जगह ले जाने वाले हैं। जयशंकर ने कहा कि जी20 की सफलता अमेरिका के सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकती थी। उन्होंने कहा कि जब चीजें अच्छी होती हैं, तो हमेशा मेजबान को इसका श्रेय मिलता है।

एस. जयशंकर ने भारतीय-अमेरिकियों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कहा कि मैं आज इस देश में हूं, खासकर इसलिए मुझे यह कहना चाहिए कि जी20 को सफल बनाने के लिए जो योगदान, जो सहयोग और समझ हमें अमेरिका से मिली, उसकी मैं वाशिंगटन डीसी में सार्वजनिक तौर पर सराहना करना चाहूंगा। उन्होंने कहा, तो, शाब्दिक रूप से यह हमारी सफलता हो सकती है, लेकिन मुझे लगता है कि यह जी20 (राष्ट्रों) की सफलता थी। मेरे लिए, यह भारत-अमेरिका साझेदारी की भी सफलता थी, कृपया इस साझेदारी को वह समर्थन देते रहें, जिसकी उसे आवश्यकता है, जिसकी यह हकदार है और जिसकी अपेक्षा है।

विदेश मंत्री ने कहा कि मैं आपसे वादा कर सकता हूं कि ये संबंध चंद्रयान की तरह चंद्रमा तक, शायद उससे भी आगे तक जाएंगे। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच मानवीय संबंध इस द्विपक्षीय संबंध को और अनूठा बनाते हैं। जयशंकर ने कहा कि द्विपक्षीय संबंधों के निर्माण में प्रवासी भारतीयों का अत्यधिक योगदान है। उन्होंने कहा कि इसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। इसी आधार के सहारे हम आगे देख रहे हैं, क्षितिज पर नयी आशा देख रहे हैं, इसलिए, मुझे लगता है कि जब हम क्षितिज को देखते हैं, तो हमें वहां वास्तव में शानदार संभावनाएं दिखाई देती हैं और यह समुदाय ही इन्हें संभव बनाएगा।

## पूर्वी पंजाब में पुलिस की चौकी पर हमला, एक अधिकारी की मौत

मुल्तान। पाकिस्तानी तालिबान के लड़ाकों ने पूर्वी पंजाब प्रांत में शनिवार देर रात एक पुलिस चौकी पर हमला किया जिसमें एक अधिकारी की मौत हो गई जबकि तीन अन्य घायल हो गए। इस हमले के बाद हुई मुठभेड़ में दो हमलावरमारे गए। यह जानकारी अधिकारियों ने दी। आतंकरोधी पुलिस के प्रवक्ता इमरान नवाज ने बताया कि यह हमला पंजाब प्रांत के मियांवाली जिले में हुआ। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों से घिरी चौकी पर अतिरिक्त सुरक्षाकर्मियों के पहुंचने पर दोनों पक्षों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई। उन्होंने बताया कि 10 से 12 आतंकवादियों के एक समूह ने मध्यरात्रि के बाद मियांवाली के ईसा खेल इलाके स्थित कुंडल पुलिस चौकी पर हमला किया। नवाज ने बताया कि सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच कई घंटे चली मुठभेड़ के दौरान दो हमलावरों को मार गिराया गया। उन्होंने बताया कि मुठभेड़ में एक अन्य आतंकी घायल भी हुआ लेकिन वह अपने अन्य साथियों के साथ भागने में सफल रहा। प्रवक्ता ने बताया कि हमलावरों को ढूंढने के लिए इलाके में खोज अभियान जारी है। तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान के प्रवक्ता मोहम्मद खुरासनी ने हमले की जिम्मेदारी ली है।

## तुर्की में पुलिस मुख्यालय में हुआ आतंकी हमला, एक ने खुद को उड़ाया दूसरे ने सुरक्षा बलों को निशाना बनाया

अंकारा। तुर्की की राजधानी अंकारा में पुलिस मुख्यालय बड़े आतंकी हमले का शिकार हुआ है। पुलिस मुख्यालय पर 1 अक्टूबर की सुबह यह बड़ा आतंकी हमला हुआ। ऐसा था कि हमले में एक फिदायीन की मौत हो गई है। एक अन्य फिदायीन को सुरक्षा बलों ने देर कर दिया। बता दें कि इस ब्लास्ट में कितने लोग घायल हुए हैं और कितने लोगों की जान गई है इस संबंध में कोई जानकारी अब तक सामने नहीं आई है। इस आतंकी हमले के संबंध में तुर्की के गृहमंत्री अली येरलिकाया ने सोशल मीडिया के जरिए बताया कि एक कमर्शियल गाड़ी के साथ नेशनल पुलिस हेडक्वार्टर की बिल्डिंग के पास सुबह दो आतंकवादी पहुंचे थे। एक आतंकवादी ने खुद को उड़ा लिया। दूसरे आतंकवादी को पुलिस मुठभेड़ में मार गिराया गया है। इस पूरी घटनाक्रम के दौरान दो पुलिस अधिकारी भी घायल हुए हैं। बता दें कि तुर्की में एक अक्टूबर से ही संसद दोबारा शुरू हुई है इससे पहले गर्मियों की छुट्टियों के कारण संसद बंद चल रही थी। बता दें कि इससे पहले संसद भवन और गृह मंत्रालय भवन के पास भी हमला हुआ था। इन सभी हम भावनाओं के आसपास सुरक्षा कर कड़ी कर दी गई है।

## फ्रांस में खटमलों से निपटने के लिए विशेष अभियान

पेरिस। फ्रांस में ऐसी कोई जगह नहीं बची है, जहां खटमल न हों। इस समस्या से निपटने सरकार को इमरजेंसी मीटिंग बुलानी पड़ी। सरकार ने ऐलान किया है कि वह खटमलों से निपटने के लिए विशेष अभियान शुरू करने जा रही है। फ्रांस के यातायात मंत्री क्लीमेंट बियॉन ने बताया कि उन्होंने अलगे हफ्ते अलग-अलग डिपार्टमेंट के प्रतिनिधियों की एक आपात बैठक बुलाई है। जिसमें खटमल से निपटने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी दी जाएगी। आपको बता दें कि हाल के दिनों में फ्रांस में बेड बग यानी खटमल बहुत बड़ी समस्या बन गए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक प्रत्येक 10 में से एक परिवार इस समस्या से जूझ रहा है। सबसे ज्यादा समस्या सार्वजनिक स्थानों पर है। लोग खटमल से निजात के लिए बार-बार पेस्ट कंट्रोल की मदद ले रहे हैं और हजारों यूरो खर्च कर रहे हैं। इसके बावजूद समस्या जस की तस है। पेस्ट कंट्रोल के कुछ दिनों बाद ही खटमल वापस आ जाते हैं। समस्या ज्यादा परेशानी फ्रांस की राजधानी पेरिस में है। पेरिस सिटी हॉल तो खटमलों के आतंक से इतना तंग आ गया कि राष्ट्रपति इमैनुअल मैंक्रों से स्पेशल टास्क फोर्स बनाने की मांग की है। उधर, फ्रांस की राष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंसी ने लोगों से अपील की है कि अगर होटल ठहर रहे हैं तो खटमल की जांच जरूर कर लें। एजेंसी ने लोगों से सेकेंड हैंड फर्नीचर और मैट्रेस ना खरीदने की अपील की है। एजेंसी ने बाकायदा एक सर्कुलर भी जारी किया है, जिसमें खटमल से निपटने के तरीके बताए हैं। कहा है कि अगर घर में खटमल दिखें तो फौरन इसका ट्रीटमेंट करवा लें, वरना ये बहुत तेजी से फैल सकते हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक फ्रांस में 1950 के दशक में ठीक इसी तरह खटमलों की समस्या थी। लेकिन उसके बाद ज्यादातर घरों से खटमल गायब हो गए। लेकिन पिछले कुछ सालों में दोबारा खटमलों की संख्या बढ़ी और अब यह विकराल समस्या बन गई है। हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक खटमल के काटने से डिप्रेशन, एंग्जायटी से लेकर नींद से जुड़ी बीमारियां हो सकती हैं। स्किन इन्फेक्शन भी हो सकता है।पेरिस सिटी हॉल के मुताबिक खटमल से परेशान होकर टूरिस्ट वापस लौट रहे हैं। जगह-जगह शिकायत कर रहे हैं।

## मकड़ी काटने के बाद 76 दिन तक जूझना पडा बच्ची को, हाथ में वायरस की तरह फैली खतरनाक बीमारी

टेक्सास। एक खतरनाक मकड़ी के मासूम बच्ची को काटने के बाद 76 दिन तक उसे जिंदगी के लिए संघर्ष करना पडा। बच्ची की मां जेसिका कैलविलो ने इस दर्दनाक अनुभव को जागरूकता फैलाने के लिए आम लोगों में साझा किया। उन्होंने अन्य माता-पिता को सशक्त बनाने की उम्मीद से टिकटॉक पर अपनी दर्द से लड़कर जीतने वाली बेटी के अनुभव को साझा किया। उसके ठीक होने के संघर्ष में 'टेक्सास स्लिंग' में तीन दिन भी शामिल थे, जिसमें ब्लड सर्कुलेशन की कमी के कारण उसकी बांह को सिर के ऊपर लटकाया गया था। बच्ची की मां ने पूरी कहानी को साझा किया है। दरअसल, 9 साल की एडलिन मैकडॉवेल नाम की एक 9 वर्षीय लड़की ने कपड़े बदलते समय कुछ चुभने की शिकायत की थी। अगले दिन, जब वह नाइटगाउन उतार रही थी, तो उसे अपनी बांह पर एक छोटी सी चुभन महसूस हुई। उसने अपनी मां से कहा कि वह नाइटगाउन हटाना चाहती है, क्योंकि उसमें एक टैग लगा है जो उसे चुभ रहा है। उसकी मां, जेसिका कैल्विलो ने एडलिन को स्कूल छोड़ा। उसने लोगों से कहा, 'वह बिल्कुल ठीक, खुश और स्वस्थ थी। और फिर, दोपहर के समय, उसे कुछ लक्षण शुरू हो गए।' लड़की 'अपनी बांह में अत्यधिक दर्द' का अनुभव कर रही थी। श्रीमती कैलविलो ने मीडिया आउटलेट को बताया, 'उसने कहा कि ऐसा लगा जैसे उसकी बगल में बिजली गिरी हो। फिर उसे बुखार आना शुरू हो गया। उसकी त्वचा पीली और चिपचिपी हो गई थी। उसके होंठ बैंगनी थे और वह कांप रही थी। वह एक तरह से घबरा गई। तेजी से बिगड़ते लक्षणों को देख मां अपनी बेटी को आपातकालीन कक्ष में ले गई, लेकिन डॉक्टर उसके मर्ज की पहचान नहीं कर सके। उसे दर्द से राहत के लिए कुछ एंटीबायोटिक्स दिए गए। मां ने बच्ची को मकड़ी या किसी कीड़े के काटने की बात बताई, लेकिन डॉक्टरों ने उसकी बात को नजरअंदाज कर दिया। कहा गया यह काटने का निशान नहीं है।

## माइक्रोप्लास्टिक्स ने बादलों तक खोजा अपना रास्ता

टोक्यो। माइक्रोप्लास्टिक्स ने अंतत: बादलों तक अपना रास्ता खोज लिया है। यह बडा खुलासा किया है जापानी शोधकर्ताओं ने। शोधकर्ताओं का कहना है कि माइक्रोप्लास्टिक्स का समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु परिवर्तन पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने कहा है कि ये बड़ी चेतावनी है और तुरंत प्लास्टिक को लेकर कड़े कदम उठाने होंगे वरना आने वाले समय में इसे रोका नहीं जा सकेगा। ये मानव शरीर और वातावरण के लिए बड़ा खतरा बन सकते हैं। वासेदा यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर हिरोशी ओकोची और अन्य के नेतृत्व में रिसर्च टीम ने बादलों से एकत्र किए गए पानी के 44 नमूनों की जांच की। विश्लेषकों ने पाया कि पानी में माइक्रोप्लास्टिक के कम से कम 70 कण थे। इसे कानागावा प्रान्त में योकोहामा के पश्चिम में माउंट फूजी के शिखर और तलहटी और माउंट तंजावा-ओयामा के शिखर पर पहाड़ों से जमा किया गया था। इस टीम ने अपने शोध पत्र में लिखा है कि हमारी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार, यह बादल के पानी में वायुजनित माइक्रोप्लास्टिक्स पर पहली रिपोर्ट है। रिसर्चर ने कहा है कि यदि समन्वित प्रयासों के माध्यम से बादलों में उनकी उपस्थिति को नियंत्रित नहीं किया गया तो माइक्रोप्लास्टिक जलवायु और मानव शरीर को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। वासेदा विश्वविद्यालय के प्रमुख लेखक हिरोशी ओकोची ने कहा कि अगर 'प्लास्टिक वायु प्रदूषण' के मुद्दे को सक्रिय रूप से संबोधित नहीं किया गया, तो जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक जोखिम एक वास्तविकता बन सकते हैं, जिससे भविष्य में अपरिवर्तनीय और गंभीर पर्यावरणीय क्षति हो सकती है।

# श्रीलंका के राष्ट्रपति ने न्यायाधीश के इस्तीफा मामले में जांच के आदेश दिए

**कोलंबो (एजेंसी)।** श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने तमिल-बहुल उत्तरी प्रांत के मुल्लातीवु में एक जिला न्यायाधीश के जान को खतरा बताकर उनके इस्तीफा देने के संबंध में जांच के आदेश दिए हैं। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। टी सरवनराजा ने अपने जीवन को खतरा होने का दावा करते हुए 23 सितंबर को न्यायिक सेवा आयोग को अपना इस्तीफा दे दिया और कथित तौर पर देश छोड़ दिया। विभिन्न मामलों में सुनवाई करते हुए उन्होंने एक विवादित पुरातात्विक स्थल पर बौद्ध मंदिर के निर्माण के खिलाफ फैसला सुनाया था। उसी क्षेत्र में एक कथित सामूहिक कब्र की खुदाई पर कानूनी कार्यवाही की अध्यक्षता भी सरवनराजा ने की थी। अधिकारियों के अनुसार, विक्रमसिंघे ने राष्ट्रपति के सचिव को सरवनराजा के इस्तीफे की परिस्थितियों की जांच करने का निर्देश दिया, क्योंकि न्यायाधीश ने पूर्व में अपने जीवन के लिए कथित खतरे पर कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई थी।

मुल्लातीवु के उत्तरी क्षेत्र के जिला न्यायाधीश के रूप में, सरवनराजा ने एक विवादित पुरातात्विक स्थल कुरुंथमाले में एक बौद्ध मंदिर के निर्माण के खिलाफ फैसला सुनाया था। क्षेत्र के तमिलों ने बौद्ध पुरातात्विक उत्खनन के लिए राज्य द्वारा भूमि दान में दिए जाने का दावा करते हुए इसका विरोध किया था। सरवनराजा ने उसी क्षेत्र में एक कथित सामूहिक कब्र की खुदाई पर कानूनी कार्यवाही की भी अध्यक्षता की। जून में, क्षेत्र में एक विकास परियोजना के लिए खुदाई गतिविधियों को अंजाम देते समय राष्ट्रीय जल बोर्ड के कार्यकर्ताओं द्वारा गलती से कोक्कुथुडुवई में कथित सामूहिक कब्र की खोज की गई थी। अल्पसंख्यक तमिल समुदाय ने पूर्वोत्तर जिले में कथित सामूहिक कब्र की विश्वसनीय जांच की मांग की।

लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (लिट्टे) के शीर्ष नेता वेलुपिल्लई प्रभाकरण को 2009 में श्रीलंकाई सेना ने मार गिराया था। इससे पहले 30 वर्षों तक द्वीपीय राष्ट्र के उत्तरी और पूर्वी प्रांतों में एक अलग तमिल मातृभूमि के लिए लिट्टे ने सैन्य अभियान चलाया था। लिट्टे की हार से पहले तक मुल्लातीवु संगठन का एक प्रमुख केंद्र था। श्रीलंका के बार एसोसिएशन सहित कई कानूनी संघों ने न्यायाधीश के इस्तीफे को द्वीपीय राष्ट्र में न्यायपालिका की स्वतंत्रता के लिए ''गंभीर खतरा'' बताया और न्यायिक सेवा आयोग से स्वतंत्र जांच करने का आग्रह किया।

## पाकिस्तान ने भारतीय एजेंसी रॉ पर लगाया मस्जिदों में हुए हमले का आरोप

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने आरोप लगाया है कि मस्जिदों में हो रहे हमलों के पीछे भारतीय इजेंसी रॉ का हाथ है। जब ?कि सही मायने में देखा जाए तो आतंकियों को पालने की सजा खुद पाक भुगत रहा है। जानकारी के अनुसार बलूचिस्तान के मासतुंग जिले में मस्जिद में हुए विस्फोट में मरने वालों की संख्या 65 हो गई है। वहीं खैबर पख्तूनख्वा के हंगू सिटी में हुए धणाके में 5 लोगों की जान चली गई। अपनी कमियां छिपाने के लिए पाकिस्तान इन विस्फोटों का ठीकरा भारत पर फोड़ रहा है। बलूचिस्तान की राजधानी क्वेटा में गृह मंत्री सरफराज बुगती का कहना है कि इन विस्फोटों के पीछे भारतीय खुफिया एजेंसि रॉ का हाथ है। उन्होंने कहा कि मासतुंग में हुए हमले में शामिल लोगों के खिलाफ सिविल और मिलिट्री डिपार्टमेंट कड़ा ऐक्शन लेगा। उन्होंने कहा कि इस हमले में रॉ शामिल है। पुलिस का कहना है कि उसने इस मामले में केस दर्ज किया है और आत्मघाती हमलावरों के डीएनए की जांच करवाई जाएगी। यहां गौरतलब है कि पैगंबर मोहम्मद की जयंती के मौके पर आयोजित एक जुलूस में आत्मघाती हमला किया गया था। यह विस्फोट एक पुलिस वाहन के पास हुआ था। मस्जिद के पास हुए इस हमले में कम से कम 60 लोग घायल भी हो गए थे। वहीं दूसरा अटैक खैबर पख्तूनख्वा में हुआ जहां 5 लोगों की जान चली गई। विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि मस्जिद की छत भी ढह गई। पाकिस्तानी मीडिया के मुताबिक पाकिस्तान के डिपार्टमेंट ऑफ काउंटर टेररिजम ने अज्ञात हमलावरों के खिलाफ केस दर्ज किया है। अब तक किसी भी आतंकी संगठन ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान अकसर पाकिस्तान में इस तरह के हमले करवाता रहता है।

# अस्थायी फंडिंग बिल से अमरीका में टला शटडाउन संकट

**वाशिंगटन (एजेंसी)।** अमरीकी सीनेट में फंडिंग बिल पास होने से फिलहाल शटडाउन का खतरा टल गया है। कांग्रेस ने एजेंसियों को खुला रखने के लिए एक अस्थायी फंडिंग बिल स्वीकृत कर राष्ट्रपति जो बाइडन के पास कानून बनने के लिए भेज दिया है। 1 अक्टूबर से पहले ही सीनेट में फंडिंग बिल पास हो गया, जिससे राष्ट्रपति जो बाइडन के सरकार को बड़ी राहत मिली है। सूत्रों के मुताबिक, जल्दबाजी में पास हुआ। इस दौरान व्हाइट हाउस की प्राथमिकता में जीओपी सांसदों की बढ़ती संख्या के विरोध के कारण इस फंडिंग बिल में यूक्रेन को मिलने वाली सहायता को कम कर दिया गया है। वहीं, संघीय आपदा सहायता में 16 बिलियन डॉलर की वृद्धि की गई है। गौरतलब है कि इस बिल को 45 दिनों के लिए सीनेट में मंजूरी दे दी गई है। फिलहाल 17 नवंबर तक शटडाउन का खतरा टल गया है। सदन में कई दिनों की उथल-पुथल के बाद, अध्यक्ष केविन मैक्कार्थी ने अपनी नौकरी को खतरे में डालकर बिल पारित करने के लिए डेमोक्रेट्स पर भरोसा किया।

बिल को लेकर राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि यह अमेरिकियों के लिए अच्छी खबर है, इससे संयुक्त राज्य अमेरिका किसी भी परिस्थिति में यूक्रेन के लिए अमेरिकी समर्थन को बाधित करने की अनुमति नहीं दे सकता। उन्होंने उम्मीद जताई कि मैक्कार्थी यूक्रेन के लोगों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखेंगे और इस महत्वपूर्ण क्षण में यूक्रेन की मदद करने के लिए आवश्यक समर्थन को सुरक्षित रखेंगे। देखा जाए तो अभी के लिए अमेरिका में शटडाउन का खतरा खत्म हो गया है, लेकिन ये राहत महज कुछ ही महीनों की है। आने वाले हफ्तों में कांग्रेस को ओर भी संकट का जोखिम उठाना पड़ सकता है, क्योंकि सरकार को धन देने की आवश्यकता होगी। अगर रविवार से पहले बिल पास नहीं होता तो 2 मिलियन से अधिक संघीय कर्मचारियों आरक्षित सैन्य सैनिकों को बिना वेतन काम करना पड़ता।

उल्लेखनीय है कि यह पैकेज नवंबर के मध्य तक मौजूदा वर्ष 2023 स्तरों पर सरकार को धन देता है और संघीय उड्डयन प्रशासन सहित अन्य प्रावधानों का भी विस्तार करता है। पैकेज को सदन 335-91 द्वारा अनुमोदित किया गया था, जिसमें अधिकांश रिपब्लिकन और लगभग सभी डेमोक्रेट ने समर्थन किया था। सीनेट पारित 88-9 वोट से हुआ। इस बीच यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की की हालिया वाशिंगटन यात्रा के बाद उनका समर्थन करने की कसम खाने वाले दोनों दलों के सांसदों के लिए यूक्रेन सहायता का नुकसान झेलना पड़ा।

## हाफिज सईद के करीबी की अज्ञात लोगों ने की गोली मारकर हत्या

**कराची (एजेंसी)।** आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के सरगना हाफिज सईद के करीबी कैसर फारूक की अज्ञात लोगों ने गोली मारकर हत्या कर दी है। मिली जानकारी के अनुसार अज्ञात हमलावरों ने कराची में गोली मारकर हत्या कर दी। इस घटना के बाद जेल में हाफिज सईद की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। स्थानीय मीडिया के मुताबिक सिंध प्रांत के कराची के सोहराब गोट में पोर्ट कासिम की जामिया मस्जिद अबूबकर के एक इमाम की अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी। इस मामले में जो वीडियो सामने आया है उसमें साफ तौर पर दिखाई दे रहा है कि यह इमाम मुफ्ती कैसर फारूक था, जो मस्जिद से वापस आ रहा था। तभी मोटरसाइकिल सवार दो अज्ञात हमलावरों ने उस पर गोलियों की बौछार कर दी। इस गोलीबारी में कैसर फारूक की मौत हो गई और उसके साथ चल रहा एक छात्र घायल हो गया।

बता दें कि फारूक खैबर पख्तूनख्वा के डेरा इस्माइल खान इलाके का रहने वाला था। वह आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के प्रमुख हाफिज सईद का बेहद करीबी था। लश्कर मासूम बच्चों को आतंक की ट्रेनिंग देने के लिए तैयार करता था। उनके ब्रेनवॉश की जिम्मेदारी इस मौलवी की थी। पाकिस्तानी खुफिया संगठनों का अनुमान है कि हाफिज सईद के जेल जाने के बाद लश्कर-ए-तैयबा में वर्चस्व की लड़ाई शुरू हो गई है, जिसके चलते लश्कर प्रमुख के सहयोगियों को एक-एक कर मारा जा रहा है। गौरतलब है ?कि हाफिज सईद को पाकिस्तान की एक अदालत ने आतंकवादी वारदातों में उसकी संलिप्तता के लिए लंबी सजा सुनाई है, जिसके चलते उसका जेल से निकलना फिलहाल असंभव बताया जा रहा है।

## पाकिस्तान से फिर भेजे गए थे भिखारी, सऊदी अरब के एयरपोर्ट पर पकड़े गए

**इस्लामाबाद (एजेंसी)।** पाकिस्तान से आए भिखारी की संख्या सऊदी अरब में बीते कुछ समय से काफी अधिक बढ़ रही है जिसे लेकर अरब देश काफी परेशान है। इस बार 16 ऐसे लोग पकड़ में आए हैं, जो कहते तो तौर पर पाकिस्तान के भिखारी थे। वही उमराह सीजन के दौरान संज्ञा जांच एजेंसी ने मुल्तान हवाई अड्डे पर तीर्थ यात्रियों के भेष में इन 16 भीखारियों को एयरपोर्ट पर ही उतार दिया। यह सभी भिखारी उम्र वीजा पर सऊदी अरब की यात्रा कर रहे थे।

जांच के दौरान एयरपोर्ट अधिकारियों ने यात्रियों से पूछताछ की। इस दौरान जातियों ने कबूल किया कि वह भीख मांगने के लिए ही सऊदी अरब जा रहे थे। भिखारी ने पूछताछ में यह भी खुलासा किया कि सऊदी अरब में मिलने वाली भी गुफा आधा हिस्सा उन्हें अपनी यात्रा की व्यवस्था करने वाले एजेंटों को देना होगा। जानकारी के मुताबिक इन सभी भिखारी को उमराह वीजा की अवधि खत्म होने के बाद फिर से पाकिस्तान लौटना था।

बता दें कि पाकिस्तान से लोग उमराह वीजा पर सऊदी अरब पहुंचते हैं जो की बेहद आम है। मगर बीते कुछ समय से देखने में आ रहा था कि सऊदी अरब पहुंचकर भीख मांगने की शुरुआत कर देते हैं। इसी सिलसिले को रोकने के लिए एजेंसी की एक टीम मुल्तान एयरपोर्ट पर थी जहां जांच के दौरान भिखारी को पकड़ा गया है। अधिकारियों ने सभी को हिरासत में ले लिया है। इन सभी के पकड़े जाने के बाद इन लोगों को आगे की जांच के लिए भेज दिया गया है।

गौरतलब है की हाल ही में इस बात का खुलासा हुआ है की बड़ी संख्या में लोग भीख मांगने के लिए खाड़ी देशों में भेजे जाते हैं। यह खुलासा पाकिस्तान की संसद में हुआ था। जिसमें पता चला था कि अवैध चैनलों के जरिए भिखारी को विदेशी में तस्करी की जाती है। यह भी सामने आया था कि विदेशों में पकड़े गए 90त भिखारी पाकिस्तान से ताल्लुक रखते हैं।

# मालदीव के नए राष्ट्रपति बने मोहम्मद मुइज, 53 फीसदी से ज्यादा वोटों से हासिल की जीत

**माले (मालदीव) (एजेंसी)।** मालदीव में विपक्ष के उम्मीदवार मोहम्मद मुइज ने 53 प्रतिशत से अधिक वोट हासिल करते हुए शनिवार को राष्ट्रपति पद का चुनाव जीत लिया। स्थानीय मीडिया ने यह खबर दी। इस चुनाव को एक जनमत संग्रह के तौर पर देखा जा रहा था कि देश में भारत या फिर चीन में से किस क्षेत्रीय शक्ति का अधिक प्रभाव रहेगा। 'मिहारू न्यूज' की खबर के अनुसार, निवर्तमान राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह को 46 फीसदी वोट हासिल हुए और मुइज को उनसे 18,000 से अधिक मत मिले। आधिकारिक नतीजों की घोषणा रविवार को की जा सकती है।

मुइज ने जीत के बाद एक बयान में कहा, ''आज के नतीजे के साथ हमें देश के भविष्य का निर्माण करने का मौका मिला है। मालदीव की आजादी सुनिश्चित करने की ताकत मिली है। यह वक्त अपने मतभेदों को दूर रखने और एकजुट होकर काम करने का है। हमें एक शांतिपूर्ण समाज की आवश्यकता है।'' मुइज ने सोलिह से पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन को घर में नजरबंद करने के बजाय जेल भेजने का भी अनुरोध किया। यह जीत मुइज के लिए हैरान करने वाली है, क्योंकि वह एक वैकल्पिक उम्मीदवार के रूप में मैदान में उतरे थे। उच्चतम न्यायालय ने धन शोधन और भ्रष्टाचार के जुर्म में सजा काट रहे यामीन को चुनाव लड़ने से रोक दिया था, जिसके बाद मुइज ने आखिरी वक्त में नामांकन दाखिल किया था। मुइज की पार्टी के एक शीर्ष अधिकारी मोहम्मद शरीफ ने कहा, ''आज का परिणाम हमारे लोगों की देशभक्ति को दर्शाता है। यह हमारे सभी पड़ोसियों और द्विपक्षीय साझेदारों से हमारी स्वतंत्रता एवं संप्रभुता का पूरा सम्मान करने का आह्वान करता है।''

राष्ट्रपति पद के लिए सितंबर की शुरुआत में हुए मतदान के पहले चरण में मुख्य विपक्षी उम्मीदवार मुइज और मौजूदा राष्ट्रपति सोलिह में किसी को भी 50 फीसदी से ज्यादा वोट नहीं मिल पाए थे। सोलिह 2018 में पहली बार राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। वह दूसरे कार्यकाल के लिए फिर से चुनाव मैदान में उतरे थे और मुइज के इन आरोपों से जूझ रहे हैं कि उन्होंने भारत को देश में अनियंत्रित मौजूदगी की अनुमति दी थी। मुइज की पार्टी 'पीपुल्स नेशनल कांग्रेस' को चीन समर्थक माना जाता है। सोलिह का कहना है कि मालदीव में भारतीय सेना की मौजूदगी सिर्फ और सिर्फ दोनों सरकारों के बीच हुए एक समझौते के तहत पोतगाह निर्माण के लिए है और इससे उनके देश की संप्रभुता को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। मुइज ने वादा किया था कि अगर वह चुनाव जीत जाते हैं, तो मालदीव में मौजूद भारतीय सैनिकों को वापस भेजेंगे और देश के कारोबारी संबंधों को संतुलित करेंगे। उनका कहना है कि वर्तमान में कारोबारी संबंध भारत के पक्ष में हैं। पेशे से इंजीनियर रहे मुइज सात साल तक आवास मंत्री रहे। जब उन्हें राष्ट्रपति चुनाव लड़ने के लिए नामित किया गया, तो उस समय वह राजधानी माले के मेयर थे।

# न्यूयॉर्क शहर धंस रहा, नासा की रिपोर्ट में हुआ खुलासा

**न्यूयॉर्क (एजेंसी)।** अमेरिका का न्यूयॉर्क शहर धीरे-धीरे अपने वजन के चलते नीचे दबा रहा है। इसके चलते आने वाली संभावित तबाही में न्यूयॉर्क में स्थित लागार्डिया एयरपोर्ट, आर्थर ऐश स्टेडियम और कोनी आइलैंड सबसे पहले प्रभावित होगा।यह दावा किया है नासा द्वारा हाल ही में जारी एक रिपोर्ट में। रिपोर्ट के मुताबिक, नासा की जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी और रटगर्स यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने न्यूयॉर्क के पास शहरों में कई प्रमुख स्थानों की पहचान की है जो धीरे-धीरे नीचे दब रहे हैं।2016 से 2023 तक, लागार्डिया के रनवे और आर्थर ऐश स्टेडियम क्रमशः 3.7 और 4.6 मिलीमीटर प्रति वर्ष की दर से नीचे दब रहे हैं। ये दोनों क्षेत्र पूर्व लैंडफिल क्षेत्रों पर बनाए गए थे, जो शायद इनके सबसे तेजी से दबने का कारण हो सकता है। रिपोर्ट के अनुसार, समुद्र का जलस्तर बढ़ने से एनवायसी के डूबने का गंभीर खतरा बढ़ रहा है। शहर को तूफान और अतिरिक्त उष्णकटिबंधीय तूफानों के कारण तटीय बाढ़ सहित समस्याओं का सामना करना पड़ा है। गौरतलब है कि सुपरस्टॉर्म सैंडी ने 2012 में शहर में कहर बरपाया था। एनवायसी के अन्य क्षेत्र जो तेजी से डूब रहे हैं उनमें गवर्नर्स द्वीप का दक्षिणी भाग, स्टेटन द्वीप में मिडलैंड और साउथ बीच, और दक्षिणी क्वींस में एक तटीय अर्वेर्न बाय द सी शामिल हैं।

संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा इस साल की शुरुआत में शोध करने के बाद एक रिपोर्ट सामने आई थी, जिसमें बताया गया था कि न्यूयॉर्क शहर की 1 मिलियन से अधिक इमारतों का वजन लगभग 1.7 ट्रिलियन पाउंड है और शहर धीरे-धीरे अपने वजन से कम हो रहा है। शोधकर्ताओं ने रिसर्च में बताया, 'तटीय आबादी और संपत्ति को तटीय बाढ़ से बचाना न्यूयॉर्क शहर के लिए एक सतत चुनौती है। समुद्र के स्तर में प्राकृतिक वृद्धि और विनाशकारी तूफानों का संयुक्त प्रभाव समुद्र के स्तर में निरंतर वृद्धि के कारण तेजी से बढ़ रहा है।'

## एशियन गेम्स: हॉकी में भारत की पाकिस्तान पर सबसे बड़ी जीत

# एक दिन में दो बार हार गया बेचारा पाकिस्तान

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** पाकिस्तान को एक दिन में दो बार हार का सामना करना पड़ा, वो भी भारत के सामने। एशियन गेम्स 2023 में भारत ने पहले स्क्वॉश में मेंस टीम के मैच में पाकिस्तान को फाइनल में हराते हुए गोल्ड मेडल जीता। वहीं इसके ठीक 4 घंटे बाद भारतीय मेंस हॉकी टीम ने पाकिस्तान के खिलाफ बड़ी जीत हासिल की। यह मैच एकतरफा रहा, क्योंकि भारत ने 10-2 के साथ पाकिस्तान को चारों खाने चित किया। इसी के साथ भारत ने पाकिस्तान के लिए सेमीफाइनल में पहुंचने की राह को भी मुश्किल कर दिया।

### बना नया रिकॉर्ड

इसी के साथ भारत ने हॉकी में पाकिस्तान के खिलाफ नया रिकॉर्ड भी बना लिया। यह रिकॉर्ड है किसी एक मैच में पाकिस्तान के खिलाफ सबसे ज्यादा गोल दागने का। दोनों टीमों के बीच इससे पहले सबसे बड़ा स्कोर 9-2 था, जो भारत ने ही हासिल किया था। भारत की ओर से कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने सबसे ज्यादा 4 गोल दागे। हीं वरुण भी 2 गोल करने में कामयाब रहे। इसके अलावा शमशेर, मनदीप, ललित और सुमित ने एक-एक गोल किया।

बता दें कि पहले हॉफ से अपनी पकड़ को मजबूत करते हुए 2-0 से खत्म किया था। फिर दूसरे हॉफ में स्कोर लाइन 4-0 तक पहुंच गई थी। तीसरे हॉफ का खेल शुरू होने के साथ भारत ने अपनी लय को बरकरार रखते हुए पेनल्टी स्ट्रोक के जरिए अपना पांचवां गोल किया। वहीं इसके बाद पाकिस्तान की तरफ से पेनल्टी स्ट्रोक में 1 गोल आया , पर भारत ने 2 और गोल कर दिए। तीसरे हॉफ तक भारत 7-2 से आगे था। फिर आखिरी क्वार्टर में अपनी लय को बरकरार रखते हुए 3 और गोल करने के साथ 10-2 के अंतर से इस मैच को खत्म किया। अब भारत का पूल ए में आखिरी मुकाबला बांग्लादेश के खिलाफ होगा।

पूल ए के अपने पिछले तीनों मैचों में भारतीय टीम ने जोरदार जीत दर्ज की थी। उज्बेकिस्तान और सिंगापुर जैसी कमजोर टीमों पर तो टीम इंडिया ने 16-16 गोल कर तहलक मचा दिया था, जबकि मौजूदा एशियन गेम्स चैंपियन जापान को 4-2 से धूल चटाई थी। अब भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ भी फतह हासिल कर ली। शायद ही कोच क्रेग फुल्टन ने भी इतनी बड़ी जीत के बारे में सोचा होगा।

## एशियाई खेल: शॉटपुट में तजिंदर ने जीता स्वर्ण

**हांगझोऊ (एजेंसी)।** भारत के तजिंदर पाल सिंह ने रविवार को एशियाई खेलों के आठवें दिन पुरुषों की शॉटपुट स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता है। तजिंदर ने फाइनल थ्रो में 20.36 मीटर गोला फेंककर पहला स्थान हासिल किया। इससे भारतीय प्रशंसकों में खुशी की लहर छा गयी। तजिंदर ने भारत को एशियाई खेलों की एथलेक्सि स्पर्धा में दूसरा स्वर्ण जिताया है। इससे पहले स्टीपलचेज में अविनाश साबले ने 8 ◌ 19 . 50 सेकंड में रेस पुरी कर स्वर्ण पदक जीता था। अब भारत के स्वर्ण पदकों की संख्या 13 हो गयी है जबकि भारत के कुल पदक 45 पदक हो गए हैं।

## एशियाई खेलों में भारतीय महिला मुक्केबाज परवीन ने जीता कांस्य, जैस्मीन हारी

**हांगझोउ (एजेंसी)।** एशियाई खेलों की मुक्केबाजी स्पर्धा में रविवार को भारतीय महिला मुक्केबाज परवीन हुड्डा ने कांस्य पदक जीता है। परवीन को इसी के साथ ही ओलंपिक कोटा भी मिल गया है। परवीन ने महिलाओं की 57 किग्रा स्पर्धा के में तीसरा स्थान हासिल किया। परवीन ने क्वार्टर फाइनल में उज्बेकिस्तान की सितोरा तर्डिबेकोवा को सर्वसम्मत फैसले से हराया। परवीन अपने मुकाबले में शुरू से ही लय में नजर आयीं। उन्होंने अपनी लंबाई का पूरा लाभ उठाते हुए विरोधी मुक्केबाज पर जमकर हमला बोला। परवीन ने शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाया पर बीच में उज्बेक मुक्केबाज सितोरा को अपने करीब आने का अवसर देने के बाद प्रहार करना शुरु कर दिया। वहीं विरोधी मुक्केबाज ने भी इस दौरान कुछ अच्छे मूव बनाकर परवीन को पंच लगाये पर ये पर्याप्त नहीं थे। दूसरी ओर एक अन्य मुकाबले में राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता भारत की जैस्मीन लम्बोरिया 60 किग्रा क्वार्टर फाइनल मुकाबले में उत्तर कोरिया की मुक्केबाज वोन उन्गयोंग से दूसरे दौर में हार के साथ ही बाहर हो गईं। जैस्मीन ने पहला दौर 5-0 से अपने नाम किया। इसके बाद जैस्मीन की लय भंग हो गयी और इसी का लाभ उठाकर वोन ने उन्हें करारे हुक्स तथा जैब्स लगा दिये। जैस्मीन इसके बाद बचाव की मुद्रा में आ गई और इसका फायदा उठाते हुए वोन ने उन्हें और पंच लगाए जिससे वह एक-एक कर तीन बार कोर्ट में गिर गई। तीसरी बार कोर्ट में गिरने के बाद वोन को विजेता घोषित कर दिया गया।

## एशियाई खेल: भारतीय पुरुष निशानेबाजी टीम ने स्वर्ण जीता

### –महिला टीम को मिला रजत

**हांगझोऊ(एजेंसी)।** एशियाई खेलों में भारतीय निशानेबाजों के पदक जीतने का सिलसिला जारी है। आठवें दिन रविवार को भी भारतीय निशानेबाजों ने स्वर्ण पर निशाना लगाया। भारत ने आज एक स्वर्ण और एक रजत पदक जीता। डबल ट्रैप में पुरुष निशानेबाजों पृथ्वीराज टोंडिमन, डेरियस चेनाई और ज़ोरावर संधू की टीम ने पहला स्थान हासिल करते हुए स्वर्ण जीता। वहीं महिला वर्ग में मनीषा कीर, राजेश्वरी कुमारी और प्रीति रजक की टीम ने भी डबल ट्रैप में में रजत पदक अपने नाम किया।



पुरुष वर्ग में भारतीय निशाने बाजों ने 361 अंकों का स्कोर बनाया। यह एशियाई खेलों में ट्रैप शूटिंग में किसी टीम का सबसे बड़ा स्कोर है।

वहीं रविवार को भारत को पहला पदक महिला गोल्फर अदिति अशोक ने दिलाया। वह एशियाई खेलों में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला गोल्फर हैं। भारत ने अब तक एशियाई खेलों में 11 स्वर्ण, 16 रजत और 14 कांस्य पदक जीते हैं।

## एशियाई खेल : अदिति को मिला रजत



हांगझोउ। भारतीय महिला गोल्फर अदिति अशोक को एशियाई खेलों में रजत से ही संतोष करना पड़ा है। इस प्रकार महिला गोल्फ में भारत ने पहला पदक हासिल किया है। अदिति अंतिम दौर में अपनी बढ़त बरकरार नहीं रख पायीं और मुकाबले में 73 का कार्ड खेलकर दूसरा स्थान ही हासिल कर पायीं। अदिति को तीसरे दौर के बाद अंक तालिका में सात शॉट की बड़ी बढ़त हासिल हुई थी पर वह एक बर्डी के मुकाबले चार बोगी और एक डबल बोगी के साथ इस बढ़त को बरकरार नहीं रख पायीं। इस प्रकार अदिति कुल 17 अंडर 271 का स्कोर ही बना सकीं। वहीं थाईलैंड की अर्पिचया युबोल ने 64 का कार्ड खेल कर स्वर्ण पदक जीता जबकि कोरिया की ह्युनजो यू ने भी 65 का कार्ड खेलकर कांस्य पदक अपने नाम किया। वहीं भारत की दो अन्य महिला गोल्फर प्राणवी उर्स ( 13वां स्थान) और अवनी प्रशांत ( संयुक्त 18वां स्थान) भी अंतिम दिन प्रभावित नहीं कर पायीं। प्राणवी ने 75 जबकि अवनी ने 76 का कार्ड खेला। इससे भारतीय खिलाड़ी टीम स्पर्धा में चौथे स्थान पर खिसक गयी। इस प्रकार कांस्य पदक भारतीय टीम के हाथों से फिसल गया।

## अविनाश साबले ने स्टीपलचेज में जीता स्वर्ण

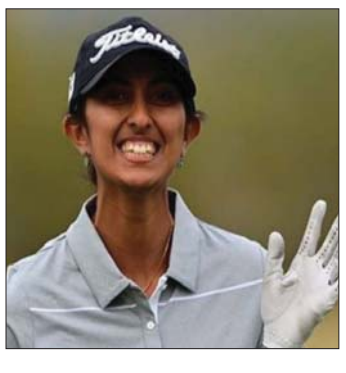



हांगझोऊ ।भारतीय खिलाड़ियों ने एशियाई खेलों में शानदार प्रदर्शन करते हुए रविवार को भी कई पदक जीते। भारतीय एथलीट अविनाश साबले ने स्टीपलचेज में स्वर्ण पदक जीता। एशियाई खेलों 2023 में यह भारत का एथलेटिक्स में पहला स्वर्ण पदक है। अविनाश ने पुरुषों के 3000 स्टीपलचेज स्पर्धा में भारत को ये स्वर्ण जिताया। वहीं भारतीय ट्रैप निशानेबाजों ने भी एशियाई खेलों में स्वर्ण और रजत जीते हैं। पुरुष टीम ने स्वर्ण वह महिला टीम ने रजत पदक जीता हालांकि व्यक्तिगत वर्ग में केवल कीनान चेनाई को ही कांस्य पदक मिला। अंतिम दिन डबल ट्रैप में मिले तीन पदकों के बाद भारतीय निशानेबाज सात स्वर्ण, नौ रजत और छह कांस्य समेत 22 पदक लेकर वापसी करेंगे। ये एशियाई खेलों में उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है.

पुरुष टीम वर्ग के निशानेबाजों पृथ्वीराज तोडइमान, काइनन चेनाई और जोरावर सिंह संधू की भारतीय तिकड़ी ने क्वालीफिकेशन में एशियाई खेलों के रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता। भारतीय टीम ने क्वालीफिकेशन दौर में 361 अंक हासिल किये। वहीं खालिद अलमुदहाफ, तलाल अलरशीदी और अब्दुलरहमान अलफइहान की कुवैत की टीम ने 359 अंक के साथ रजत पदक जीता जबकि युहाओ गुओ, यिंक की औ युहाओ वैंग की चीन की टीम ने 354 अंक के साथ कांस्य पदक हासिल किया।

## चौथे और पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए तैयार हैं राहुल

नई दिल्ली । भारतीय टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल ने कहा है कि उन्हें नंबर पांच पर बल्लेबाजी में परेशानी नहीं है। राहुल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हाल में समाप्त हुई एकदिवसीय सीरीज में पांचवें नंबर पर उतरे थे। एकदिवसीय विश्वकप में भी माना जा रहा है कि राहुल इसी क्रम पर उतरेंगे क्योंकि पारी की शुरुआत शुभमन गिल और रोहित शर्मा करेंगे। राहुल ने कहा, वैसे चौथे और पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी में ज्यादा अंतर नहीं लगता। वह अब तक पारी की शुरुआत करते रहे हैं, इसलिए करते हुए नंबर 5 पर उतरना उनके लिए एक अलग अनुभव था। पिछले कुछ साल से मुझे वह भूमिका दी गई है हालांकि मैंने लंबे समय तक घरेलू क्रिकेट में ये भूमिका निभाई है। इसलिए मैं समझता हूं कि मुझे तकनीकी और मानसिक रूप से क्या बदलाव करने हैं और कब बल्लेबाजी के दौरान आक्रामक रुख अपनाना है। इसके अलावा मैं खेल से कुछ समय दूर था। वापसी के बाद मैंने इस क्रम पर बल्लेबाजी करने वाले खिलाड़ियों के कुछ वीडियो देखे जिन्होंने नंबर 4 और 5 पर वास्तव में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। अब देखना है कि वह अपनी पारी को कैसे आगे बढ़ाते हैं। इसलिए जब मैं मैदान में जाता हूं तो हालातों के अनुसार अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता हूं। उन्होंने कहा, पिछले कुछ सप्ताह में सभी को एक जैसी मानसिकता में डाल दिया है। हाल में हुआ एशिया कप वास्तव में हमारे लिए अहम रहा। इसमें जीत से हमारा मनोबल बढ़ा है। हर खेल को जीतना जरूरी था, और हम बहुत प्रतिस्पर्धी क्रिकेट खेल रहे थे। इसके बाद हमने ऑस्ट्रेलियाई टीम के साथ खेला और सीरीज जीती। इस दौरान भी हमने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इससे हम टीम के तौर पर बेहतर होकर उभरे हैं।

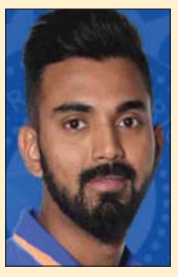



## एकदिवसीय विश्वकप : 10 स्टेडियमों में खेले जाएंगे 48 मैच

**मुम्बई (एजेंसी)।** भारत में 5 अक्टूबर से शुरु होने वाले आईसीसी एकदिवसीय विश्कप क्रिकेट के लिए सभी टीमें तैयार हैं। अभ्यास मुकाबले शुरु होने से टूर्नामेंट का रोमांच और बढ़ गया है। इस टूर्नामेंट के शुरुआत मुकाबला गत विजेता इंग्लैंड और उपविजेता न्यूजीलैंड के बीच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होना है जबकि फाइनल भी 19 नवंबर को अहमदाबाद में होगा। देश भर में 10 स्टेडियम में टूर्नामेंट के 48 मैच होने हैं। विश्व कप 2023 की बात करें, 10 टीमों के बीच 5 अक्टूबर से 10 नवंबर तक मुकाबले खेले जाने हैं। इसमें भाग लेने वाली सभी टीमों को राउंड रॉबिन में 10-10 मैच खेलने हैं। इसके बाद शीर्ष टॉप-4 टीमें सेमीफाइनल में जाएंगी। ऑस्ट्रेलिया ने रिकॉर्ड 5 बार वनडे विश्वि कप का खिताब जीता है। वहीं मेजबान भारतीय टीम ने दो बार ये खिताब जता है। वहीं शुरुआत दो बार विश्वकप की विजेता रही वेस्टइंडीज इस बार क्वालिफाई नहीं कर पायी है। विश्वकप में सभी टीमें जीत के लिए पूरी ताकत लगा देंगी पर इस बार भारत, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया ओर पाकिस्तान को जीत का प्रबल दावेदार माना जा रहा है। गत उपविजेता न्यूजीलैंड टीम को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। अब अगले ड़ेढ़ माह तक लोगों को रोमांचक क्रिकेट देखने को मिलेगा। भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा, अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली, ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी बल्लेबाज स्वीव स्मिथ , डेविड वॉर्नर व मिचेल स्टार्क, न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन, बांग्लादेश के कप्तान शाकिब अल हसन जैसे दिग्गज खिलाड़ियों के लिए ये अंतिम विश्वकप होगा। वहीं इस टूर्नामेंट में पहली बार दो बार की विश्वकप विजेता वेस्टइंडीज नहीं नजर आयेगी। वेस्टइंडीज इस बार इस टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई ही नहीं कर पायी है।

## वॉर्म अप मैच में नीदरलैंड्स से भिड़ेगी भारतीय टीम, 12 साल बाद होगा सामना



नई दिल्ली। भारत में 5 अक्टूबर से क्रिकेट वनडे विश्व कप का आयोजन किया जाना है। विश्व कप की शुरुआत से पहले सभी टीम में वॉर्म अप मैच खेल रही है। भारतीय टीम टूर्नामेंट का आकाश ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबले से 8 अक्टूबर को करेगी। इससे पहले भारत का पहला वॉर्म अप मैच इंग्लैंड से था जो बारिश की वजह से धुल गया। भारत को दूसरा वार्म अप मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलना है। बता दें कि भारत और न्यूजीलैंड की टीमें में एक दूसरे के सामने 12 साल के बाद उतरेंगी। आंकड़ों पर गौर करें तो भारत और न्यूजीलैंड की टीम में एक दूसरे के सामने सिर्फ तीन बार ही आई है। इसमें दो वनडे और एक ञ20 मैच खेला गया है। वर्ष 2003 की फरवरी में भारत और न्यूजीलैंड के बीच पहली बार वनडे मुकाबला खेला गया था जिसे भारतीय टीम ने 68 रनों से जीता था। दोनों टीमों के बीच दूसरा और अंतिम वनडे मार्च 2011 में खेला गया था जो 5 विकेट से भारतीय टीम जीती थी। बता दें कि भारत और नीदरलैंड्स की टीम ने एक टी20 मैच भी खेला गया है जो अक्टूबर 2022 में खेला गया था। नीदरलैंड्स के खिलाफ यह मैच भारतीय टीम 56 रनों से जीती थी। नीदरलैंड्स की टीम भारत के खिलाफ आज तक कोई मैच जीत नहीं सकी है। नीदरलैंड्स की जीत का खाता अब तक भारत के खिलाफ नहीं खुला है। वहीं विश्व कप 2023 के वॉर्म अप मैच में भी भारत के खिलाफ जीतना नीदरलैंड्स के लिए टेढ़ी खीर हो सकती है। बता दें कि नीदरलैंड्स के खिलाफ सर्वाधिक रन युवराज सिंह ने बनाए है, जिन्होंने दो मैचों में 88 रन टीम के खिलाफ बनाए थे। इस पारी में युवराज ने नाबाद एक अर्धशतक भी जड़ा था।

### पहला वार्मअप मैच हुआ रद्द

वर्ल्ड कप 2023 का आगाज होने से पहले 30 सितंबर को गुवाहाटी में भारत और इंग्लैंड के बीच वॉर्म–अप मैच खेला जाना था। बारसापारा क्रिकेट स्टेडियम में होने वाले मुकाबले में इंग्लैंड की मजबूत बल्लेबाजी के खिलाफ भारतीय गेंदबाजों की अग्निपरीक्षा होनी थी। वहीं दोनों ही टीमें अभ्यास मैच में ज्यादा से ज्यादा खिलाड़ियो को खेलने का मौका दे सकती थी। हालांकि बारिश के कारण ये खेल नहीं खेला गया।

## विश्वकप में सबसे बदनसीब टीम रही है दक्षिण अफ्रीका

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** पांच अक्टूबर से शुरु होने वाले विश्वकप को लेकर क्रिकेट प्रशंसकों में उत्साह बढ़ता जा रहा है। विश्वकप के अभ्यास मुकाबले शुरु होने के साथ ही एक प्रकार से इसका आगाज भी हो गया है। विश्वकप का पहला मुकाबला पांच अक्टूबर को गत विजेता इंग्लैंड और उपविजेता न्यूजीलैंड के बीच होगा। विश्वकप को लेकर अनुमानों का दौर जारी है। इसी के तहत ही दक्षिण अफ्रीका के सेमीफाइनल में पहुंचने की बात भी दिग्गजों ने कही है। दक्षिण अफ्रीकी टीम पहले भी कई बार विश्व कप के सेमीफाइनल में पहुंचीं है पर बदकिस्मती के कारण उससे आगे नहीं बढ़ पायी है। इसी कारण इस टीम को चोकर्स भी कहा जाता है।

साल 1999 में भी टीम विश्व कप के फाइनल में पहुंचने के बिल्कुल करीब पहुंचकर रह गयी। तब कए छोटी सी गलती से वह बाहर हो गयी थी। अब ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल मैच में 1 रन लेने के चक्कर में दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज रन आउट हो गये। तब ये रोमांचक सेमीफाइनल ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच बर्मिंघम में खेला गया था। इस मैच में दक्षिण अफ्रीका को अंतिम ओवर में जीत के लिए 9 रन की जरुरत थी जबकि उसके 9 विकेट गिर गये थे। अंतिम जोड़ी लांस क्लूजनर और एलन डोनाल्ड की थी। मैच का अंतिम ओवर डेमियन फ्लेमिंग ने फेंका। उनकी पहली दो गेंद पर लांस क्लूजनर ने दो चौके लगाकर मैच को दक्षिण अफ्रीका के हाथ में ला दिया था पर मैच टाई हो गया। इस ओवर की तीसरी गेंद पर कोई रन नहीं आया. अब तीन गेंदों पर दक्षिण अफ्रीका को 1 रन की जरुरत थी और उसकी जीत पक्की दिख रही थी। चौथी गेंद पर क्लूजनर ने मिड ऑन की तरफ शॉट खेलकर एक रन के लिए दौड़ लगा दी लेकिन खराब तालमेल के कारण डोनाल्ड रन ही नहीं पूरा कर पाए और रन आउट हो गए। इस प्रकार मैच टाई हो गया और अच्छे रन रेट के कारण ऑस्ट्रेलिया को जीत दे दी।




## विराट के पास विश्वकप में सचिन का रिकार्ड तोड़ने का अवसर

**नयी दिल्ली (एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट अपना अंतिम विश्वकप खेल रहे हैं। विराट अभी करीब 35 साल के हो गये हैं और ऐसे में अगले विश्वकप तक वह उनके खेलने की कोई संभावनाएं नहीं हैं। विश्वकप में भारतीय टीम को विराट से बड़ी परियों की उम्मी रहेगी। विराट ने हमेशा ही नये रिकार्ड बनाये हैं। ऐसे में वह इस विश्वकप में भी अहम उपलब्धियां हासिल करना चाहेंगे। विराट इस समय जबरदस्त फार्म में हैं जिससे उनके प्रशंसकों में भी उत्साह है। इस विश्वकप में विराट की नजरें कई बड़े रिकाडों पर रहेंगी। इस विश्वकप के दौरान महान सचिन तेंदुलकर का जो बड़ा रिकॉर्ड विराट के निशाने पर होगा, वह है एकदिवसीय में सबसे अधिक शतक का। विराट ने अब तक 281 मैचों में 47 शतक लगाये हैं। ये सचिन के कुल एकदिवसीय शतकों 49 से केवल दो ही कम है।

विराट अब दो शतक बनाते ही सचिन के रिकॉर्ड की बराबरी कर लेंगे और तीन शतक बनाते ही सचिन के 49 एकदिवसीय शतकों के रिकॉर्ड को तोड़ देंगे। विश्वकप में विराट कोहली के पास से रिकार्ड तोड़ने के लिए पर्याप्त संख्या में मैच भी हैं। इस टूर्नामेंट में भाग ले रही हर टीम हर टीम को 9-9 मैच खेलने हैं, इसके बाद शीर्ष की चार टीमें, सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। टीम इंडिया को सेमीफाइनल,यहां तक कि फाइनल का भी दावेदार माना जा रहा है। ऐसे में विराट को 9 से अधिक मैच खेलने को मिल सकते हैं जिसमें यदि वे तीन शतक बनाने में सफल हुए तो सचिन का रिकॉर्ड पीछे छोड़ देंगे। विराट के प्रशंसकों को उम्मीद है कि वह हर हाल में नये रिकार्ड बनायेंगे। उनहोंने पिछली चार एकदिवसीय पारियों में एक शतक और एक अर्धशतक लगाया है। ये उनके शानदार फॉर्म में होने का संकेत है। आंकड़ों पर नजर डालें तो विश्वकप में उनका अब तक का प्रदर्शन विशेष नहीं रहा। उन्होंने 2011, 2015 और 2019 के विश्वकप खेले हैं पर वह किसी में भी एक से अधिक शतक नहीं लगा पाये हैं।वर्ष 2011 के विश्वकप में उन्होंने 9 मैचों में एक शतक की सहायता से 282 रन नाए थे। वहीं इसी प्रकार साल 2015 के विश्वकप में उन्होंने आठ मैचों में एक शतक की मदद से 305 रन और 2019 के विश्वकप के 9 मैचों में 55.37 के औसत से 443 रन बनाए थे। इसमें पांच अर्धशतक शामिल थे।

## तीन विश्व कप हो चुके हैं, अब मुझे इसकी आदत हो गई है, चहल का छल्का दर्द

स्पोर्ट्स डेस्क । युजवेंद्र चहल को 2023 विश्व कप में जगह नहीं मिल पाने पर 'बुरा लग रहा है', लेकिन वह आगे बढ़ने और भारतीय टीम में वापसी के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए दृढ़ हैं। एक साक्षात्कार में चहल ने 2023 विश्व कप नहीं खेलने की निराशा पर खुलकर बात की, जिसकी मेजबानी पूरी तरह से भारत में की जाएगी। चहल को भारत की अंतिम पंद्रह में जगह नहीं मिली जिसकी पुष्टि 28 सितंबर को हुई। चहल ने कहा, 'मैं समझता हूं कि केवल 15 खिलाड़ी ही इसका हिस्सा हो सकते हैं, क्योंकि यह विश्व कप है, जहां आप 17 या 18 को नहीं ले सकते। मुझे थोड़ा बुरा लगता है, लेकिन जीवन में मेरा मकसद आगे बढ़ना है। मुझे अब इसकी आदत हो गई है... तीन विश्व कप हो गए हैं (हंसते हुए)।' 2016 में अपने पदार्पण के बाद से चहल ने एक भारतीय गेंदबाज द्वारा वनडे में तीसरे सबसे अधिक विकेट लिए है और कुलदीप यादव के बाद एक भारतीय स्पिनर द्वारा दूसरा सबसे अधिक विकेट लिया है। उनके नाम दो बार पांच विकेट हैं – जो किसी भी भारतीय गेंदबाज द्वारा संयुक्त रूप से सर्वाधिक है। तेज गेंदबाजों के प्रभुत्व वाले 2019 विश्व कप में चहल ने किसी भी स्पिनर द्वारा सबसे अधिक 12 विकेट लिए और तब से वह भारत के अग्रणी सफेद गेंद वाले स्पिनरों में से एक हैं।

# वाणी कपूर ने दिखाया अब तक का सबसे बोल्ड लुक, तोड़ी सारी हदें

वाणी कपूर ने अपने अब तक के करियर में कई फिल्मों में बेहतरीन किरदारों को बखूबी पर्दे पर उतार चुकी हैं. हालांकि, अपनी फिल्मों के अलावा वाणी अपनी हॉटनेस और स्टाइलिश फोटोशूट की वजह से भी काफी चर्चा में बनी रहती हैं. अक्सर उनके इंस्टाग्राम पेज उनके ग्लैमरस लुक्स देखने को मिल जाते हैं. अब फिर से एक्ट्रेस ने फिर से फैंस के दिलों की धड़कनें बढ़ा दी हैं.लेटेस्ट फोटोशूट में वाणी अपना बिकिनी लुक फ्लॉन्ट करती नजर आ रही हैं. उन्होंने इस दौरान ग्रीन शेड की बिकिनी के साथ डेनिम जीन्स कैरी की है.एक्ट्रेस ने अपने इस लुक को और हॉट बनाने के लिए जीन्स के बटन खोल कैमरे के सामने किलर पोज दिए हैं. वाणी ने बहुत बेबाकी से अपना ये बोल्ड लुक फ्लॉन्ट किया है.वाणी ने इस लुक को सटल बेस, रोजी शाइनी चीक्स, न्यूड ग्लॉसी लिप्स और न्यूड आई मेकअप से कंप्लीट किया है. इसके साथ उन्होंने अपने बालों को मैसी टच देकर ओपन रखा है. एक्सेसरीज के तौर पर वाणी ने एक हाथ में गोल्ड बैंगल्स पहने हैं. वाणी इस लुक में बेहद हॉट दिख रही हैं. खासतौर पर एक्ट्रेस के कर्वी फिगर ने सबके होश उड़ा दिए हैं.दूसरी ओर वाणी की आने वाली फिल्मों पर बात करें तो इस समय एक्ट्रेस मंडाला मर्डर्स टाइटल से बन रही वेब सीरीज को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं. बता दें कि पिछली बार वाणी को रणबीर कपूर के साथ फिल्म शमशेरा में देखा गया था.

# 'तारक मेहता' शो में दिखाई नहीं देंगे जेठालाल

टीवी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' बीते 15 सालों से दर्शकों का मनोरंजन करता आ रहा है। इतने सालों में कई कलाकार शो से बाहर जा चुके हैं और उनकी जगह नए कलाकारों की एंट्री भी हुई। लेकिन शो में जेठालाल का किरदार निभाने वाले दिलीप जोशी शुरुआत से ही इस शो से जुड़े हुए हैं।

अब खबर आ रही है कि दिलीप जोशी 'तारक मेहता' में कुछ समय के लिए नजर नहीं आने वाले हैं। वह कुछ वक्त के लिए शो से ब्रेक ले रहे हैं। इस खबर के सामने आने के बाद से ही हर कोई हैरान रह गया है। कुछ समय के लिए अब सभी का फेवरेट किरदार जेठालाल शो में नहीं दिखाई देगा।

खबरों के अनुसार दिलीप जोशी काम से ब्रेक लेकर अपने परिवार के साथ एक धार्मिक यात्रा पर तंजानिया गए हैं। यहां वे स्वामीनारायण मंदिर में होने वाले फंक्शन में हिस्सा लेंगे। इसके बाद दिलीप जोशी अबू धाबी भी जाएंगे।

हाल ही के एपिसोड में जेठालाल सोसाइटी में गणपति बप्पा की स्थापना करने के बाद सबको बताते हैं कि वह काम से इंदौर जा रहे हैं और गोकुलधाम में होने वाले गणपति सेलिब्रेशन को मिस करेंगे।

# 'सेल्फी' से शुरू हुआ अक्षय कुमार का साल 2023 का सफर 'मिशन रानीगंज' पर होगा समाप्त

अक्षय कुमार बॉलीवुड इंडस्ट्री के सबसे बिजी एक्टर में से एक हैं। हर साल अक्षय की 4 से 5 फिल्में रिलीज होती हैं। ओएमजी 2 के बाद वह जल्द ही फिल्म 'मिशन रानीगंज: द ग्रेट भारत रेस्क्यू' में नजर आने वाले हैं। यह फिल्म राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक टीनू देसाई के साथ उनके रीयूनियन का भी प्रतीक है।

फिल्म 'मिशन रानीगंज' शुक्रवार, 6 अक्टूबर, 2023 को रिलीज होने जा रही है। साल 2023 में अक्षय की यह आखिरी रिलीज होगी, क्योंकि उन्होंने साल की शुरुआत सेल्फी से की थी और फिर हाल ही में उनकी ब्लॉकबस्टर फिल्म ओएमजी 2 रिलीज हुई है।

बता दें, ओएमजी 2 की रिलीज के बाद, दर्शकों ने फिल्म में भगवान शिव के गण के रूप में अक्षय के प्रदर्शन की सराहना करना शुरू कर दिया था और उनके स्क्रिप्ट सिलेक्शन च्वाइस की भी तारीफ की क्योंकि उन्होंने एक कंटेंट डॉमिनेटिंग फिल्म के साथ समाज को फिर से आइना दिखाया और बॉक्स ऑफिस पर 150 करोड़ से अधिक की कमाई की।

अब अभिनेता साल की अपनी आखिरी फिल्म के साथ एक और प्रभावशाली सिनेमा पेश करने के लिए तैयार है, जो एक गुमनाम हीरो स्वर्गीय जसवंत सिंह गिल की कहानी है। यह जसवंत सिंह गिल की लार्जर देन लाइफ कहानी और उनकी बहादुरी को बड़े पर्दे पर पेश करता है, और हाल ही में सामने आए फिल्म के ट्रेलर के अनुसार ये रेस्क्यू थ्रिलर देश भर के दर्शकों के लिए एक रोमांचक अनुभव का वादा करता है।

फिल्म अपनी रिलीज के करीब होने है इसलिए सुर्खियों में भी है और ट्रेलर के अलावा गाने और टीजर ने भी लोगों को इम्प्रेस किया है। वहीं सिंह इज़ किंग, सिंह इज़ ब्लिंग, केसरी और अब मिशन रानीगंज में चौथी बार अपने पसंदीदा अभिनेता को टर्बन लुक में देखकर दर्शक काफी एक्साइटेड हैं।

वास्तविक जीवन की कहानी पर आधारित ड्रामा की शैली पर अक्षय कुमार की पकड़ बेजोड़ है और उन्होंने एयरलिफ्ट, मिशन मंगल, गोल्ड और केसरी जैसी अपनी पिछली फिल्मों से इसे सफलतापूर्वक साबित किया है। सरदार जसवंत सिंह गिल की बात करें, तो उन्होंने सबसे बड़े कोयला खदान मिशन को सफलतापूर्वक पूरा किया ता और 65 कोयला खनिकों को बचाने के लिए एक कैप्सूल बनाया।

वाशु भगनानी, जैकी भगनानी, दीपशिखा देशमुख और अजय कपूर द्वारा निर्मित, 'मिशन रानीगंज' टीनू सुरेश देसाई द्वारा निर्देशित हैं। फिल्म का म्यूजिक जेजस्ट का है। एक ऐसा कोल माइन एक्सीडेंट जिसने देश और दुनिया को झकझोर कर रख दिया और जसवंत सिंह गिल के नेतृत्व में रेस्क्यू टीम के अथक प्रयासों को दर्शाती यह फिल्म 6 अक्टूबर 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

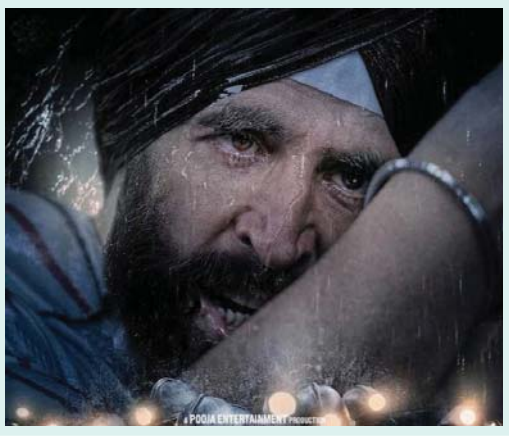

# बंगाली बनना मेरे लिए बहुत रोमांचक था: अंजुम शर्मा

बालीवुड फिल्म सुल्तान ऑफ दिल्ली में अभिनेता अंजुम शर्मा अपनी भूमिका के बारे में बात करते हुए कहा, किरदार के व्यक्तित्व के कारण बंगाली बनना मेरे लिए बहुत रोमांचक था। सब कुछ विचित्र, चुलबुला और मजेदार था। इसके अलावा जो चीज मुझे सबसे ज्यादा पसंद आई वह थी उनकी वेशभूषा और लुक जो मेरे किरदार के लिए अद्वितीय और विशिष्ट हैं। उन्होंने कहा, बंगाली बनने और उनके तौर-तरीकों को समझने के लिए मैं हर रोज दर्पण के सामने अपनी पंक्तियों का अभ्यास करता था ताकि मैं इसे पूर्णता तक पहुंचा सकूं और चरित्र में पूरी तरह से उतर सकूं। इसके अतिरिक्त वह अपने बंगाली किरदार में हमेशा एक स्कार्फ पहने हुए दिखाई देते हैं। उन्होंने कहा कि यह मेरे पूरे लुक का केंद्रबिंदु बन गया और इसे श्रृंखला में शामिल किया गया। मैं इसे अपना भाग्यशाली स्कार्फ मानता हूं।

अर्नब रे की पुस्तक सुल्तान ऑफ दिल्ली - एसेंशन पर आधारित, सीरीज रिलायंस एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित और मिलन लुथरिया द्वारा निर्देशित है। यह सुपर्ण वर्मा द्वारा सह-निर्देशित और सह-लिखित है। सीरीज में ताहिर राज भसीन, अंजुम, विनय पाठक, निशांत दहिया और महिला अनुप्रिया गोयनका, मौनी रॉय, हरलीन सेठी और मेहरीन पीरजादा शामिल हैं, जो एक आदर्श कलाकारों की टोली बनाते हैं। सुल्तान ऑफ दिल्ली 13 अक्टूबर को डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है। बता दें कि अंजुम सुल्तान ऑफ दिल्ली में एक उत्साही और चुलबुले बंगाली का किरदार निभाते हुए नजर आएंगे। वह इसमें दर्शकों को 1960 के दशक की याद दिलाएंगे। अपने लुक को पूरा करने के लिए प्रिंटेड शर्ट, लेदर जैकेट, बेल बॉटम्स और एक परफेक्ट स्कार्फ के साथ दिखाई देंगे।

# ब्रेकअप ट्रैक के जरिए संगीत की दुनिया में कदम रख रहीं पलक पुरसवानी

रियलिटी स्टीमिंग शो बिग बॉस ओटीटी 2 में नजर आने वाली टीवी अभिनेत्री और मॉडल पलक पुरसवानी संगीत की दुनिया में कदम रख रही हैं। उनका म्यूजिक वीडियो जल्द ही रिलीज होने वाला हैं। पलक ने कहा कि उनका नया सॉन्ग एक ब्रेकअप ट्रैक है, जो सभी को पसंद आएगा। एक्ट्रेस ने अपने सॉन्ग को लेकर कहा, मैं म्यूजिक वीडियो को लेकर बहुत एक्साइटिड हूं, क्योंकि बहुत से लोग जो रिश्तों में ब्रेकअप से गुजरते हैं, वे इससे जुड़ाव महसूस करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि उनका खुद भी इस ट्रैक से पर्सनल अटैचमेंटहै और वे इससे जुड़ सकती हैं। इस पर विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा, मैं भी इससे जुड़ी हूं। साथ ही, यह मेरा अब तक का पहला म्यूजिक वीडियो है। मैं अपने सभी एक्टर फ्रेंड्स से उम्मीद करूंगी कि वे इसको प्रमोट करें ताकि म्यूजिक वीडियो वायरल हो जाए!म्यूजिक वीडियो के बारे में खुलासा करते हुए पलक ने कहा, मेरे आने वाले म्यूजिक वीडियो के सिंगर मोहम्मद दानिश हैं जो इंडियन आइडल का हिस्सा थे। म्यूजिक वीडियो में मेरे अपोजिट अध्विक महाजन हैं। उन्होंने इसका हिस्सा बनना क्यों चुना, इस बारे में बात करते हुए एक्ट्रेस ने कहा, इसे मुंबई के मढ़ में ही शूट किया गया था। मैंने इस गाने के लिए हां इसलिए कहा क्योंकि गाना वाकई बहुत अच्छा था। मैं इस गाने से एक खास तरह से जुड़ सकती हूं। यह 1 अक्टूबर को रिलीज हो रही है। यह देखते हुए कि गाना बिल्कुल तैयार है, पलक पुरसवानी ने अपने म्यूजिक डेब्यू के लिए एक ऐसा विषय चुना है, जो यूनिवर्सल है और फिर भी इसे संभालना बहुत मुश्किल है।

# कंगना रनौट की 'तेजस' का टीजर इस खास मौके पर होगा रिलीज

बौलीवुड की बेबाक एक्ट्रेस कंगना रनौट के पास कई प्रोजेक्ट की लाइन लगी हुई है। हाल ही में उनकी साउथ फिलम 'चंद्रमुखी 2' रिलीज हुई है। अब कंगना की एक और फिल्म 'तेजस' भी रिलीज होने के लिए तैयार है। 'तेजस' साल की सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्म है। फिल्म 'तेजस' में कंगना रनौट एयरफोर्स पायलट का किरदार निभाती नजर आएंगी। वहीं अब तेजस के टीजर की रिलीज डेट सभी सामने आ गई है। बताया जारहा है कि मेकर्स नेशनल हॉलिडे पर 'तेजस' का टीजर रिलीज करेंगे। 'तेजस' 20 अक्टूबर को बड़े पर्दे पर रिलीज होने वाली है और कथित तौर पर निर्माता 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर इसका पहला टीज़र जारी करेंगे। प्रोडक्शन से जुड़े एक करीबी सूत्र के मुताबिक, तेजस का पहला एसेट टीज़र 2 अक्टूबर को रिलीज़ होगा। सर्वेश मेवाड़ा द्वारा लिखित और निर्देशित, 'तेजस' में कंगना रनौट मुख्य भूमिका में हैं। यह पहली हवाई एक्शन फिल्म है, जो वायु सेना अधिकारी तेजस गिल की कहानी बताएगी और कैसे हमारे वायु सेना के पायलट रास्ते में कई चुनौतियों का सामना करते हुए हमारे देश की रक्षा के लिए अथक प्रयास करते हैं।